

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

(श्रीसुधर्मास्वामीए रचेलुं अने श्रीश्रुतकेवलीभद्रवाहुरचित निर्युक्तिसहित)

॥ आचाराङ्गसूत्रम् ॥ भाग बीजो

(मूल अने शीलाङ्गाचार्ये रचेली टोकाना भाषांतरसहित)

जामनगरनिवासी स्व० पण्डित हंसराजभाई शामजीना स्मरणार्थे
छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाला)

संवत् १९८९

पडतर किंमत रु. २-८-०
श्रीजैनभास्करोदय प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं जामनगर.

प्रति २००

आचार
॥२२१॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ श्रीआचारांगसूत्रम् ॥

(मूळ अने शीलांकाचार्ये रचेली टीकानुं भाषान्तर)
(भाग बीजो)

छपावी प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगर)

नमः श्रीवर्घ्मानाय, वर्घ्मानाय पर्ययैः । उक्ताचार प्रपञ्चाय, निष्प्रपञ्चायतायिने ॥ १ ॥

श्री वर्घमान स्वामीने नमस्कार थाओ जेओ पर्याय (आत्माना उत्तम गुणो) वडे निरंतर वधेला छे. तथा आचारनो विस्तार जेयणे कहो छे तथा संसारी प्रपञ्च (रागद्वेष) थी सर्वथा मुक्त छे अने सर्व जीवोना रक्षक छे.

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृत्तं पूज्यैः । श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥ २ ॥

सूत्रम्
॥२२१॥

आचारा०
॥२२२॥

शत्रुपरिज्ञा नामनुं पहेलुं अध्ययन जे घणुं गंभीर छे, तेनुं विवरण गंधस्तिनामना श्रेष्ठ आचार्ये कहेलुं छे तेमांथी हुं कंइकविशेष
खुलासो कर्ण छुं. ते पहेलुं अध्ययन पूर्वे कही गया. हवे बीजुं अध्ययन कहेवाय छे. तेनो आवीरीतनो संबंध छे.

आ संसारमां मिथ्यात्म-उपशम-क्षय क्षयउपशम ए त्रणमांथी कोइपण सम्यक्त्व प्राप्त थयेला ज्ञानी साधु पुरुषने अत्यन्त ए-
कान्त बाधा रहित परमानंदरूप स्वतत्त्वनुं सुख जे आवरण रहित ज्ञान दर्शन (केवलज्ञान केवलदर्शन) प्राप्त थयेलाने मोक्षनुंज कारण
छे. अने आश्रवनो निरोध अने निर्जरानी प्राप्ति छे. तथा मूळ-उत्तर एवा वे भिन्न गुणो छे एवं चारित्र छे अने बीजा बधा व्रतोनी
वृत्ति (निर्वाह) नो कल्प उत्पन्न करेल छे, तथा निर्विघ्ने बधा प्राणीने संघट्टन परिताप अपद्रावण विग्रेरेथी दुःख न देवारूप जे स-
र्वोत्तम चारित्र छे. ते चारित्रनी सिद्धि माटे आ अध्ययन छे.

मरणना अभावना प्रसंगथी पांचभूत रहित (चेतनरूप) आत्मानो धर्म केवलज्ञाननी प्राप्ति छे, जेथी एवा चारित्रनी तथा आत्मानी
तथा आत्माना गुणज्ञाननी तथा मोक्षनी प्राप्ति माटे आ सूत्रनुं अध्ययन छे ते बताव्युं छे-

“ उपरना वाक्यथी ज्ञान प्राप्ति ” तेथी बृहस्पतिना नास्तिक मतनुं खंडन कर्युं, कारण के ते पांच भूत माने छे ते भूतो जड छे
अने आत्मा चेतन छे. तेनो गुणज्ञान छे ते बताव्युं छे. आ प्रमाणे सामान्यथी जीवनुं अस्तित्व स्वीकारी विशेषपणाथी जीवनो मो-
क्ष बताववाथी बौद्ध विग्रेरे मतनुं खंडन थयुं. कारण के जीवत्रणे काळ्यां होय तो तेना मोक्षनो संभव थाय.

एकेन्द्रिय पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पति विग्रेरे भेदवाला जीवोने बतावी अनुक्रमे समान जातीयवाला पत्थरनी शीला

सूत्रम्

॥२२२॥

आचारा०
॥२२३॥

विगेरेनी उत्पत्ति हरस मसा जे मांसना अंकुरा छे, तेनी माफक पृथ्वीकायनी उत्पत्ति छे.

अविकारवाली (पडतर) जमीन खोदवाथी देढकानी माफक पाणीनी उत्पत्ति छे, तथा विशेष उत्तम आहारथी वधवुं; अने विपरीत आहारथी हानि थवी. तेज प्रमाणे अर्भक (बाळक) ना शरीरनी माफक अग्निनी तुलना छे.

बीजानो प्रेरेलो अटक्या विना अनियत (एक सरखी नहि) एवी तिरछी गतिवालो गाय घोडानी माफक पवन बताव्यो अळता (खीओना शणगारमां वपरातो लाल रंग) थी, तथा झांझरथी शणगारेली जुवान खीनी लताथी विकार पामता कामीपुरुषनी माफक वनस्पति खीले छे. ए प्रमाणे अनेक प्रयोगो छे, तथा ऊंचा अभिप्रायथी माथुं उघाडीने (खुलासाथी) सूक्ष्मबादर-एकेन्द्रिय बे त्रण चार इन्द्रियवाला, तथा पांच इन्द्रियवाला संज्ञी तथा असंज्ञी तथा पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता विगेरे जीवोना भेदो बतावी; तथा तेमना शख्स स्व अने परकायवालां बतावी तेना वधमां बंध, अने कर्मथी छुटवा विरति बतावी; तेनेज चारित्र बताव्युं; एटले जीवनी रक्षा करवी; तेज चारित्र छे, अने जीवरक्षा करनारज चरित्रने अनुभवे छे, तेवुं पहेला अध्ययनमां बताव्युं छे अने आ बीजा अध्ययनमां बताव्युं छे के:—

शब्दपरिज्ञा नामना अध्ययनने सूत्रअर्थथी भणेला साधुने अध्ययनमां बतावेला पृथ्वीकाय विगेरे जीवोना भेदने मानतो तेनी रक्षाना परिणामवालो सर्व उपाधिथी शुद्ध, अने तेना उत्तम गुणथी रंजीत थइ; गुरुए बडीदीक्षारूप पंचमहाव्रत जेने अर्पण कर्या छे तेवा साधुने जेम जेम रागादिकषायवाला लोक, अथवा शब्दादि विषयलोक (रागद्वेषमां, अथवा इन्द्रियोना विषयमां रंजीत थयेला

सूत्रम्

॥२२३॥

आचार
॥२२४॥

जीवो) नो विजय थायछे. अर्थात् जे साधु रामदेष, तथा इन्द्रियोनी रमणातामां रागी न थाय. तेणे लोक जीत्यो कहेवाय; ते आ अध्ययनमां बताव्युं छे.

टीकाकार कहे छे के:—जेबुं हुं कहुं लुं, तेज प्रमाणे नियुक्तिकारे पण अध्ययननो अर्थाधिकार शास्त्रपरिज्ञामां पूर्वे कहेलो छे, ते सूत्र आ छे.

“लोओ जह बज्जङ्ग जह य तं विजाहियवं”

आ पदवडे सूचव्युं छे के, “लोक (संसारी-जीवो) जेम बंधाय छे, तेम साधुए न बंधातां ते बधानां कारणने छोडवां जो इए;” तेथी पूर्वे पहेला अध्ययनमां बंध बताव्यो; तेम आ बीजा अध्ययनमां बंधने छोडवानुं सूचव्युं; एटले शास्त्रपरिज्ञामां बंध, अने लोकविजयमां बंधथी छुटवानुं बताव्युं छे ते संबंध छे.

तेना चार अनुयोगद्वार छे. तेमां सूत्र अने अर्थनुं कहेबुं, ते अनुयोग छे, तेमां चार द्वार (उपायो, व्याख्यांग) कहेवां ते उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, नय छे. उपक्रम वे प्रकारे छे. शास्त्र संबंधी, शास्त्रीय अने लोक संबंधी ते लौकिक छे.

निक्षेपा त्रण प्रकारना छे. ओघ, नाम अने सूत्रालापक निष्पन्ननिक्षेप एम त्रण भेद छे. अनुगमसूत्र, अने नियुक्ति एम वे प्रकारे छे, नयोनैगम विगेरे छे.

शास्त्रीय उपक्रम,

आ उपक्रममां अर्थ अधिकार वे प्रकारे छे. अध्ययन अने उद्देशानो अर्थ अधिकार छे, तेमां अध्ययननो अर्थ अधिकारशास्त्र

सूत्रम्

॥२२४॥

आचारा०
॥२२५॥

परिज्ञामां में कहो छे, अने दरेक उद्देशानो अधिकार निर्युक्तिकार पोते कहे छे.

सयणे य अद्वृत्तं, बीयगंमि माणो अ अत्थसारो अ। भोगेसु लोगनिस्साइ, लोगे अममिज्जया चेव ॥१६३॥

पहेला उद्देशाना अर्थ अधिकार (विषय) मां मातापिता विगेरे संसारी-सगामां साधुए प्रेम न करवो. (न करवो, ए मूल सूत्रमां नथी; ते उपरथी लीधुं छे,) ते प्रमाणे आगळ सूत्र आवशे के, मारी माता, मारा पिता इत्यादि साधुने न जोइए.

बीजा उद्देशामां संयममां अद्वृपणुं (ढीलापणुं) न करखुं; पण विषय अने कषाय विगेरेमां साधुए अद्वृपणुं करखुं; अने तेज सूत्र कहे छे के, अरतिमां बुद्धिमान पुरुष आसक्ति न करे.

त्रीजा उद्देशामां मान ए अर्थसार नथी; कारणके, जाति विगेरेथी उत्तम साधुए कर्मवशथी संसारनी विचित्रता जाणीने वधा मदनां ठेकाणामां पण मान न करखुं. कहुं छे के:—कोण गोत्रनो वाद करनारा ? कोण माननो वाद करनारा छे ?

चोथा उद्देशामां कहे छे के भोगमां प्रेम न धारवो कारण के सूत्रमां कहेशे, स्त्रीओथी लोकमां दुःख पामशे. अने तेनो मोह छोडे तो तेर्थी तेमां भोगीओने भविष्यमां थतां दुःखो बतावशे.

पांचमां उद्देशामां साधुए पोतानां सगां धन मान अने भोग त्याग्या छतां संयमधारक साधुए शरीरनी प्रतिपालना माटे शृह-स्थोए पोताना माटे करेला आरंभथी बनेली वस्तु लेवानी निश्चाए विचरखुं. तेज सूत्र कहेशे के समुस्थित अणगार होय विगेरे ज्यां सुधी निर्वाह करे विगेरे छे. छट्ठा उद्देशामां लोकनिश्चामां विचरता साधुए ते लोको साथे पहेलां के पछीनो परिचय थयो होय

सूत्रम्

॥२२५॥

आचार
॥२२६॥

अथवा परीचय न थयो होय तो पण ममत्व न करवो एटले कमळ पाणीमां उत्पन्न थया छतां निर्लेप रहे छे, तेम साधुए ते गृहस्थोथी गोचरी विगेरेनो संबंध छतां पण तेनाथी लेपवाङ्गा थबुं नही. ते सूत्र कहेशो आ मारो छे ते मारापणुं मूके तेज साधु छे विगेरे तात्पर्यवालुं सूत्र आगळ कहेशो.

आ अध्ययननुं नाम लोक विजय छे.

हवे लोक अने विजय एवा वे पदना निक्षेपा करवा जोइए, तेमां सूत्रा आलापक निष्पन्न निक्षेपमां निक्षेपने योग्य जे सूत्रपदो छे तेमना निक्षेपा करवा, अने सूत्रपदमां बनावेल मूळशब्द (लोक) नो अर्थ कषाय नामनो कहो छे तेथी लोकने बदले कषायना निक्षेपा कहेवा जोइए ते प्रमाणे नामनिष्पन्ननिक्षेपामां बतावेला सामर्थ्यर्थी आवेला निक्षेपामां जे बताववानुं छे ते निर्युक्तिकार गाथाने एकठी करीने कहे छे—

लोगस्स य विजयस्स य गुणस्स मूलस्स तह य ठाणस्स। निखलेवो कायद्वो जंमूलागं च संसारो ॥ १६४ ॥

लोकोनो विजयनो, गुणनो, मूळनो, स्थाननो, ए प्रमाणे पांच शब्दनो निक्षेपो करवो जोइए. अने जे मूळ छे ते संसार छे तेथी तेनो निक्षेपो करवो जोइए. ते संसारनुं मूळ कषाय छे. कारण के नरकना जीवो तिर्थंचना जीवो तथा मनुष्य अने देवता ए चार गतिरूप संसार वृक्षनुंज स्कंध (थड) छे, तथा गर्भ निषेक कलल अर्बुद (वीर्य अने लोहीथी बंधातुं शरीर) मांसनी पेशी विगेरे तथा जन्म जरा (बुढापो) अने मरण आ संसारझाड़ी शाखा (डाळीओ) छे, अने द्रारिद्र विगेरे अनेक दुःखोथी उत्पन्न थयेला

सूत्रम्
॥२२६॥

आचारा०

॥२२७॥

पांडांनो समृह छे. वक्ती वहालांनो वियोग, अप्रियनो संबंध, पैसानो नाश, अनेक व्याधि विगेरे रूप सेंकडो फुलोनो समृह छे, तथा शरीर अने मन संबंधी अत्यन्त पीडाजनक दुःखनो समृहरूप-फल छे. आ बधुं संसाररूप-झाडनुं वर्णन कर्यु; ते संसार-झाडनुं मूळ कषायो छे. कारणके, कष एटले संसार. अने आय एटले लाभ. जेनाथी संसारनो लाभ थाय छे, ते कषाय छे. आ प्रमाणे ज्यां ज्यां नामनिष्पन्ननिक्षेपामां तथा मूत्र आलापक निक्षेपामां जे जे पदनो संभव थशे (जरुर पडशे) त्यां त्यां ते ते पदो निर्युक्ति-कार साचा मित्र बनीने विवेकथी कहेशे.

लोगोत्ति य विजअत्ति य अज्ञयणे लक्खणं तु निष्फणं । गुणमूलं ठाणंतिय, सूत्रालावे य निष्फणं १६५

लोकविजय, अध्ययन, लक्षण, निष्पन्न, गुण, मूल, स्थान, तथा सूत्रालापकमां निष्पन्न विगेरे दुङ्कमां जे कहुं; तेनुं विवेचन करे छे; उद्देश प्रमाणे निर्देशनो न्यायछे, ते प्रमाणे लोक, अने विजयनो निक्षेपो कहे छे.

लोगस्स य निक्षेवो अट्टविहो छविहो उ विजयस्त । भावे कसायलोगो अहिगारो तस्स विजएणं ॥१६६॥

लोकनो निक्षेपो आठ प्रकारे तथा विजयनो छ प्रकारे छे. भावमां कषाय लोकनो अधिकार छे, अने तेनो विजय करवानो छे ते कहे छे. जे देखाय ते लोक मूत्र प्रमाणे लुक धातुनो लोक शब्द थयो छे.

लोकनुं वर्णन.

धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायथी व्यस्त थयेलुं तमाम द्रव्यना आधारभूत, वैशाखस्थान एटले, कमरनी बे बाजुए बन्ने हाथ दइने पग पहोळा करी उभा रहेला पुरुषनी माफक जे आकाश, खंड रोकायो छे, ते लेवो; अथवा धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्दल ए

सूत्रम्

॥२२७॥

आचारो
॥२२८॥

पांच अस्तिकाय. (प्रदेशनो समूह) छे, ते लेवो. ते लोकनो आठ प्रकारे निक्षेपो छे. नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भव, भाव, पर्यव. एम आठ भेद छे, अने विजय, अभिभव पराभव, पराजय एम पर्यायो छे, तेनो निक्षेपो छ प्रकारे छे. अहिंया लोकना आठ प्रकारना निक्षेपा छतां भाव निक्षेपामां भाव लोकनो अधिकार छे. ते छ प्रकारनो औदायिक भाव विगेरे छे. ते औदायिक भावबाबा कषाय लोकवडे अधिकारछे; अने ते संसारनुं मूळ छे.

शिष्यनो प्रश्न—आ बधुं शा माटे कहुं?

उत्तर—तेनो एटले औदायिक भाव कषाय लोकनो पराजय करवो. (क्रोध विगेरे थाय तो तेने दावी देवा) लोकना निक्षेपा पछी विजयना छ प्रकारे निक्षेपा छे ते कहे छे—

लोगो भणिओ द्वं खितं कालो अ भावविजओ अ । भव लोग भावविजओ पगयं जह वज्ज्ञई लोगो ॥

लोक द्रव्य क्षेत्र, काळ, अने भाव, विगेरेनुं वर्णन करे छे.

चतुर्विंशति स्तव—(चोवीस भगवाननुं स्तवन जेनुं बीजुं नाम लोगस्स) छे, ते बीजो आवश्यक छे. तेनुं आवश्यक सूत्रनी निर्धुक्तिमां विस्तारथी वर्णन करेलुं छे.

शिष्यनी शंका—आ वाचानी कइ जातनी युक्ति छे? के लोकोनुं त्यां वर्णन करेलुं छे. अने अहीं तेनो शुं संबंध छे?

उत्तर—अहीआं अपूर्बकरण (आठमुँ गुणस्थान) थी अनुक्रमे चढी क्षपकश्रेणि (केवणज्ञान पामवानुं ध्यान जेमां मोहनो सर्वथा

सूत्रम्
॥२२८॥

आचारो
॥२२९॥

नाश थाय छे.) ए चढनारा पुरुष जेम अग्नि लाकडांने बाळे तेम पोते कर्मरूपी लाकडांने ध्यानरूपी अग्निवडे बाळी मूक्याथी आवरणरूप कर्म नाश थतां निर्मल (केवळ) ज्ञान प्राप्त थतां देवताओनुं आसन कंपतां तेओना आववाथी केवळ ज्ञानी पूज्य पुरुष तरीके पूजाय छे. अने तेज पुरुष ज्ञान वडे सर्वे जीवोनुं हीत थवा उपदेश आपे ते तीर्थ छे. तेने करवाथी तीर्थकर नामकर्म उदयमां आवे; अने तेमने सामान्य लोकथी विशेष एवा चोत्रीस अतिशयो प्राप्त थया एवा अंतिम तीर्थकर वर्षमानस्वामीए (लगभग पचीससो वर्ष उपर) त्यागवा योग्य अने गृहण करवा योग्य पदार्थनो सुलासो करवा देव अने मनुष्यनी सभामां आचारांगसूत्रनो विषय करावो. अने ते सांभळी तेमना महान् बुद्धिवाला गणधरो. जेओ अचिंत्य शक्तिना प्रभाववाला हता. तेवा गौतम इंद्रभूति विगेरेए ते प्रवचन (महान् उपदेशना वाक्यनो समूह) ने सर्वे जीवोना उपकारमाटे तेनी सूत्र रचना करी तेनुं नाम आचारांग तरीके प्रसिद्ध थयुं. अने आवश्यकनी अंदर रहेलुं चतुर्विंशति स्तवनी निर्युक्ति तो त्यारपछी हमणांना काळ्यां थयेला भद्रबाहुस्वामीए कळुं छे तेथी ते अयुक्त छे कारण के पूर्वे काळ्यां बनेलुं आचारांगनुं व्याख्यान करतां पाढळथी थएल चतुर्विंशति स्तवनो अधिकार जोवानुं अथवा कहेवानुं क्यांथी आवे! आवुं कोइ कोमळ बुद्धिवाळा शिष्यने शंकानुं स्थान थाय तेनुं आचार्य समाधान करे छे के आमां कंइ दोष नथी कारण के आ निर्युक्तिनो विषय छे. अने भद्रबाहुस्वामीए प्रथम आवश्यकनी निर्युक्ति करी, त्यारपछी आचारांगनी निर्युक्ति करी तेथी तेम थाय, तेमज कळुं ले सूत्र—

“ आवस्यस्यस्य दसकालियस्य तह उत्तरज्ञमायारे ”

सूत्रम्
॥२२९॥

आचारो
॥२३०॥

आवश्यक-दश वैकालिक-उत्तराध्ययन तथा आचारांगनी निर्युक्ति छे विगेरे जाणबुं—

विजयना निशेपा नामस्थापना छोडीने द्रव्यमां झ शरीर विगेरे सिवाय व्यतिरिक्तमां द्रव्यबडे द्रव्यथी अथवा द्रव्यमां विजय ते छे, के कडवो तीखो कसाएलो विगेरे औषधथी सळेखम विगेरे रोगनो विजय थाय, अथवा राजा के मळनो विजय थाय ते द्रव्य विजय छे. क्षेत्र विजय ते छ खंडने भरत विगेरे चक्रवर्त्तिओ जीते छे. अथवा जे क्षेत्रमां विजय थाय ते क्षेत्र विजय छे काळबडे जे विजय थाय छे, ते जेमके भरते साठ हजार वर्षे आखो भरतखंड जीत्यो ते काळ विजय छे कारण के तेमां काळनुं प्रधानपणुं छे. अथवा भृतक (भरवाना) काममां एणे मास जीत्यो अथवा जे काळमां विजय थयो ते पण काळ विजय छे—

भाव विजय ते औदयिक विगेरे एक भावनुं बीजा भावमां बदलाववा वडे एटले औपशमिक विगेरेथी थता विजयनुं स्वरूप बतावीने चालु वातमां जे उपयोगो छे ते कहे छे.

अहीं भाव लोक मूळसूत्रमां लीथेल छे तेथी भाव लोकज कहो छे (छंदमां मात्रा वधवाथी भावने बदले भव लीधो छे) (ते प्रमाणे कहुं छे. निर्युक्ति गाथा १६६ ना छेला बे पदमां कहुं छे के भावमां कषाय लोकनो अधिकार छे विगेरे जाणबुं) ते औदयिकभाव कषाय लोकनो औपशमिक विगेरे भाव लोक वडे विजय करवो (कषायो मोहनीय कर्मना उदयथी छे, तेने शांत करवा-क्षय करवा ते कहे छे.) चालु विषयमां तेज जाणवानुं छे टीकाकार तेज कहे छे. “आठ प्रकारनो लोक अने छ प्रकारनो विजय ए बनेनुं स्वरूप पूर्वे कहुं. ते बन्नेमां भाव लोक अने भाव विजयथीज अहीआं प्रयोजन छे.” आठ प्रकारना कर्म वडे लोक

सूत्रम्
॥२३०॥

आचार्य
॥२३१॥

(जीवोनो समूह) बंधाय छे. अनें धर्म करवाथी मूकाय छे. ते पण आ अध्ययनमां बताव्यु छे. ते भाव लोक विजय वडेज शुं फळ छे ते बतावे छे.

विजिओ कसायलोगो सेयं खु तओ नयत्तिउं होइ । कामनियतमई खल्लु संसारा मुच्चई खिष्पं ॥ १६८ ॥

जेणे कषाय लोकनो विजय कयों, ते संसारथी जल्दी मुकाय छे. तेथी कषायथी दूर रहेवुं. तेज कल्याणकारी छे. (खु अव्यय “ ज ” ना अर्थमांज छे.)

पश्च—कषाय लोकथीज दूर रहो. तेज संसारथी मूकाय छे के बीजा कोइ पापना हेतुओ छे. के जे दूर करवाथी मोक्ष मळे ?

उत्तर—काम एटले संसारी विषयनी जे खोटी बुद्धि छे ते पण निवारण करवाथीज मोक्ष मळे छे ?

नाम निष्पन्न निक्षेपो पुरो थयो. हवे सूत्र आलापक निक्षेपाने कहे छे तेने माटे सूत्र जोइए ते सूत्र निर्दोष उच्चारयुं जोइए ते आ छे मूळ सूत्र—

“ जे गुणे से मुलहाणे जे मूलहाणे से गुणे ”

जे गुण छे ते मूळ स्थान छे अने जे मूळ स्थान छे ते गुण छे. एना निक्षेप निर्युक्ति अनुगम वडे दरेक पदे निक्षेपो कराय छे. तेमां गुणनो पंदर भेदे निक्षेपो छे. ते कहे छे.

दबे खिते काले फल पज्जव गणण करण अव्यासे । गुणअगुणे अगुणगुणे भव सील गुणे य भावगुणे ॥ १६९ ॥

सूत्रम्

॥२३१॥

आचारो
॥२३२॥

नाम गुण, स्थापना गुण, द्रव्य गुण, क्षेत्र गुण, काळ गुण, फल गुण, पर्यव गुण, गणना गुण, करण गुण, अभ्यास गुण, गुण—अगुण, अगुण गुण, भव गुण, शोल गुण, भाव गुण एम पंदर भेद थया ते दुंकांणमां कहु. हवे सूत्र अनुगम वडे सूत्र उच्चारतां निक्षेप निर्युक्तिना अनुगम वडे तेना अवयवनो निक्षेपो करतां उपोद्घात निर्युक्तिनो अवसर छे—ते उद्देशा विगेरेना द्वारनी वे गाथा वडे जाणवा. हवे सूत्रने स्पर्श करनारा निर्युक्तिनो अवसर छे, ते नाम स्थापना सुगमने छोडीने द्रव्यादिकने कहे छे.

द्रव्यगुणो द्रव्यं चिय गुणाण जं तंमि संभवो होइ । सच्चित्ते अचिच्चते, मोसंमि य होइ द्रव्यंमि ॥ १७० ॥
द्रव्यगुण ते द्रव्य पोतेज छे. प्रश्न=शा माटे ? उत्तर—गुणोनो गुणपदार्थमां तेजस्वरूपे संभव थाय छे.

शंका=द्रव्य अने गुणमां लक्षण अने विधानना भेदथी भेद छे. तेज कहे छे. द्रव्य लक्षण गुणपर्यायवालुं द्रव्य छे. विधान पण धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल विगेरे छे. द्रव्यनी व्याख्या कही; अने गुणनी व्याख्या कहे छे. द्रव्यने आश्रयी साथे रहेनारा गुणो छे, अने तेनुं विधान ज्ञान, इच्छा, द्वेष, रूप, रस, गंध, अने स्पर्श विगेरे छे, ते पोतानामां रहेला भेदे करीने जुदा छे. आचार्यनुं समाधान—ए दोष नथी; कारणके, द्रव्यो सच्चित्त, अचिच्च अने मिश्र भेदथी जुदां छे, तेमां गुण छे ते, तेजस्वरूपे रहो छे, तेमां अचिच्च द्रव्य वे प्रकारे छे. अरुपी अने रूपी तेमां अरुपी द्रव्यमां धर्म, अधर्म, अने आकाश. एम त्रण भेदे करीने जुदा छे. लक्षणो अनुक्रमे गति स्थिति अने अवगाह आपवानुं छे अने एनो गुण पण अमूर्त छे अने अगुरुलघु पर्याय-लक्षणवालुं छे तेमां त्रणेनुं अमूर्तपणुं छे ते पोताना रूपभेद वडे व्यवस्थावालुं नथी. (अमूर्तपणामां भेद नथी) तेम अगुरुलघु पर्याय पण छे ते तेना पर्याय-

सूत्रम्

॥२३२॥

आचार्य
॥२३३॥

पणाथीज छे जेमके माटीनो पींड (गोळो स्थास कोश कुशूल पर्यायो (माटीनो घडो बनावतां चाक उपर जुदा जुदा आकारो बने छे ते) रुपवाली माटी छे. एटले माटीथी आकारो जुदा नथी, तेज प्रमाणे रूपी द्रव्यपण स्कंध देश प्रदेश परमाणु भेदोवालुं छे तेना गुणो रूप विगेरे छे ते अभेदपणे रहेलाले अर्थात् एमां भेदवडे प्राप्ति थती नथी जेमरूप पदार्थथी जुदुं पडे तेवो संभव नथी. जेम पोतानो आत्मा पोताना ज्ञानगुणथी जुदो पडे ते अशक्य छे तेम बीजाओमां पण समजबुं.

तेज प्रमाणे सचित्त एवुं जीवद्रव्य उपयोग लक्षणवालुं छे एटले उपयोग राखे. तोज जीवने वस्तुनुं के पोतानुं भान रहे छे ते आपणा आत्माथी जुदा ज्ञान विगेरे गुण नथी. कोइ जुदा माने तो जीवने अचेतनापणानो प्रसंग आवे.

बादीनी शंका ते प्रमाणे मानतां तो तेना संबंधथी जीवने अजीव पणुं थशे. ?

आचार्यनो उत्तर—तमारुं वचन गुरुनी सेवा कर्या विनानुं छे, कारण के जेने पोतानामां शक्ति नथी तेने बीजानी करेली केवी रीते थाय ? दाखला तरीके सेंकडो दीवानो संबंध थाय तो पण आंघळो रूप जोवाने शक्तिवान न थाय. एज प्रमाणे मिश्र द्रव्यमां पण गुण साथे एकपणानी योजना पोतानी बुद्धिए करी लेवी.

आ प्रमाणे द्रव्य अने गुण तेने एकान्तथी एक पणे स्वीकारे छते शिष्य कहे छे. शुं बन्ने ने बीलकुल भेद नथी ?

उत्तर—तेवो एकांत अभेद नथी, कारणके जो सर्वथा अभेद मानीए तो एकज इंद्रिय वडे बीजा गुणोनुं पण उपलब्धि (प्राप्ति) थइ जाय अने बीजी इंद्रिओ नकामी थाय. जेमके केरीनुं रूप जोवामां चक्षु काम लागे' अने तेना साथे एकपणुं मानीए तो गुण-

सूत्रम्

॥२३३॥

आचार्य
॥२३४॥

वालुं द्रव्य एकपणे होवाथी आंखथीज रस पण खाटो-मीठो परखावो जोइए, कारणके रूप देखाय तेम रस पण जणावो जोइए, एटले रूप अने रस साथे देखाय. तो सर्वथा अभेदपणुं छे, पण तेम तथी. रस पारखवामां जीभतुंज काम छे माटे किंइ अंशे घट अने बख्त जेम जुदा छे तेम किंइ अंशे गुण आत्माथी जुदा छे. आ प्रमाणे भेद अने अभेद एम वे बताववाथी शिष्य गमराइने आचार्यने पूछे छे के बब्रे रीते मानवामां दोष आवे छे. तो केम मानीए ? आचार्य कहे छे—एटला माटेज दरेकमां किंइ अंशे भेद अने किंइ अंशे अभेद मानतुं सारुं छे एटले अभेद पक्षमां द्रव्य पोतेज गुण छे. अने भेद पक्षमां भाव गुण जुदो छे. तेज प्रमाणे गुण अने गुणी पर्याय अने पर्यायी सामान्यने विशेष अवयव अने अवयवीनो भेद अने अभेदनी व्यवस्था बताववा वडेज आत्मभावनो सद्भाव थाय छे. कहुं छे के—

द्रव्यं पज्जविजुयं, दव्व चित्ता य पज्जवा णत्थि । उप्पायद्विभंगा, हंदि दवियलक्खणं एयं ॥ १ ॥
द्रव्य ते पर्यायथी जुदुं छे. अने द्रव्यथी जुदा पर्यायो छे एवुं क्यांय नथी. पण उत्पाद, स्थिति अने नाश एवा पर्यायोवालुं द्रव्यलक्षणजाणतुं नयास्तव स्यात्पदलांछिता इमे, रसोपविद्वा इव लोहधातवः । भवन्त्यभिप्रेतफला यतस्ततो, भवन्त-
मार्याः प्रणता हितैषिणः ॥ २ ॥

हे भगवंत ! तमारा कहेला नयो स्यात् पदे करीने शोभे छे. जेम लोह धातु रसे करीने व्याप्त थयेली (सोनुं बनेली) इच्छित फळने आपनारी छे. तेथी उत्तम पुरुषो जे हितना वांच्छको छे तेओ नमस्कार करीने आपने आशरे रहेला छे. स्पादनाद मतने

सूत्रम्

॥२३४॥

आचारा०

॥२३५॥

स्वीकारे छे. आवुं द्रव्य गुण तुं स्याद् वाद स्वरूपने बतावनार आपणां आचार्यों ए घर्णु लखयुं छे माटे वधारे कहेता नथी. तेज निर्युक्तिकार कहे छे के बधा द्रव्यमां प्रधान एवा जीव द्रव्यमां गुण भेद वडे रहेल छे ते कहे छे.

संकुचियवियसियत्तं, एसो जीवस्स होइ जीवगुणो । पूरेइ हंदि लोगं, बहुपएसेत्तणगुणों ॥ १७१ ॥

जीव छे ते संयोगि वीर्यवाळो छतां, द्रव्य पणे प्रदेश संहार विसर्ग वडे आधारना वश पणायी दीवानी माफक संकोच अने विकाश पामे छे. जीवनो आज गुण आत्मानी साथे आत्मभूत थइ रहेल छे, आम भेद विना पण छट्ठी विभक्तिनो संबंध थाय छे. जेम के राहुनुं मायुं. शिला पुत्रक (दस्तो. या वाटा) तुं शरीर विगेरे छे. तेज भवमां सात समुद्घात (आत्मानुं वधवुं घटवुं ते) ना परवशपणाथी आत्मा संकोच विकोच पामे छे, तेज कहे छे. बरोबर रीते चारे वाजु जोरथो इणवुं. अने आत्म प्रदेशोने आमतेम फेंकवुं. ए समुद्घात छे, ए सात समुद्घातानां नाम बतावे छे. कषाय,; वेदना; मारण अंतिक, वैक्रिय, तेजस, आहारक, अने केवलि समुद्घात छे. तेमां प्रथमनो कषाय. समुद्घात. अनतानुबंधी क्रोध विगेरेथी, जेनुं चिन्त (ज्ञान) नाश पाम्युं छे, तेओ पोताना आत्माना प्रदेशने आम तेम फेंके छे. तथा अतिशय वेदना थतां नाडीओ तूटतां वेदना समुद्घात थाय अने मरवानी अणीमां जीव आम तेम उत्पन्न थवाना प्रदेशमां लोकना अंत सुधी आत्म प्रदेशोने धोते वारंवार फेंके छे. अने संकोची ले छे. वैक्रिय समुद्घात वैक्रिय लब्धिवाळो, नवुं वैक्रिय शरीर बनाववा माटे, आत्म प्रदेशोने बहार काढे छे, तेज प्रमाणे तेजस शरीर बनाववा तथा तेजोलेश्यानी लब्धिवाळो तपस्वी तेजोलेश्या फेंकवा वखते तेजस समुद्घात करे छे तथा आहारक शरीर

सूत्रम्

॥२३५॥

आचारो

॥२३६॥

बनाववा चौद पूर्व धारी आहारक लबिवाला साधु कोइपण वखत संदेह दूर करवा तीर्थकर पासे पोतानुं शरीर मोकलवा आहारक शरीर बनाववा बहारना प्रदेशोने लेवा आत्माना—प्रदेशांने बहार फेंके छे, अने केवलि समुद्घात समस्त लोकव्यापी छे एटले तेनी अंदर वथा समुद्घात छे, एवुं निर्युक्तिकार पोतेज कहे छे. चौद राज लोक प्रमाण आकाश खंड छे तेमा व्यापे छे कारणके वहु प्रदेशनुं गुण पणुं छे. आ केवलि समुद्घात केवळ ज्ञान थया पठी केवळ ज्ञानी प्रभु जुए छे के माहं आयुष्य थोडुं छे, अने कर्म वधारे भोगववानां छे तेथी दंड कपाट मंथन आंतरा पूरवा, ते प्रमाणे संकोचमां पण जाणवुं एटले पहेले समये उपर नीचे दंड स-मान बीजे समये बने छेडे कपाट समान बीजे समये मर्थनी (रवैया) ना आकारे तथा चोथे समये आंतरा पूरे छे; ते प्रमाणे पाहुं चार समयमां मूल शरीर करी नाखे छे. आ द्रव्य गुण छे हवे क्षेत्र गुण विगेरे कहे छे.

देवकुरु सुसमसुसमा, सिद्धी निब्भय दुगादिया चेव। कल भोअणूङ्जु वंके जीवमजीवे य भावंमि ॥१७२॥

क्षेत्र ते देव कुरु विगेरे जुगलीआना क्षेत्र छे. त्यां सदाए कल्प वृक्ष रहे छे, काळ गुणमां सुखम सुखम विगेरे नामना आरा जाणवा, जेमां काळे करीने वस्तुमां फेरफार थाय छे. फळ गुणमां सिद्धि गति छे. पर्यव गुणमां निर्भजना (निश्चित भेद) छे. गणना गुणमां वे त्रण चार विगेरे तुं गणवुं छे. करण गुणमां कळाकौशल्य छे, अभ्यास गुणमां भोजन विगेरे छे. गुण अगुणमां सरळता छे, अगुण गुणमां वक्रता छे, भवगुण अने शीलगुणनो भावगुणनो विषय लेवाथी जीवनुं ग्रहण लेवाथी तेमां समावेश थइ गयो छे, तेथी गाथामां जुदुं बताव्युं नथी. भावगुण ते जीवनो नारक विगेरे भव जाणवो, शीलगुणमां जीवनो क्षमा विगेरे गुण युक्त आत्मा

सुत्रम्

॥२३६॥

आचारा०

॥२३७॥

लेवो, अने भावगुण ते जीव अने अजीवनो जाणवो, आ प्रमाणे थोडामां बतावी तेनी विशेष व्याख्या करे छे.
क्षेत्र गुण.

देवकुरु, उत्तरकुरु, हरी वर्ष, रम्यक, हेमवत, हैरण्यवत आ छ युगलिकनां क्षेत्र छे. ते सीवाय छपन्न अंतर द्वीप छे. तेमां पण युगलिक छे, तेओने खेती विगेरे कृत्य करवा वीना जे जोइए ते कल्प वृक्षमांथी मली शके छे, तेथी ते अकर्म भूमि कहेवाय छे. आ क्षेत्रने आश्रयी गुण जाणवो, वली त्यां जन्मेला मनुष्यो देव कुमार जेवा सुंदर रूपवाला सदा जुवानी भोगवनारा पुरे आयुष्ये मरनारा अनुकूल सुंदर पांचे इन्द्रियनुं विषय सुख भोगवनारा स्वभावथीज सरळ कोमळ स्वभाववाला अने भद्रक भावना गुणथी देव लोकमां जनारा होय छे (साथे स्त्री पुरुषनुं जोडुं जन्मे अने ते नरमादा तरीके रहे तेथी ते युगलिक कहेवाय)

काळ गुण.

भरत औरवत आ बे क्षेत्रमां प्रथमना त्रण आरामां एकान्त सुखवाला वरवतमां युगलिकोनी स्थिति सदा सुंदर रूपवाली अने यौवनवाली रहे ले.

फल गुण.

फल तेज गुण, ते फल गुण कहेवाय; अने ते फलक्रियाने आश्रयी छे, ते क्रिया सम्यक्कदर्शन ज्ञानचारित्र विना आ लोक अथवा परलोकने आश्रयी जे करवामां आवे; ते एकान्त अनंत सुखने आपनारी नहोवाथी तेनो फलगुण मच्या छतां अगुण जेवो छे, पण

सूत्रम्

॥२३७॥

आचार
॥२३८॥

सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र साथे मळी तेने अनुसार जे क्रिया थाय; ते एकांत अनंत वाधारहित संपूर्ण सुख आपनार सिद्धि (मोक्ष) फल आपनार छे, तेज फलगुण मेलवाय छे, तेथी एम कहुं के:—सम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्रवाकी क्रिया मोक्षफल आपनारी छे, अने ते शिवायनी क्रिया संसारीक सुखफलना आभास मात्र (बनावटी) छे. माटे ते निष्फल छे. एट्ला माटे मोक्षार्थी फलगुण तेनेज कहेवो के जेमां सम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्र विगेरेनी प्राप्ति थाय.

पर्यायगुण

पर्याय तेज गुण, ते पर्यायगुण छे, एट्ले गुण अने पर्याय, ए बंनेनो नयवादना अंतरपणार्थी अभेद स्वीकार्यो छे, अने ते निर्भजनारूप छे. निश्चितभजना एट्ले, निश्चितभाग जाणवो. जेमके, स्कंधद्रव्य छे, तेने देशप्रदेश वडे भेद पाढतां परमाणु सुधी भेदो पडे छे. (पुद्दल द्रव्य ज्यारे आहुं होय; त्यारे स्कंध कहेवाय; अने तेनो एक भाग लइए तो देश, अने सौथी बारीक भाग लइए; तो प्रदेश कहेवाय अने ते प्रदेश छुटा पडे तो परमाणुं छे.) परमाणु पण एक गुणो काळो बे गुणा काळा साथे मेलवतां अनंता भेदवाळो थाय छे. आ बधा पर्यायगुण छे.

गणना गुण

बे त्रण चार विगेरे, घणी मोटी राशि होय; ते गणना गण वडे निश्चय कराय छे के, आटलुं एनुं प्रमाण छे.

करण गुण.

कळाकौशल्य ते, पाणी विगेरेमां इन्द्रियोने कुशलता माटे, (कसरत माटे) नहावा, तरवा विगेरेनी क्रिया कराय छे.

सूत्रम्

॥२३८॥

आचारा०

॥२३९॥

अभ्यास गुण.—भोजन विगेरे संबंधी छे. जेमके, ते दिवसे जन्मेलो बाल्क पण ते पूर्वभवना अभ्यासथी मातानुं स्वन विगेरे पोताना मोढामां ले छे, अने रोतो बंधथाय छे, अथवा अभ्यासना वशथी अंधारूं होय; तोपण कोळीओ मोढामांज मुके छे, तथा आकुळ चित्तवालो पण दुःखवाली जग्यायेज शरीरने धंपाळे छे विगेरे छे—

गुणअगुण—गुणज कोइने अगुणपणे परिणमे छे. जेमके, कोइ माणसनो सरलगुण. कपटीने अवगुण करनारो थाय छे.

“ शाठ्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरूचौ, दम्भःशुचौ कै तवं । शूरेनिर्घृणता ऋजौ विमतिता दैन्यं प्रियाभाषिणि ॥
तेजस्विन्यवलित्पता मुखरता वक्तर्दशक्तिः रिथरे । तत्को नाम गुणो भवेत् सविदुषां, योदुर्जनैर्नाङ्कितः ? ॥१॥

लज्जावाली बुद्धि होय; ते शठपणामां माने. व्रतनी रुची दंभपणे माने; पवित्रताने कैतव (मक्खरीपणे) माने; शूरने निर्दयता, शरळताने घेलापणुं, मीडुं बोलतां दीनता माने; तेजस्वीने, अंहकारा, सारूं बोलनारने, मुखरता (वाचाळपणुं) माने; स्थिरमां बोलवाने अशक्त माने. आधी कोइ सारों कवि कहे छे के:—पंडितोर्मा एवो क्यो गुण होय के, दुर्जनो तेने कलंकित न बनावे ? आनो अर्थ ए छे के:—हितने माटे कहेलुं वचन पण निर्भाग्यने अगुणपणे परिणमे छे.

अगुण गुण.—कोइने अगुण—वचन पणे गुणकारीपण थाय छे. जेमके, वक्र विषय संबंधी छे. ते जेम, गोधो गळीयो होय; अने तेने किण स्कंध (कांध) थयो न होय; तो गो गणमां मुखेथी बेसे छे.

सूत्रम्

॥२३९॥

आचारो
॥२४०॥

गुणानामेव दौर्जन्यादधुरि धुयों नियुज्यते । असंजातकिणस्कन्धः, सुखं जीवति गौर्गलिः ॥ १ ॥

जेमके:—दौर्जन्य (कुटीलताथी) गुणोनुंज धुरिमां धुर्यपणुं योजाय छे. जेमके, असंजात एटले, जेने किणस्कन्ध नथयो होय; तेवो गलीयो बळद सुखेथी जीवे छे.

भवगुण—भवगुण एटले, नारकादि भववालो जीव ते ते स्थानमां उत्पन्न थाय; त्यां तेरे तेवो गुण मळे; ते जीवने आश्रयी छे. जेमके नारकिमां जीव उत्पन्न थाय; तेने अतिशय वेदना, तथा दुःखेथी पीडा सहन थाय; तेवी ते भोगवे; तथा तेना शरीरने तल तल जेवडा टुकडा करीनांखे; तोपण जोडाइ जाय; तथा अवधिज्ञानवाला होय छे. आ नारकभवनो गुण कहेवाय ए प्रमाणे तिर्यचमां उत्पन्न थयेला तेना भवगुण प्रमाणे सत् असत्तना विवेकरहित छतां आकाशगमननी लब्धिवाला होय छे, तथा गाय विगेरेने धास विगेरे खाणुं शुभ अनुभव वढे मळे छे, तथा मनुष्यभवमां मोक्षप्राप्ति बधां कर्मोनो क्षयरूप छे, ते मळे छे, तथा देवोने सर्व शुभ अनुभव छे. आ भवनो गुण छे.

शीलगुण.—बीजाए आक्रोशथी कहेवा छतां पोते स्वभावथी शांत रहीक्रोध न करे; अथवा शब्दादिक विषय सारा-माठा प्राप्त थतां; पोते तत्वनो जाण होवाथी मध्यस्थपणुं राखे ते शीलगुण छे.

भावगुण—भावगुण ते ऐदायिक विगेरे छे, तेनो गुण ते, भावगुण छे. ते जीव अने अजीव आश्रयी छे. ते जीव विषय ऐदायिक विगेरे छ प्रकारे छे. तेना बे भेद छे, एटले तीर्थकर, तथा आहारक शरीर विगेरे संबंधी प्रशस्त छे, अने शब्द विगेरेमां विषयनी

सुत्रम्
॥२४०॥

आचारो
॥२४१॥

वांच्छना, तथा हास्य रति अरति, विगेरे निंदवा योग्य छे, तथा औपशमिक ते, उपशम श्रेणीए चढेला आयुष्यना क्षयथी तेज समये अनुत्तर विमानने प्राप्त करे छे, तथा सारुं कर्म उदयमां न आववारूप छे, ते औपशमिक छे. क्षायिकभाव गुण चार प्रकारे छे. (१) सात मोहनीयकर्मनी प्रकृति क्षय थया पछी फरीथी मिथ्यात्वमां जाय (२) क्षीण मोहनीय कर्मबाला जीवने अवश्ये बाकीनां त्रण घातीकर्म दूर थशे (३) क्षीण घातीकर्मने आवरण रहीत ज्ञानदर्शन प्रगट थशे (४) बधां घातिअघाती कर्म दूर थतां फरीथी जन्म लेवो न पडे; तथा अत्यंत एकान्त बाधा रहीत परमानंदवाला मुखनी प्राप्ति छे, ते छे, क्षय उपशमथी थयेल क्षायोपशमिक दर्शन विगेरेनी प्राप्ति छे अने परिणामिक ते भव्य अभव्य, विगेरे छे, तथा संनिपातिक ते औदयिक विगेरे पांच भावनुं एक काळे साथे मळवुं ते आ प्रमाणे छे. जेमके मनुष्य गतिना उदयथी औदयिक भाव छे त्यां पांच इंद्रियोनी प्राप्ति थवाथी ते समये ज्ञान संबंधी क्षय उपशमथी क्षायोपशमिक छे अने दर्शन मोहनियकर्मनी सात प्रकृतिना क्षयथी क्षायिक छे अने चारित्रमोहनीयना उपशम भावमां औपशमिक छे अने भव्यपणाथी परिणामिकभाव छे एम जीवनो भावगुण बताव्यो (आनुं वधारे वर्णन चोथा कर्मग्रंथमां छे त्यांथी जोवुं.)

इवे अजीव भावगुण कहे छे ते औदयिक अने पारिणामिकनो संभव छे. पण बीजानो नथी. औदयिक एटले उदयमां थयेल अने अजीवना आश्रयी छे ते विवक्षाथी अजीव लीधो जेमके केटलीक प्रकृतिओ पुद्गल विपाकीज होय छे. प्रभ-तेकइ छे ? उत्तर-औदासिक विगेरे पांच शरीर, छ संस्थान त्रण अंगोपांग छ संहनन, पांच वर्ण, बे गंध, पांचरस, आठ स्पर्श, अगुरुलघु नाम, उपघातनाम, पराघातनाम, उच्चोत आतपनाम, निर्माण, प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ आ वधी प्रकृतिओ पुद्गल विपाकिनी छे, कारणके, जीवनुं संबंधपूर्ण छतां पुद्गल विपाकिपणे तेओ छे. परिणामिकभाव, अजीवगुण बे प्रकारे छे. अनादि परिणामिक ते धर्म-अर्धम

सुत्रम्

॥२४१॥

आचार
॥२४२॥

आकाशनो अनुक्रमे गति, स्थिति, अने अवगाह लक्षणरूप छे, सादि, (आशीबाबो) परिणामिक देखावभाव ते, आकाशमां वादळानुं इंद्रधनुष्य विगेरेनो देखाव छे, तथा परमाणुओंनुं रूप विगेरेमां वीजुं गुणपत्तुं बदलाय छे. हवे आ प्रमाणे गुण कहीने मूळनो निक्षेपो कहे छे.
मूले छब्कं दब्वे ओदइउवएस जाइमूलं च । खिते काले मूलं भाव मूलं भवे तिविहं ॥ १७३ ॥
मूळ शब्दनो छ प्रकारे नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव एम निक्षेपा छे. नाम स्थापना जाणीता छे.

द्रव्यमूळ.

द्रव्यमूळमां ज्ञ शरीर, भव्यशरीर, अने ते शिवाय (१) औदायिकमूळ, (२) उपदेशमूळ, (३) आदिमूळ. एम त्रण प्रकारे छे. वृक्षना मूळपणे जे द्रव्य परिणये ते औदायिकमूळ जाणवुं; तथा वैद्य रोगाने तेनो रोग दुर करवा जे मूळनो उपदेश करे; ते उपदेशमूळ-पिपरीमूळ विगेरे जाणवां; आदिमूळ वृक्षोनां मूळनी उत्पत्तिमां जे पहेलुं कारण छे ते जेमके, स्थावरनाम गोत्र प्रकृतिना संबंधथी तथा मूळ निर्वर्तन उत्तर प्रकृतिना प्रत्यययी जे मूळ उत्पन्न थाय; तेनो भावार्थ कहे छे, ते मूळनो निर्वाह करनार पुद्गलोना उदय आवतां कर्मण शरीर छे, ते औदायिक शरीरपणे परिणमतां पहेलुं कारण छे.

क्षेत्रमूळ—जे क्षेत्रमां मुळ उत्पन्न थाय छे, अथवा जे क्षेत्रमां मुळनुं वर्णन थाय ते जाणवुं.

काळमूळ—क्षेत्रमूळ प्रमाणे एटले जे काळमां उत्पन्न थाय; अथवा वर्णन कराय; ते काळ मुळ छे. भावमूळ त्रण प्रकारे छे.

भावमूळ.

सूत्रम्

॥२४२॥

आचारो
॥२४३।

ओदइयं उवदिष्टा आइ तिगं मूलभाव ओदइअं । आयरिओ उवदिष्टा विणयकसायादिओ आई ॥१७४॥

उपदेशक मुळ—भावमुळ औदियिक—भावमुळ, अने आदिमुळ प्रथमनुं कहे छे. नाम गोत्रना कर्मना उदयथी बनस्पतिकायनुं मुळ-पणुं अनुभव करतो “मुळ जीवज” औदियिकभाव मुळ छे, अने उपदेशकमुळमां जैन आगम जाणनारा आचार्य जे उपदेशक छे, ते जाणवा आदिमुळमां प्राणीओ जे कर्म बडे उत्पन्न थाय छे, ते प्राणीओनुं मोक्ष अथवा संसारनुं जे प्रथम भावमुळ छे, तेने उपदेश करे ते जाणनुं. जेमके, आ गाथाना चोथा पदमां कहुं के:—“विनय कषाय विगेरे आदि छे.” मोक्षनुं आदि कारण ज्ञानदर्शन-चारित्र, तप अने औपचारिक एम पांच प्रकारनो विनय छे, तेनाथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.

विणया णागं णाणाड दंसणं दंसणाहि चरणं तु । चरणाहिंतो मोक्खो मुक्खे सुक्खं अणाबाहं ॥ १ ॥

विनयथी ज्ञान, अने ज्ञानथी दर्शन. (श्रद्धा), श्रद्धाथी चारित्र, चारित्रथी मोक्ष अने मोक्षमां बाधारहित सुख छे.

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतज्ञानम् । ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ २ ॥

संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् । तस्मात्क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम् ॥ ३ ॥

विनयनुं फल गुरुनी सेवा. तेनाथी श्रुतज्ञान, तेनाथी चारित्र, तेनाथी आश्रव, (पाप) नो अटकाव, तेनाथी संवर, संवरनुं फल, तप. तेनाथी निर्जरा, तेनाथी क्रियानो अंत तेनाथी योगीपणुं छे.

योगनिरोधाद्व सन्ततिक्षयः सन्ततिक्षयान्मोक्षः । तस्मात् कल्याणानां सर्वेषां भाजनं विनयः ॥ ४ ॥

सूत्रम्

॥२४३॥

आचार
॥२४४॥

अयोगिपणार्थी भवसंततिनो क्षय तेनाथी मोक्ष छे, माटे ते बधां कल्याणोनुं मुळ विनय छे. (माटे विनय संपादन करवो.) जेम विनय मोक्षनुं कारण छे, तेज प्रमाणे विषय (इन्द्रियोनो स्वाद,) तथा क्रोध, मान विगेरे कषायों संसारनुं मुळ छे.
मुळनुं वर्णन कर्यु. हवे स्थानना पंदर प्रकारे निक्षेपा बतावे छे.

णामंठवणादविए खिचद्धा उहू उवरई वसहो । संजम पग्गह जोहे अयल गणण संघणाभावे ॥ १७५ ॥

नामस्थापना द्रव्य, क्षेत्र, काळ, विगेरे छे, ते कहे छे नामस्थापना सुगम छे. द्रव्यमां इ शरीर विगेरे छोडीने द्रव्यस्थानमां सचित्त अचित्त अने मिश्रद्रव्यनुं जे स्थान, (आश्रय) छे ते लेबुं. क्षेत्रस्थानमां भरत विगेरे छे, अथवा ऊंचे नीचे अथवा तिरछा (त्रांसा) लोकमां जे क्षेत्र छे ते क्षेत्रस्थान छे अथवा जे, क्षेत्रमां स्थाननुं व्याख्यान थाय ते लेबुं. अद्धा (काळ) तेनुं स्थान बे प्रकारे. (१) कायस्थिति, (२) भवस्थिति छे. कायस्थिति, ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायुमां असंख्यात, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणीनो काळ छे, तथा वनस्पतिकायनो अनंतकाळ छे.

बे इन्द्रिय विगेरे विकलेन्द्रियनीकाय स्थितिसंख्याता हजार वर्षनी छे. पंचेन्द्रिय, तिर्यंच, तथा मनुष्यनी कायस्थिति सात आठ भव छे.
पण ते बधानी भवस्थिति नीचे मुजब छेः—

पृथ्वीनी बावीस हजार, पाणीनी सात हजार, वायुनी त्रण हजार, वनस्पतिनी दश हजारवर्षनी उत्कृष्टि स्थिति छे. अग्निकायनी त्रण रात्रीदिवस छे. बे इन्द्रिय शंख विगेरेनी, बार वर्षनी छे, त्रण इन्द्रिय कीडी विगेरेनी स्थिति ओगणपचास दिवसनी छे, चार इन्द्रिय भयरा विगेरेनी छ मासनी छे पांच इन्द्रिय तिर्यंच, तथा मनुष्यनी त्रण पल्योपमनी छे, देव, तथा नारकीनी स्थिति भवसंबंधी

सूत्रम्

॥२४४॥

आचारा०

॥२४५॥

तेव्रीस सागरोपमनी छे. अने एकवार त्यां उत्पन्न थया पछी लागलागट उत्पत्ति नथी; माटे कायस्थिति एकज भवनी गणाय. आ उपर जे स्थिति बतावी छे, ते कायसंबंधी तथा भवसंबंधी बन्ने प्रकारे उत्कृष्ट जाणवी जघन्यथी तो बधाओनी स्थिति अंतमुहूर्तनी छे, पण नारकी, देवतानी भवस्थिति दश हजार वर्षनी छे. आ बधुं काळने आश्रयी कद्युं; अथवा अद्वास्थान ते सप्तय आवलिका-मुहूर्त अहोरात, पक्ष, मास, ऋतु, अयन संवत्सर, युग, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, पुढ़गलपरावर्तन, अतीत, अनागत, एम बधा काळरूपे जाणवुं.

उद्धस्थान ते, कायोत्सर्ग विगेरे छे, अने एना उपलक्षणथी निषणा (वेसवुं) विगेरे पण जाणवुं.

उपरतिस्थान ते, विरति छे. तेनुं स्थान एटले, साधुपण्युं, अथवा श्रावकपणुं जाणवुं; पण साधुनी सर्व विरति अने श्रावकनी देश विरति छे.

वसतिस्थान एटले, जे स्थानमां गाम अथवा घर विगेरेमां अमुक काल रहेवानुं थाय; ते वसति छे.

संयमस्थान सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धि तथा सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, एम पांच प्रकारे संयम छे. ते दरेकनां स्थान असंख्यात छे.

प्रश्न—असंख्यातनी संख्या केटली छे?

उत्तर—अति इन्द्रियपणानो विषय होवाथी साक्षात् देखाडवाने शक्तिवान् नथी, तेथी सिद्धांतमां आपेली उपमा प्रमाणे कहीए छीए. एक समयमां सूक्ष्म अग्रिकायना जीवो असंख्येय लोकाकाश प्रदेश-प्रमाण उत्पन्न थाय छे तेनाथी असंख्यात गुण अग्रिकाय पणे परिणमेला छे तेनाथी पण ते कायस्थिति असंख्येय गुणी छे. तेनाथी पण अनुभाग वंध अध्यवसाय स्थान असंख्येय गुणाले

सूत्रम्

॥२४५॥

आचारा०
॥२४६॥

आटलां संयमनां स्थान सामान्यथी कहां. हवे विशेषथी कहे छे—

सामाधिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धि—ए त्रणनी दरेकनां असंख्येय प्रदेश लोकाकाश तुल्य संयम स्थान छे अने सूक्ष्म संपरायनी अंतरमुहूर्तपणा भी स्थिति होवाथी अंतमुहूर्तना समय बरोबर असंख्येय संयम स्थान छे. यथाख्यात चारित्रनुं जघन्य उत्कृष्ट सीवाय एकज संयम स्थान छे, अथवा संयम श्रेणिनो अंदर रहेला संयम स्थानोने लेवां, ते आ क्रमे छे—

अनंत चारित्र पर्यायथी बनेलुं एक संयम स्थान छे. असंख्येय संयम स्थाननुं बनेलुं कंडक छे. ते असंख्यात कंडकथी उत्पन्न थयेल छ स्थाननुं जोडकुं छे, तेथी असंख्येय स्थानरूप श्रेणि छे.

प्रग्रह स्थान—प्रकर्षथी जेजुं वचन लेशय (माननीय थाय) ते प्रग्रह वाक्यवालो नायक (नेता) जाणवो. ते लौकिक अने लोकोत्तर एम बे प्रकारे छे तेनुं स्थान ते प्रग्रहस्थान छे. लौकिकमां माननीय वचनवाला राजा युवराज महत्तर (राजानो हित शिक्षक) अमात्य (प्रधान) राजकुमार छे. लोकोत्तरमां पण आचार्य उपाध्याय प्रद्वाति (प्रवर्तक) स्थविर गणावच्छेदक छे.

योध स्थान—आ पण पांच प्रकारे आलीढ़—प्रत्यालीढ़—वैशाख मंडल समपाद ए रीते छे—

अचल स्थान—आ स्थान चार प्रकारे छे, तेना सादि पर्यव सान विगेरे छे ते बतावे छे. परमाणु विगेरे द्रव्यनो एक प्रदेश विगेरेमां जघन्यथी एक समय सादि सर्पयवसान अवस्थान छे. अने उत्कृष्टथी असंख्येय काळ छे. अने सादि अपर्यवसान स्थान सिद्धोनुं भविष्यना काळरूप छे. सिद्धोनुं मोक्षमां जवुं ते आदि अने त्यांथी कोइपण वरवते खसवानुं नथी. माटे अनंत छे.

अनादि सर्पयवसान स्थान अतीत अद्वा रूपनुं शैलेशी अवस्थाना अंत समयमां कार्मण अने तैजस शरीर धारनारा जे भव्य जीव

सूत्रम्

॥२४६॥

आचारा०

॥२४७।

छे तेने आश्रयी जाणुं (तैजस अने कार्मण शरीर भव्य जीव साथे अनादि काल्थी जोडाएलां छे. अने जीव मोक्षमां जतां ते बने जीवथी जुदां पडे छे ते अनादिसांत कहेवाय छे.)

अनादि अपर्यवसान ते धर्म अधर्म आकाशना संधारी छे. (तेमनी स्थिति पूर्वनी जेसीछे, तेवीज हमेशां रहे छे.)

गणना स्थान—एक बेथी मांडीने शीर्ष प्रहेलीका सुधी जे गणत्री छे. ते लेवी. (जैनमां परार्ध उपरांत संख्या छे ते अनुयोगद्वार सूत्रमां बतावेलो छे, त्यांथी जोवी.)

संधान स्थान—ते बे प्रकारे छे. द्रव्यथी अने भावयी छे. द्रव्यरी छिन्न अने अछिन्न एम बे भेदे छे. ते स्त्रीनी कांचली विगेरेना डुकडा करीने सांधवानुं छे. अने अछिन्न संग्रहनमां पक्षम उत्पद्धमान तंतु विगेरेनुं जोडाण छे. (ताणो वाणो कपडामां जोडाय ते.)

भाव संधान प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे भेदे छे तेमां प्रशस्त अछिन्न भाव संधान उपशम क्षपक श्रेणिए चढता मनुष्यने अपूर्व संयमस्थान एक सरखांज होय छे. पण वचमां तुटक पड़ती नथो अथवा श्रेणि सिवाय. प्रवर्ध्यमान कंडकनां लेवां. छिन्न प्रशस्त भावसंधान भावथी औदयिक विगेरे बीजा भावमां जइने पाढा शुद्ध परिणामवाला थइने त्यां आवतां थाय छे.

अप्रशस्त अछिन्न भाव संधान उपशम श्रेणिएथी पडतां अविशुद्धमान परिणामवाला मनुष्यने अनंतानुबंधि मिथ्यात्वना उदय सुधी जाणवुं—अथवा उपशम श्रेणि सीवाय कषायना वशथी बंध अध्यवसाय स्थानोने चढतां चढतां अवगाह मान करनाराने होयछे.

अप्रशस्त छिन्नभाव संधान ते औदयिक भावथी औपशमिक विगेरे बीजा भावमां जइने पाढा त्यांज औदयिक भावमां आवे ते छे. आ द्वारनुं जोडकुं साथेज कहुं एटले संधानस्थान द्रव्य विषयनुं पहेलुं छे, अने पछीनुं भाव विषयनुं छे अथवा भावस्थान जे कषा-

सूत्रम्

॥२४७॥

आचारा०

॥२४८॥

योदुं स्थान छे, ते अहीं लेबुं कारणके तेओनेज जीतवापणानो अधिकार छे.

पश्चः—तेओनुं कयुं स्थान छे के जेने आश्रयीने ते थाय छे

उत्तर—शब्दादि विषयोने आश्रयीने ते थाय छे ते बतावे छे.

पंचसु कामगुणेसु य सदप्फरिसरसरूपगंधेसुं । जस्स कासाया वट्टंति मूलद्वाणं तु संसारे ॥ १७६ ॥

अहीं इच्छा अनंगरूप जे काम छे. तेना गुणोने-आश्रयी चित्तनो विकार छे; ते बतावे छे. ते विकारो शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध एम पांच छे. ते पांचे व्यस्त अथवा समस्त-विषय संबंधी जे जीवनुं विषय सुखनी इच्छाथी अपरमार्थने देखनार संसार प्रेमी जीवने राग द्वेषरूप अंधकारथी आंखनुं तेज हठी जवाथी साग-माठा पदार्थ प्राप्त थतां कषायो थाय छे ते मूलनुं संसार झाड थाय छे तेथी शब्दादि विषयथी उत्पन्न थए कगायो संसार संबंधी मूळ स्थानज छे—एनो भावार्थ आ छे के राग विगेरेथी डामाडोळ थएल चित्तवालो जीव परमार्थने न जाणवाथी आत्माने तेनी साथे कंइ संबंध नथी छतां विषयने आत्मारूपे मानीने आंधकाथी पण वधारे आंधको बनी कामी जीव रमणीय विषयो जोइने आनंद पामे छे तेथी कहुं छे—

**दृश्यं वस्तु परं न पश्यति जगत्यन्धः पुरोऽवस्थितं, रागान्धस्तु यदस्ति तत्परिहरन् यन्नास्ति तत् पश्यति ॥
कुन्देन्दीवरपूर्णचंद्रकलशश्रीमल्लतापल्लवा, नारोप्याशुचिराशिषु प्रियतमा गात्रेषु यन्मोदते ॥**

आंधको छे ते जगतमां जोवा जेवी वस्तु जोइ शक्तो नथी पण रागथी आंधको थएलो पोते आत्म भावने छोडीने अनात्म भावने जुए छे जेमके छती वस्तु कुंद (फुल) इन्दीवर (कमल) पूर्णचंद्र कलस श्रीमत् लतापल्लवो जेवानी गंदकीना ढगला

सूत्रम्

॥२४८॥

आचारा०

॥२४९॥

रूप प्रिय स्त्रीना शरीरने उपमाओ आपीने तेमां कामी आनंद माने छे. (साक्षात् उत्तम वस्तुओ छोडीने दुर्गंधथी भरेला स्त्रीना गंदा रीरमां आनंद माने छे) अथवा कर्कश शब्दो सांभळीने तेमां द्वेष करे छे तेथी मनोहर अथवा अणगमता शब्द विग्रेरे विषयो कषायोनुं मूळस्थान छे. अने ते कषायो संसारनुं मूळ छे.

प्रश्न—जो शब्दादि विषयो कषाय छे तो तेनाथी संसार केवी रीते छे? उत्तर—कारण के कर्म स्थितिनुं मूळ कषाय छे अने कर्म स्थिति संसारनुं मूळ छे. संसारीने अवश्य कषायो होय छे, ते कहे छे—

जह सद्वपायवाणं भूमीए पइट्ठियाइं मूलाइं । इय कम्मपायवाणं संसारपइट्ठिया मूला ॥ १७७ ॥

जेम सर्व ज्ञाडोनां मूळो पृथ्वीमां रहेलां छे तेज प्रमाणे कर्मरूप वृक्षना कषायरूपे मूळो संसारमां रहेलां छे.

शंका—आ अमे केवी रीते मानीए के कर्मनुं मूळ कषाय छे? उत्तर—मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, ए बंधना हेतु छे. आगममां पण कहुं छे के—

“जोवे णं भंते! कतिहिं ठाणेहिं णाणावरणिजं कम्मं बंधइ? गोयमा, दोहिं ठाणेहिं, तं जहा-रागेण व दोसेण व । रागेदुविहे-माया लोभेय, दोसे दुविहे । कोहे य माणेय, एषहिं चउहिं ठाणेहिं वोरिओ वगूहिएहिं णाणावरणिजं कम्मं बंधइ ॥

हे भगवंत, जीव केटलां स्थान वडे ज्ञानावरणीय कर्म वांधे छे. उत्तर—हे गैतम! राग अने द्वेष ए वे स्थान वडे वांधे छे अने

सूत्रम्

॥२४९॥

आचार
॥२५०॥

ए राग; माया ने लोभ एम वे भेदे छे, तथा द्वेष पण क्रोध अने मान, एम वे भेदे छे. ए चार स्थान वडे वीर्य, उपगृह, (जोडावा) थी ज्ञानावरणीय कर्म बांधे छे. ए प्रमाणे आठे कर्मने आश्रयी जाणवुं अने ते कषायो मोहनीय कर्मनी अंदर रहेला छे. अने आठे प्रकारना कर्मनुं मूळ कारण छे. काम गुणनुं मोहनीयपणुं बतावे छे—
अद्विहकम्मरुक्खा सब्वे ते मोहणिज्जमूलागा । कामगुणमूलगं वा तम्मूलागं च संसारो ॥ १७८ ॥

पूर्वे कहुं के कर्म पादप विगेरे तेनी व्याख्या करे छे. तेमां कर्मपादप क्या कारणवालां छे. तेनो उत्तर-आठ प्रकारना कर्मरूप वृक्षो छे. तेमनुं मूळ मोहनीय कर्म छे. एटले एकला कषायो न लेवा. पण काम गुणो मोहनीय मूळवाला छे. जे वेदना (संसार भोगववानी इच्छा) उदयथी काम थाय छे. ते लेवा. अने वेद छे ते मोहनीय कर्ममां समावेश थाय छे. तेथी मोहनीय कर्म जे संसारनुं मूळ कारण छे. ते संसार लेवो.

तेज प्रमाणे संसार कषाय, कामोनुं परंपराए मोहनीय कर्म कारणपणाथी प्रधान भावने अनुभवे छे. (तेज कर्म वंधनमां अग्रेसर छे.) ते मोहनीय कर्मनो क्षय थवाथी बीजा कर्मनो अवश्य क्षय थशे तेज प्रमाणे. कहुं छे.

“ जह मत्थयसूईए हयाए हम्मए तलो । तहा कम्माणि हम्मंति मोहणिजे स्वयं गए ॥ १ ॥

जेम ताडना झाडनी जे सूझ मथाले रहेली छे. ते नाश करतां ताडनुं झाड नाश पामे छे, तेज प्रमाणे मोहनीय कर्म नाश पामतां बीजां कर्मों नाश पामे छे.

आ मोहनीय कर्म दर्शन मोहनीय अने चारित्र मोहनीय एम वे भेदे छे, ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥२५०॥

आचारा०
॥२५१॥

दुविहो अ होइ मोहो दंसणमोहो चरित्तमोहो अ । कामा चरित्तमोहो तेणऽहिगारो इहं सुते ॥ १७९ ॥

दर्शन मोहनीय अने चारित्र मोहनीय एम बे भेदे कहुं, अने बंधना हेतुनुं पण बे प्रकार पणुं छे ते बतावे छे.

अहंत (जिनेश्वर) सिद्ध, चैत्य, तप. अतगुरु, साधु, संघना प्रत्यनीक (जिनेश्वरथी संघ सुधी जे पदो छे, जेमां गुण अने गुणी ए बंने आवे छे तेमना शत्रु) पणे जे वर्ते ते दर्शनमोहनीय कर्म बांधे छे. अने जेना वडे जीव अनंत संसाररूप समुद्रना मध्यमां पडे छे तथा तीव्र कषाय बहुराग द्वेषरूप मोहथी वेराएलो बनी देश विरति अने सर्व विरतिने हणनारो चारित्रमोहनीयकर्म बांधे छे.

तेमां मिथ्यात्व, सम्यग् मिथ्यात्व (मिश्र) अने सम्यक्त्व एम त्रण भेदे दर्शन मोहनीय—कर्म छे, तथा सोळ प्रकारना कषाय छे. नव नोकषाय छे. एम पच्चीस भेदे चारित्रमोहनीय छे. (पहेला कर्मग्रंथमां मोहनीय कर्म जुओ.) तेमां काम ए शब्द विगेरे पांच विषयो चारित्रमोह जाणवा; तेना वडे अहीं सूत्रमां अधिकार छे, कारण के, चालु विषयमां कषायोनुं स्थान छे; अने ते शब्दादि पांच गुणरूप छे. अने चारित्रमोहनीय पूर्वे कहेली उत्तर प्रकृति जे स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद तथा हास्य रतिलोभर्था आश्रीत काम आश्रयवाला कषायो संसारनुं मूळ छे अने कर्ममां प्रधान कारण ए छे ते बतावे छे.

संसारस्स उ मूलं, कम्मं तस्सवि हुंति य कसाया ॥

संसार ते नरक, तिर्यच, मनुष्य, देव एम चार प्रकारे गतिरूप संसारनुं भ्रमण छे. तेनुं मूळ कारण आठ प्रकारनुं कर्म छे. ते कर्मनुं पण मूळ कारण कषायो छे. ते क्रोध विगेरे संसारनुं निमित्त छे, अने ते प्रतिपादित शब्द विगेरे स्थानोनुं प्रचुरस्थानपण बताववा फरीथी स्थान विशेष अडधी गाथा वडे कहे छे.

सूत्रम्

॥२५१॥

आचार
॥२५२॥

ते सयणपेसअत्थाइएसु अज्ञत्थओ अ ठिआ ॥ १८० ॥

पहेलां अने पछी परिचयवाळां माता, पिता, सासु, ससरा विगेरे जे स्वजन (सगां) छे. तथा नोकर विगेरे ब्रेष्य छे अने धन धान्य कुप्य (तांबु-पीत्तल विगेरे) वास्तु (धर) रत्न ए अर्थ कहेवाय छे (ते स्वजन विगेरेनो द्वंद्व समाप्त करवो.) आ बधाने अंगे कषायो विषयपणे रहा छे, अने आत्मामां प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी माफक विषयीपणे छे; तेम एकेन्द्रिय विगेरेने पण कषायो छे. आ प्रमाणे कषायनुं स्थान बताववा वडे सूत्रपदमां लीधेलुं छे. स्थान समाप्त करीने जीतवा योग्य विषयोवाला कषायोना निक्षेपा कहे छे. णामंठवणादविए उपत्ती पच्चए य आएसो । रसभावकसाए या तेण य कोहाइया चउरो ॥ १८१ ॥

कषायना निक्षेपा—जेवो छे तेवो अर्थ न बतावे; ते निरपेक्ष अभिधान मात्र ते नाम कषाय छे अने सद्भाव (तदाकार चित्र विगेरे) असद्भाव (तदाकार नही.) जेम इंट विगेरेना देव बनावे; ते वे प्रकारे स्थापना निक्षेप छे. जेमके, भयंकर भूकुटि (आंखनी भ्रमर) क्रोधथी चढावी कपाळमां त्रण सळ पाडी त्रीशूल साथे मोहुं तथा आंख लाल करी होठ दांत पीसतो परसेवाना पाणी विगेरेथी संपूर्ण क्रोधनुं चित्र पुस्तक अथवा अक्ष वराटक विगेरेमां रहेल ते स्थापना कषाय छे. (क्रोध जीवने आश्रयी छे, अने क्रोधनां चिन्ह जेने प्रगट थयां होय; तेवा क्रोधीनुं चित्र पुस्तक अथवा वीजामां चित्र पाढे; ते कषायनुं चित्र होवाथी; स्थापना कषाय छे.) द्रव्यकषायोमां ज्ञ शरीर तथा भव्य शरीरथी व्यतिरिक्त कर्मद्रव्य कषायो तथा नोकर्मद्रव्य कषायो छे, तेमां प्रथम जे उदीर्णामां न आवेला; अथवा उदीर्णामां जे पुद्गलो आवेला होय; ते पुद्गलो द्रव्यना प्रधानपणाथी कर्मद्रव्य कषायो जाणवा. विभितक विगेरे

सूत्रम्

॥२५२॥

आचार
॥२५३॥

नो कर्मद्रव्य कषायो छे तथा उत्पत्ति कषायो शरीर उपधि क्षेत्र वास्तु स्थाणुं विगेरे उत्पत्ति कषायो छे, एटले जेने आश्रयीने कषायोनी उत्पत्ति थाय; ते उत्पत्ति कषाय जणवा; तेवुंज शाख्मां कहुं छेः—

‘ किं एत्तो कट्टयरं, जं मृढो थाणुअम्मि आवडिओ । थाणुस्स तस्सरूङ, न अप्पणो दुष्पओगस्स ॥१॥

कोइने स्थाणुं (झाडनुं दुंडुं) विगेरे वागतां मृढ माणस पोतना प्रमादनो दोष न काढतां; तेज स्थाणा उपर क्रोध करे छे, एनाथी वधारे दुःखदायक बीजुं शुं छे ?

प्रत्ययकषाय.—कषायोना जे प्रत्ययो एटले बंधनां कारणो छे ते अहींयां सुंदर अने खराब, एवा भेदवाला शब्द विगेरे लेवा; कारणके एनाथीज उत्पत्ति तथा प्रत्ययनुं कार्य तथा कारणरूपे—भेद रहेलाछे.

आदेश कषाय.—बनावटी भ्रमर विगेरे चढावबी ते छे.

रसकषाय—रसर्थी एटले कडवा तीखा एम पांच प्रकारना रसनी अंदर रहेला छे ते लेवा—

भावकषाय—शरीर, उपधि, क्षेत्र, वास्तु, स्वजन, प्रेष्य, अर्चा विगेरे निमित्तथी प्रगट थएला जे शब्द विगेरे काम गुण कारण कार्यभूत कषाय कर्मना उदयरूप आत्माना परिणाम विशेष ते क्रोध मान माया लोभ एवा चार कषाय छे. ते दरेकना अनंतानुंबंधी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान आवरण तथा संज्वलन, एवा चार भेद वडे गणतां सोळ भेद वाला भाव कषाय छे. तेओनुं स्वरूप तथा अनुबंधनुं फल गाथाओ वडे कहे छे.

सुत्रम्

॥२५३॥

आचा०
॥२५४॥

जलरेणुपुढविपद्यराईसरिसो चउविहो कोहो ॥ तिणिसलयाकट्टियसेलत्थंभोवमो माणो ॥ १ ॥

पाणीमां रेतीमां जमीन उपर अने पर्वत उपर जे फाट पडवा जेवो देखाव थाय छे तेवो चार प्रकारनो क्रोध छे. (रेतीमां काढेली लीटी. पवनथी तुरत मली जाय. तेवो संज्वलन क्रोध जाणवो. एम अनुक्रमे दरेक वधारे वधारे प्रमाणमां जाणवो) तथा तिनिश लता लाकडुं हाडकुं पत्थरनो थांभलो ए चारनी उपमावालुं मान छे. (तिनिश लता झट बळे तेम संज्वलन मानवाळो मान मुकी झट नमे बाकीना मानवाला कठणाइथी नमे पण पत्थरनो थांभलो नमे नही तेम अनंतानुबंधी मानवालो नमे नही) मायावलेहिगोमुक्ति मेंढासिंगघणवंसमूलसमा । लोभो हलिहकइमखंजणकिमिरायसामाणो ॥ २ ॥

अवलेखी (नेतर विगेरेनी छाल) गोमुत्रीका घेटानुं शीगडुं अने वांसनुं थडीउं, आ चारनी उपमां वाली माया छे. (संज्वलन माया वालो जेम नेतरनी छोल वाळेली होय तोपण सीधी थइ जाय छे. तेम आ माया वालो मायाने दूर करे छे पण छेवटनी मायावालो वांसना थडीया माफक कझीपण कपट छोडतो नथी.) तथा लोभ हलदर कादव खंजन अने कुमिना रंग जेवो छे. (संज्वलनना लोभवालो जेम हलदरनो रंग झट जतो रहे तेम आ लोभीने झट संतोष याय. पण कुमि रागथी रंगेला कपडा जेवा लोभीने मरतां सुधी संतोष न थाय.

पकखचउमासवच्छरजावज्जीवाणुगमिणो कमसो । देवगर तिरियणारयगइसाहणहेयवो भणिया ॥ ३ ॥

ते कषायो संज्वलन विगेरेनी स्थिति एक पखवाढीउं तथा चार मास, एकवर्ष अने छेवटना अनंतानुबंधीनी आखी जींदगी

सूत्रम्

॥२५४॥

आचार

॥२५५॥

सुधीनी छे. अने तेओनी संज्वलनवालानी देव गति तथा बाकीना त्रणनी अनुक्रमे. मनुष्य तिर्यच अने नरक गति छे. अर्थात् ए कपायो वाला जीवो ए गतिने पामे छे. एम कषायो ते गतिना साधनना हेतुओ कहा, आ कषायना नाम विगेरे आठ प्रकारे निक्षेपा कहा. तेने क्या नयवालो शुं इच्छे छे. ते कहे छे.

नैगम नयवालो सामान्य विशेष रूपणाथी तथा तेनुं एकगमपणुं नहोवथी तेना अभिप्राय प्रमाणे बथाए निक्षेपा नाम विगेरे आठे माने छे. अने संग्रहव्यहवार नयवाला कषाय संबंधना अभावथी आदेश अने समुत्पत्ति ए वे निक्षेपाने इच्छता नथी. रुजु सूत्रवालो वर्चमान अर्थने इच्छतो होवाथी आदेश, समुत्पत्ति अने स्थापना निक्षेपाने इच्छतो, नथी शब्द नयवालो नामनो पण कथं-चितभावनी अंदर रहेला भावथी नाम अने भाव, एवा वे निक्षेपानेज इच्छे छे आ प्रमाणे कषायो कर्मना कारणपणे कहा. अने ते कर्म संसारनुं कारण छे. हवे संसार केटला प्रकारनो छे ते बतावे छे.

दृवे खित्ते काले, भवसंसारे अ भवसंसारे । पंचविहो संसारो, जत्थे ते संसरंति जिआ ॥ १८२ ॥

द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भव, अने भग्व, एम पांच प्रकारनो संसार छे, जेमां संसारी जीवो भ्रमण करे छे (नाम स्थापना सुगम होवाथी निर्युक्तिकारे लीधा नथी एम जणाय छे.) द्रव्य संसारमां ज्ञ शरीर भव्य शरीर छोडीने द्रव्य संसाररूप आ संसारज छे. अने क्षेत्र संसार जे क्षेत्रोमां द्रव्यो आम तेम संसरे (खसे) ते छे. काळ संसार ते जेमां संसारनुं वर्णन थाय अने नरक विगेरे चार गतिमां अनुपूर्वीना उदयथी एक भवथी बीजा भवमां जवुं, ते भव संसार छे. अने भाव संसार एटले संसृतिनो स्वभाव ते औदयिक

सूत्रम्

॥२५५॥

आचारो
॥२५६॥

विगेरे भावनी परिणतिरूप छे, तेमां प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, अने प्रदेश एम चार प्रकारना कर्मना बंधना प्रदेश विपाकनुं भोगवबुं छे. आ प्रमाणे द्रव्यथी लङ् भाव सुधी पांच प्रकारनो संसार छे अथवा द्रव्यादिक चार प्रकारनो संसार छे ते आ प्रमाणे अश्वथी हाथी. गामथी नगर. अने वसंतथी ग्रीष्म. तथा औदयिकथी औपशमिक एम चार प्रकारे थाय छे, एम बंने प्रकारे संसार बताव्यो छे, आसंसारमां कर्मने वश थएला जीवो आम तेम भमे छे. तेर्थी कर्मनुं स्वरूप बतावे छे.

णामंठवणाकम्मं, दवकम्मं पओगकम्मं च । समुदाणिरियावहियं आहाकम्मं तवोकम्मं ॥ १८३ ॥

किइकम्म भावकम्मं, दलविह कम्मं समासओ होइ ।

नाम कर्म—ते कर्म विषयथी शून्य. एवुं नाम मात्र छे. स्थापना कर्म पुस्तक अथवा पात्र विगेरेमां कर्म वर्गणानुं सद्भाव. अ-सद्भाव एम वे रूपे जे लखेलुं के चितरेलुं होय कर्म छे ते स्थापना कर्म छे.

द्रव्य कर्मां—ज्ञशरीर सीवाय व्यतिरिक्त वे प्रकारे छे-द्रव्य कर्म अने नो द्रव्य कर्म, तेमां द्रव्यकर्म ते कर्म वर्गणाना अंदर रहेला पुद्गलो जे बंधने योग्य, अने बंधाता अने बांधेला जे उदीर्णामां न आवेला होय ते लेवानो द्रव्यकर्ममां कृषीबळ (खेड़ुत.) विगेरेनां कर्म जाणवां (जेनाथी बीजा जीवोने दुःख थाय तेवां संसारी कृत्य अहीं लेवां)

प्रश्न—कर्मवर्गणानी अंदर रहेला पुद्गलो द्रव्यकर्म छे एवुं कह्युं ते वर्गणा कइ छे ?

उत्तर—सामान्य रीते वर्गणा चार प्रकारनी छे, द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव, एम चारभेदे छे. तेमां द्रव्यथी एक वे विगेरेथी

सूत्रम्

॥२५६॥

आचार

॥२५७॥

संख्येय, असंख्येय, अनंत, प्रदेशवाली छे. तथा क्षेत्री जे क्षेत्र प्रदेशमां अवगाढ करी रहेल द्रव्यना एक बेथी संख्येय, असंख्येय, प्रदेशरूप क्षेत्र प्रदेशो जेनाथी रोकाय, ते क्षेत्र वर्गणा छे. अने काळथी एक बेथी मांडीने संख्येय, असंख्येय, समय स्थितिमां रहेल वर्गणा लेवी अने भावथी रूप, रस, गंध, स्पर्श, तथा तेनी अंदर रहेला भेदोरुस्प सामान्यथी भाव वर्गणा जाणवी, अने विशेषथी हवे कहे छे.-

(१) परमाणुओनी एक वर्गणा छे. एज प्रमाणे एक एक परमाणुना उपचय (वधारा) थी संख्येय प्रदेशवाला स्कंधोनी संख्येय वर्गणाओ छे. तेज प्रमाणे असंख्येय प्रदेशवाला स्कंधोनी असंख्येय वर्गणा जाणवी आ वर्गणाओ औदारिक विगेरे परिणाम ने योग्य थइ शकती नथी तथा अनंत प्रदेशनी बनेली अनंती वर्गणाओ पण ग्रहण योग्य नथी. तेवी वर्गणाओने उलंघीने औदारिक ग्रहण योग्य थाय छे. ते अनंती अनंत प्रदेशरूप अनंती वर्गणाओज छे एटले पूर्वे कहेली अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणानी अंदर 'एक' एक मेलववाथी औदारिकशरीर ग्रहण योग्य जघन्य वर्गणाओ थाय छे एम एक प्रदेश वधारतां वधेली औदायिक योग्य उत्कृष्ट वर्गणा ज्यांसुधी अनंती थाय त्यांसुधी लेवी.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टानो शुं भेद छे ?

उत्तर—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे, तेमां विशेष आ छे के औदारिक जघन्य वर्गणानो अनंतमो भाग जे छे तेना अनंता परमाणुपणाथी एक एक प्रदेशना उपचय थएथी औदारिक योग्य वर्गणानो जघन्य उत्कृष्ट मध्यवर्तीनी वर्गणाओनुं अनं-

सुत्रम्

॥२५७॥

आचार्य

॥२५८॥

तपणुं छे, तेमां औदारिक योग्य उत्कृष्ट वर्गणामां एकरूप (संख्या) उमेरवाथी अयोग्य वर्गणा जघन्य थाय छे. ए प्रमाणे एक एक प्रदेश वधतां उत्कृष्ट अंतवाळी अनंती थाय छे.

प्रश्न—एमां जघन्य उत्कृष्ट वर्गणानो शुं विशेष छे ?

उत्तर—जघन्यथी असख्येय गुणी उत्कृष्टी छे, अने ते बहु प्रदेशपणाथी अने अति सूक्ष्म परिणामपणाथी औदारिकने अनंती वर्गणा पण ते अग्रहण योग्य छे, तेम अल्प प्रदेशपणाथी अने बादर परिणामपणाथी वैक्रिय (शरीर) ने पण अयोग्य छे, ए प्रमाणे जेम जेम प्रदेशनो उपचय थाय; तेम तेम विश्रसा परिणामना वशथी वर्गणाओनुं अतिशय सूक्ष्मपणुं जाणबुं; तेज उत्कृष्ट उपर एकरूप नाखवाथी योग्य अयोग्य विगेरे वैक्रिय शरीर वर्गणाओनुं जघन्य उत्कृष्टनुं विशेष लक्षण जाणबुं; तथा वैक्रिय—आहारक ए बन्नेना वचमां रहेली अयोग्य वर्गणाओनुं जघन्य उत्कृष्ट विशेष असख्येय गुणपणुं छे वळी पूर्वे कहा प्रमाणे अयोग्य वर्गणा उपर एकरूपना प्रक्षेपथी जघन्य आहारक शरीर योग्य वर्गणाओ थाय छे. ते प्रदेश वृद्धिथी वधतां उत्कृष्ट अनंत सुधी थाय छे.

प्रश्नः—जघन्य उत्कृष्टनुं केटलुं अंतर छे ?

उत्तरः—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे.

प्रश्नः—विशेष केटलो छे ?

उत्तरः—जघन्य वर्गणानोज अनंत भाग छे, तेनुं पण अनंत परमाणुपणुं होवाथी आहारक शरीर योग्य वर्गणाओनुं प्रदेश उत्तरथी वधती वर्गणाओनुं पण अनंतपणुं छे, ते उत्कृष्ट वर्गणामांज एकरूप उमेरवाथी जघन्य आहारक शरीरने अयोग्य वर्गणाओ थाय

सूत्रम्

॥२५८॥

आचारा०

॥२५९॥

छे त्यारपछी प्रदेश वृद्धिए वधती ज्यांसुधी उत्कृष्ट अनंत थाय; त्यांसुधीज आहारकशरीरना सूक्ष्मपणाथी अने बहु प्रदेशपणाथी तेने अयोग्य वर्गणाओ छे, तेम बादरपणाथी अने अल्प प्रदेशपणाथी तैजस शरीरने पण अयोग्य छे.

प्रश्नः—जघन्यउत्कृष्टने अहीं केटलुं अंतर छे ?

उत्तर—जघन्यथी उत्कृष्ट अनंतगुणा छे.

प्रश्न—क्या गुणाकार वडे ?

उत्तर—अभव्यथी अनंतगुणा अने सिद्धथी अनंतमे भागे छे.

तेना उपर एकरूप नाखवाथी तैजस शरीरने योग्य वर्गणा जघन्य छे, ते प्रदेशवृद्धिए वधती उत्कृष्टसुधी अनंती थाय छे.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टनुं अंतर केटलुं छे !

उत्तर—जघन्यथी उत्कृष्ट विशेष अधिक छे, अने विशेष ते जघन्य वर्गणानो अनंत भाग छे, तेने पण अनंत प्रदेशपणुं होवाथी जघन्य उत्कृष्टनी वचमां रहेली वर्गणाओनुं अनंतपणुं छे, तैजसनी उत्कृष्ट वर्गणाना उपर एकरूप नाखवाथी वधेली जे वर्गणा ते तैजस शरीरने अग्रहण योग्य थाय छे एम एक एक प्रदेश वधतां उत्कृष्ट अंतवाली अनंती वर्गणाओ छे, ते तैजस शरीरने तेना अति सूक्ष्मपणाथी तथा बहु प्रदेशपणाथी अयोग्य छे, तेम बादरपणाथी अने अल्प प्रदेशपणाथी भाषा द्रव्यने पण अयोग्य छे.

जघन्य उत्कृष्टनुं अनंत गुणपणाथी विशेष छे अने ते गुणाकार अभव्यथी अनंतगुणा अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे ते अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणामां एकरूप नाखवाथी जघन्य भाषा द्रव्यवर्गणा थाय छे, तेनी पण प्रदेश वृद्धिए उत्कृष्ट वर्गणा सुधी अनंत

सूत्रम्

॥२५९॥

आचार
॥२६०॥

स्थान छे. जघन्य उत्कृष्टनु विशेष आ छे, जघन्य वर्गणाना अनंतमेभागे अधिक उत्कृष्ट वर्गणा छे. अहीआं पण अनंत भागनुं अ-
नंत परमाणुपणुं जाणवुं तेथी आ एक विगेरे प्रदेश वृद्धिना प्रक्रमथी अयोग्य वर्गणाओनुं जघन्य उत्कृष्टपणुं विगेरे जाणवुं. अहीआं
विशेष आटलुं छे के जघन्य उत्कृष्टनो भेद अहीआं अभव्यथी अनंतगुणो अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे, ते वर्गणाओनुं पण पूर्व
इतु कदंबक (समूह) थी भाषा द्रव्य अने आनापान (शासोच्छवास) द्रव्यनुं अयोग्य पणुं जाणवुं. अने अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणामां
एक रूप नांखेथी आनापान वर्गणा जघन्य थाय छे. तेनाथी एक एक रूपे वधतां उत्कृष्ट वर्गणाओना अंतवाली अनंती थाय छे.
जघन्यथी उत्कृष्टा जघन्यथी अनंत भाग अधिक जाणवा तेना उपर एक रूप वधतां जघन्य उत्कृष्ट भेद वडे अग्रहण योग्य वर्गणा
छे. पण विशेषमां अभव्यथी अनंत गुण अने सिद्धोथी अनंतमे भागे छे. फरीथी अयोग्य उत्कृष्ट वर्गणा उपर प्रदेशथी मांडीने वृद्धि
करतां जघन्य उत्कृष्ट भेदवाली मनोद्रव्य वर्गणा छे. जघन्य वर्गणानो अनंतमो भाग विशेष छे. फरीथी प्रदेशना वधता क्रमथी अ-
ग्रहण वर्गणा छे. विशेषमां अभव्यनो अनंत गुण विगेरे छे. अने ते वर्गणाओ प्रदेशना बहु पणाथी अने अति सूक्ष्म पणाथी मनो
द्रव्यने अयोग्य वर्गणाओ छे, तथा अल्प प्रदेशपणाथी अने बादरपणाथी कार्मण शरीरने पण अयोग्य छे, तेना उपर एक रूप ना-
खवाथी जघन्य कार्मण शरीरनी वर्गणा छे, वळी एक एक प्रदेशनी वृद्धि करतां उत्कृष्ट अनंत सुधी छे.

प्रश्न—जघन्य उत्कृष्टनो शुं विशेष छे. ?

उत्तर—जघन्य वर्गणानो अनंतमो भाग अधिक ते उत्कृष्ट वर्गणा छे, अने ते अनंत भाग अनंता अनंत परमाणुरूप होवाथी

सूत्रम्
॥२६०॥

आचार्या०

॥२६१॥

अनंत भेदथी भिन्न कर्म द्रव्यनी वर्गणाओ छे, अने अहीं तेमनुं प्रयोजन हे. कारण के द्रव्य कर्मना व्याख्याननी अहीं वात चाले हे, अने हवे पछीनी वर्गणाओ क्रमे आवेली हे, ते शिष्यना उपर उपकारनी वृद्धिथी कहेवाय हे.

बली उत्कृष्ट कर्मवर्गणा उपर एक रूप नांखवाथी जघन्य उत्कृष्ट भेदथी भिन्न धृव वर्गणा हे, ते जघन्यथी उत्कृष्टी सर्व जी-वोर्थी अनंत गुणी हे, तेना उपर एक रूप नांखवाथी क्रमबडे अनंतीज जघन्य उत्कृष्ट भेदवाली अध्रुव वर्गणा हे. अध्रुव पणाथी अध्रुव हे, कारण के तेना विरुद्ध पक्षवाली धृवना सद्भावथी तेनुं अधृतपणुं हे. अहीं जघन्य उत्कृष्टनो भेद हमणा उपर कहेलो तेज हे—ते उत्कृष्टना उपर एक एकनी वृद्धि करतां जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी अनंतीज शून्य वर्गणाओ थाय हे, अने जघन्य उत्कृष्टनो विशेष पूर्व माफक हे. तेओनो संसारमां पण अभाव हे, तेथी तेनुं नाम शून्यवर्गणा राख्युं हे. तेमां एम कहुं हे के:—अध्रुववर्गणाना उपर प्रदेशनी वृद्धिए अनंतीनो पण संभव थतो नथी. एवी प्रथम शून्यवर्गणा हे. तेना उपर एकरूप विगेरेनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी प्रत्येक शरीरनी वर्गणा थायहे. जघन्यथी क्षेत्रपल्योपमना असंख्येय भागना प्रदेश जेटला गुणी उत्कृष्ट हे, तेना उपर एक एकरूपनी वृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी अनंतीज शून्य वर्गणाओ थाय हे.

जघन्य वर्गणाथी उत्कृष्टी असंख्य भाग प्रदेशगुणी हे, तेनो असंख्येय भाग पण असंख्येय लोकाकाशरूप हे. आ प्रमाणे बीजी शून्यवर्गणा हे, तेना उपर एकरूपादि वृद्धिए बादर निगोद शरीरनी वर्गणा जघन्यथी हे, अने क्षेत्र पल्योपमना असंख्येय भाग प्रदेश-गुणी उत्कृष्टी हे, तेना उपर एकरूप विगेरेनी वृद्धिथी जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी त्रीजी शून्यवर्गणा हे. जघन्यथी असंख्येय गुणी उत्कृष्टी हे.

सूत्रम्

॥२६१॥

आचार
॥२६२॥

प्रश्नः—गुणाकार क्यो छे ? उत्तरः—आंगळना असंख्येय भाग प्रदेशनी राशिना आवलिका काळना असंख्येय भाग समय प्रमाणे वारंवार वर्गमूळना करवाथी असंख्येय भाग प्रदेश प्रमाणे छे, तेना उपर एक एकरूपनी दृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी सूक्ष्म निगोद शरीरनी वर्गणा छे, जघन्यथी उत्कृष्ट आवलिकाना काळना असंख्येय भाग समयना गुणाकार जेटली छे.

तेना उपर एक रूपनी दृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी चोथी शून्यवर्गणा छे. जघन्यथी उत्कृष्टी चोखुणो करेलो लोकनी असंख्येय श्रेणिओ जेटली छे, अने ते प्रतरना असंख्येय भाग वरावर छे, तेना उपर एक एकरूपनी दृद्धिए जघन्य उत्कृष्ट भेदवाळी महास्कंध वर्गणा छे, जघन्यथी उत्कृष्ट क्षेत्र पल्योपमना असंख्येय अथवा संख्येयगुणा छे.

आ प्रमाणे संक्षेपथी वर्गणाओ कही छे, विशेष जाणवा इच्छनारे कर्मप्रकृति नामनो ग्रंथ जोवो जोइए.
हवे प्रयोग कर्म कहे छे—वीर्यातरायना क्षय उपशमथी प्रगट थएल वीर्यवाला आत्माथी प्रकर्षे करीने योजाय ते प्रयोग छे. ते मन वचन अने कायाना लक्षणवालो पंदर प्रकारे छे तेनी विगत.

मन योगमां—सत्य, असत्य, मिश्र, तथा न सत्य न असत्य एम चार प्रकारे छे, तेमज वचन योग पण चार प्रकारे छे अने काया योग सात प्रकारे छे, ते बतावे छे. (१) औदारिक (२) औदारिक मिश्र (३) वैक्रिय (४) वैक्रिय मिश्र (५) आहारक (६) आहारक मिश्र (७) कार्मण योग एम पंदर भेद थया तेमां मनयोग भनपर्याप्तिथी पर्याप्त थएला मनुष्य विगेरेने छे. वचन योग—बे इन्द्रिय विगेरे जीवोने छे. औदारिक योग तिर्थंच तथा मनुष्यने शरीर पर्याप्तिनी पछीथी छे. त्यार पहेलां मिश्र जाणवो अथवा

सूत्रम्

॥२६२॥

आचारो
॥२६३॥

केवळी भगवंतने समुद्घातनी अवस्थामां बीजा छट्ठा अने सातमा समयमां छे. वैक्रियकाय योग देव नारक अने बादर वायुकायने छे, अथवा बीजा कोइ वैक्रिय लब्धिवालाने होय छे. तेनो मिश्र योग देवता नारकिने उत्पत्ति समये छे अथवा नबुं वैक्रिय शरीर बनावनार बीजाने पण होय छे, आहारक योग चौद पूर्वी साधु ज्यारे आहारक शरीरमां स्थित होय छे त्यारे छे अने तेनो मिश्र-योग निर्वर्त्तना (बनाववा) ना काळमां होय छे.

कार्मण योग—विग्रह गतिमां अथवा केवलि समुद्घातमां बीजा चोथा पांचमा समयमां छे.

आ प्रमाणे पंदर प्रकारना योगवडे आत्मा आठ प्रदेशने छोडीने तपेला वासणमां उछलता पाणीनी माफक उद्वर्तमान सर्व आत्माना प्रदेशोवडे आत्मा प्रदेशनी अवष्टव्य आकाश भागमां रहेल कार्मणशरीरने योग्य कर्मदळने जे बांधे छे तेने प्रयोगकर्म कहे छे. कह्युं छे के—

“ जाव णं एस जीवे एयइ, वेयइ, चलइ, फंदईत्यादि ताव णं अट्टविहबंधए वा सत्तविहबंधए वा छविहबंधए वा एगविहबंधए वा नो णं अबंधए ” ।

ज्यां सुधी आ जीव हाले छे. वधारे हाले छे. चाले छे. फरके छे. त्यां सुधी आठ प्रकारना कर्मनो बंधक सात प्रकारना छ प्रकारना अथवा एक प्रकारना पण कर्मनो बंधक छे, पण ते अबंधक होतोज नथी.

समुदान कर्म—(समुदान शब्दनी उत्पत्ति सं. तथा आ उपसर्ग साथे दा. धातु जे देवाना अर्थमां छे, तेनुं ल्युट अंतथी पृष्ठोदर विगेरे

सुत्रम्

॥२६३॥

आचार
॥२६४॥

पाठ वडे आकारनो उकार आदेश थवाथी समादानने बदले समुदान शब्द थयो छे.) तेमां प्रयोग कर्मवडे एक रूप पणे ग्रहण करेली कर्म वर्गणाओनी सम्यक् मूळ उत्तर प्रकृति स्थिति अनुभाव अने प्रदेश बंधवाका भेदवडे आ उपसर्ग (जेनो अर्थ मर्यादा छे ते.) वडे देश (थोडो) सर्व उपघाती रूप वडे तेज प्रमाणे स्पृष्ट निधत्त निकाचित एवी त्रण अवस्था वडे जे स्वीकार करवो तेज समुदान छे, अने ते कर्मनुं नाम समुदान कर्म छे.

तेमां मूळ प्रकृतिनो बंध ज्ञानआवरणीय विगेरे आठ प्रकारे छे, अने उत्तर प्रकृतिनो बंध जुदो जुदो छे, ते बतावे छे.

ज्ञान आवरणीयना पांच भेद छे. मति श्रुत अवधि मनपर्याय तथा केवळ एम पांच भेदे ज्ञान छे. तेनुं आवरण करनार सर्व घाती फक्त केवळज्ञाननुं छे.

अने बाकीना चारनां आवरण देशघाति अथवा सर्वघाति छे.

दर्शनावरणीय कर्म नव प्रकारे छे. तेमां पांच प्रकारनी निद्रा तथा चार प्रकारनुं दर्शन. तेने आवरण करनार जाणवुं. निद्रा दंचक छे. ते मेलवेला दर्शननी लब्धि तेना उपयोगने उपघात करनार छे, अने दर्शन चतुष्टय ते दर्शनलब्धिनी प्रासिनेज आवरण करनार छे. अहींयां पण केवळ दर्शनआवरण सर्वघाति छे. बाकीना देशथी छे.

वेदनीयकर्म, साता अने असाता एम बे भेदे छे. मोहनीयकर्म, दर्शनचस्त्रि भेदथी बे प्रकारे छे. तेमां दर्शनमोहनीय मिथ्यात्वादि उदयमां आवतुं त्रण भेदे छे, अने बंधमां तो एक प्रकारे छे.

सूत्रम्

॥२६४॥

आचार
॥२६५॥

चारित्रमोहनीय सोऽ कषाय, नव नोकपाय एम पञ्चीस प्रकारे छे.
 अहींयां पण मिथ्यात्व, मोहनीय, तथा संज्वलन कषाय छोडीने बार कषायो सर्वधाति छे, अने वाकीना देशधाति छे.
 आयुष्यकर्म चार प्रकारे छे. ते नारकादि भेदवालां छे. नामकर्म बेताळीस भेदे छे, तेमां गति विगेरे भेद छे. वाळी उत्तर प्रकृतिथी ताणुं (९३) भेद छे, तेनो खुलासो कहे छे. गति नारक; विगेरे चार भेदे छे. जाति एकेन्द्रिय विगेरे पांच छे. शरीरो औदारिक विगेरे पांच छे. औदारिक वैक्रिय, अने आहारक. एम त्रण शरीरनां अंगोपांग त्रण छे.
 निर्माणनाम सर्वजीव शरीरनां अवयवनुं निष्पादक (वनावनार) होवाथी एक प्रकारे छे.
 बंधननाम औदारिक विगेरे कर्मवर्गणानुं एकपणुं करनार पांच प्रकारे छे, तथ संघातनाम औदारिक विगेरे कर्मवर्गणानी रचना विशेषकरीने स्थापनार ते पांच प्रकारे छे. संस्थाननाम समचतुरस्र (बधी बाजु सरखुं) विगेरे छ प्रकारे छे.
 संहनननाम वज्ररूपभनाराच विगेरे छ प्रकारे छे. स्पर्श आठ प्रकारे छे. रसपांच प्रकारे छे. गंध वे प्रकारे छे अने वर्ण पांच प्रकारे छे—
 अनुपूर्वी नारक विगेरे चार प्रकारे छे.
 विहायोगति प्रशस्त तथा अप्रशस्त एम वे भेदे छे. अगुरुलधु उपधात पराधात आतप उद्योत उच्छवास प्रत्येक साधारण त्रस स्थावर शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर दुःस्वर सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्याप्तक स्थिर अस्थिर आदेय अनादेय यश कीर्ति अयश कीर्तितीर्थकरनाम आ बधी प्रकृतिओ दरेक एकज प्रकारनी छे (आनु वधारे वर्णन पहेला कर्म ग्रंथमां नाम कर्मनी प्रकृतिमांजुओ)

सूत्रम्
॥२६५॥

आचार
॥२६६॥

गोत्र कर्म—ते उंच अने नीच एम वे भेदे छे.

अंतराय कर्म—दान, लाभ, भोग उपभोग, वीर्य एम पांचने अंतराय करनार पांच भेदे छे. आ प्रमाणे मूळ तथा उत्तर प्रकृति बंधनो भेद बताव्यो छे.
हवे प्रकृतिबंधना कारणो बतावे छे.

“ पडिणीयमंतराइय उवधाए तप्पओस णिपहवणे ॥ आवरणदुगं बन्धइ भूओ अज्ञासणाए य ॥ १ ॥

ज्ञानआवरणनुं तथा दर्शनआवरणनुं कर्म केम बांधे ते बतावे छे. ज्ञान भणनारनुं शत्रुपणुं करे, अंतराय करे उपधात करे, द्वेष करे भणावनारनो गुण भूले अथवा ज्ञानी अथवा ज्ञाननी आशातना (निंदा) करे ज्ञान दर्शन ए वने प्रकारनुं आवरण बंधाय छे.
भूयाणुकंपवयजोगउज्जुओ खंतिदाणगुरुभन्तो । बंधइ भूओ सायं विवरीए बंधई इयरं ॥ २ ॥

जीवोनी दया व्रतयोगमां उद्यम करे क्षमा राखे दान आपे सद्गुरुनो भक्त होय आवो जीव सातावेदनीय कर्म बांधे, अने तेनाथी उलटो एटले जीव हिंसा करनार विगेरे दुर्गुणवालो जीव असातावेदनीयकर्म बांधे.

अरहंतसिद्धचेइयतव सुअगुरुसाधुसंघपडिणीओ । बन्धइ दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेणं ॥ ३ ॥

तीर्थकर सिद्ध चैत्य, तप, श्रुत, गुरु, साधु, संग आजे धर्मना पोषको छे तेमनो प्रत्यनीक (शत्रु) थाय तो ते पापबडे दर्शन मोहनीयकर्म अने अनंत संसार भ्रमणनुं कर्म बांधे.

तिव्वकसाओ बहुमोह परिणतो रागदोससंजुत्तो । बंधइ चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघाई ॥ ४ ॥

सुत्रम्

॥२६६॥

आचार
॥२६७॥

तीव्र कषायवालो (घणो क्रोधी विगेरे) वहु मोहवालो रागद्वेषथी भरेलो ते जीव बने प्रकारनो चारित्र मोह जे चारित्र गु-
णनो धातक छे तेने बांधे छे.

मिच्छदिट्ठी महारंभपरिग्रहो तिवलोभ णिस्तीलो । निरआउयं निबंधइ पावमतो रोहपरिणामो ॥ ५ ॥

मिथ्यादृष्टि महान आरंभ परिग्रहवालो, घणो लोभीनिःशील, (दुराचारी.) जीव पापनी बुद्धिवालो होवाथी तथा मनमां रौद्र
(दुष्ट) परिणामवालो होवाथी नरकनुं आयुष्य बांधे छे—

उस्मगगदेसओ मगगणासओ गूढहियय माइल्लो । सदसीलो, अ ससल्लो, तिरिआउं बंधई जीवो ॥ ६ ॥

उन्मार्ग (कुमार्ग) मां दोरनार मुमार्गनो नाशक गूढ हृदयवालो, कपटी शठता करनारो, शल्यवालो ते जीव तिर्यचनुं आयुष्य बांधे छे.
पगतीए तणुकसाओ दरणरओ सीलसंजमविहूणो । मज्जिमगुणेहिं जुत्तो, मणुयाउं बन्धई जीवो ॥ ७ ॥

स्वभावथीज क्रोधादि ओछा होय, दानमां रक्त होय, शील संयममा ओछाशवालो होय, मध्यम गुणे करीने युक्त होय, ते
जीव मनुष्यनुं आयुष्य बांधे छे.

अणुवयमहवएहि य बालतबोऽकामनिजराए य । देवाउयं णिबंधइ, सम्मदिट्ठी उ जो जीवो ॥ ८ ॥

अणुवत, महावत, पाळे. तथा बाळ तप करे—अकामनिर्जरा करे अने सम्यक् दृष्टि होय. ते जीव देवनुं आयुष्य बांधे छे—

सूत्रम्

॥२६७॥

आचा० ॥२६८॥

मणवयणकायवंको माइलो गारवेहिं पडिबद्धो । असुभं बंधइ नामं तप्पडिपक्खेहिं सुभनामं ॥ ९ ॥

मन वचन कायाथी बक्र होय, अहंकारमां चढेलो होय. आ दुर्गुणोथी अशुभनामकर्म बांधे छे, अने तेनाथी उलटो एट्ले मन वचन कायाथी सरळ होय, निष्कपट होय; एवा सद्गुणवालो शुभनाम कर्म बांधे छे.

अरिहंतादिसु भक्तो सुतरुई पयणुमाण गुणपेही । बन्धइ उच्चागोयं त्रिवरीए बन्धई इयरं ॥ १० ॥

जिनेश्वर विगेरे पंच परमेष्ठिनो भक्त होय; सूत्र भणवानी रुचीवालो होय; अहंकारी न होय; गुणोनो रागी होय; ते उंच गोत्र बांधे छे. अने तेनाथी उलटा गुण (दुर्गुणवालो) नीच गोत्र बांधे छे.

पाणवहादीसु रतो, जिणपूयामोकखमग्गविघ्ययरो । अज्जेइ अंतरायं, ण लहइ जेणिच्छयं लाभं ॥ ११ ॥

प्राणवध (जीवहिंसा) विगेरे पापमां रक्त जिनेश्वरनी पूजा तथा मोक्षमार्गनां जे कृत्य तेमां विघ्न करनारो होय; ते अंतराय कर्म बांधे छे, अने ते कर्मना प्रतापथी इच्छित वस्तु मेलवतो नर्थी.

स्थितिवन्ध—मूळ अने उत्तर प्रकृतिओनो उत्कृष्ट अने जघन्य (सौथी थोडो) एवा बे भेद छे, तेमां उत्कृष्टथी मूळ प्रकृति ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय वेदनीय अंतराय ए चार कर्मनी ३३ कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. अने जेटली कोडाकोडी स्थिति होय; तेटला सेंकडा वर्षों सुधी अवाधा होय; त्यारपछी प्रदेशथी अथवा विपाकथी कर्मनो अनुभव (भोगवबुं) थाय ए प्रमाणे दरेक कर्मनी स्थितिमां जाणवुं.

सूत्रम्

॥२६९॥

आचार

॥२६९॥

मोहनीयकर्मनी ७० कोडाकोडी सागरोपम छे, नाम अने गोत्रनी २० कोडाकोडी सागरोपम छे, आयुष्यकर्मनी फक्त ३३ सागरोपमनी छे, तेमां पूर्वकोडीनो त्रीजो भाग अवाधा काळ छे.

हवे जघन्यथी कहे छे—ज्ञानदर्शननां, आवरण, मोहनीय, अंतराय, ए चार कर्मना जघन्यबन्धनी स्थिति अंतर्मुहूर्तनी छे. नाम-गोत्रनी आठ मुहूर्तनी छे वेदनीयकर्मनी १२, अने आयुष्यनी जे सौथी भुल्लक (नानो) भव छे—ते निरोगी मनुष्यना श्वासोश्वासना काळना लगभग १७मे भागे छे. (युवान माणसना एक श्वासोश्वासमां निगोदना जीवना १७ भव लगभग थाय छे.) हवे बन्ने उत्कृष्ट जघन्य बन्धने उत्तर प्रकृति आश्रयी कहे छे.

मति श्रुत अवधि मनःपर्याय केवळ आवरण निद्रा पंचक चक्षु दर्शन विगेरे चतुष्क असाता वेदनीय तथा दान अंतराय विगेरे पांच आ वधीनी एटले २० उत्तर प्रकृतिनी ३० कोडाकोडी सागरोपम छे. स्त्रीवेद साता वेदनीय मनुष्य गति तथा अनुपुर्वी ए चार प्रकृतिनी १५ कोडाकोडी सागरोपम छे.

मिथ्यात्व मोहनीयनी ७०नी छे. अने १६ कषायनी ४० कोडाकोडी सागरोपम छे.

(१) नपुंशक वेद (२) अरति (३) शोक (४) भय (५) जुगुप्सा (६) नरक (७) तिर्यच ए बे गति तथा (८) एकेन्द्रिय (९) पंचेन्द्रिय जाति (१०) औदारिक (११) वैक्रिय शरीर तथा ते (१२-१३) बन्नेनां अंगोपांग तथा (१४) तैजस (१५) कार्मण (१६) हुंडक संस्थान (१७) छेल्लुं संहनन (१८) वर्ण, (१९) गंध (२०) रस. (२१) स्पर्श. (२२) नरक. (२३) तिर्यच अनुपुर्वी (२४)

सुत्रम्

॥२६९॥

आचार
॥२७०॥

अगुरुलघु(२५) उपघात [२६] पराघात [२७] उच्छवास [२८] आतप [२९] उद्योत. [३०] अप्रशस्त विहायोगति [३१] त्रस [३२] स्थावर [३३] वादर [३४] पर्याप्तक [३५] प्रत्येक [३६] अस्थिर [३७] अशुभ. [३८] दुर्भग. [३९] दुःस्वर. [४०] अनादेय (४१) अयश कीर्ति,(४२) निर्माण. (४३) नीच गोत्र. ए प्रमाणे ४३ प्रकृतिनी २० कोडाकोडी सागरोपम छे.

(१) पुंवेद. (२) हास्य (३) रति (४) देवगति तथा (५) अनुपूर्वी ए वे तथा. ६, पहेलुं संस्थान ७, संहनन ८, प्रशस्त विहायोगति ९, स्थिर १०, शुभ. ११, सुभग १२, सुस्वर १३, आदेय १४, यश कीर्ति १५, उंच गोत्र ए १५ उत्तर प्रकृतिनी १० कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. न्यग्रोध संस्थान बीजुं संहनन ए बेनी १२ कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे.

त्रीजुं संस्थान नाराच संहनन ए बनेनी १४ तथा कुब्ज संस्थान अर्धनाराच संहनननी १६ तथा १, वामन संस्थान २, कीलिका संहनन तथा ३, वे ४, त्रण ५, चार इन्द्रि जाति तथा ६, सूक्ष्म ७, अपर्याप्तक ८, साधारण ए ८ प्रकृतिनी १८, तथा आहारक शरीर तथा अंगोपांग तथा तीर्थकर नाम ए त्रणनी एक कोडाकोडी सागरोपम स्थिति छे. अने ते द्रेकनी अबाधा भिन्न अंतर्मुहुर्त्त काळनी छे. देव नारकिनुं आयुष्य ३३ सागरोपम छे अने तीर्थच मनुष्यनुं आयुष्य त्रण पल्योपम छे. अने पूर्व कोडीनो त्रीजो भाग अबाधा छे. आ प्रमाणे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध कहो.

हवे जघन्य स्थितिवन्ध कहे छे—मति विगेरे ५ तथा चक्षु दर्शन आवरण विगेरे ४, संज्वलन लोभ दानादिक अंतराय पंचक ए १५ प्रकृतिनो अंतर्मुहुर्त्त स्थिति बन्ध छे. अने अबाधा पण अंतर्मुहुर्त छे.

सूत्रम्

॥२७०॥

आचारो

॥२७१॥

निदा पंचक तथा असाता वेदनिय ए छनुं एक सागरोपमना सातमा भागना त्रण लेवा १५-) तें सागरोपमथी पल्योपमनो असंख्येय भाग ओछो लेवो.

साता वेदनीयनो काळ १२ मुहुर्त्त छे, अने अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे. तथा मिथ्यात्वनी सागरोपममां पल्योपमथी असंख्येय भाग ओछो लेवो.

पहेला १२ कषाय ते सागरोपमना न लेवा अने पल्योपमथी असंख्येय भाग ओछो लेवो.

संज्वलन क्रोधनी बे मास छे. माननी एक मास, मायानी अडधो मास; पुंवेदनी आठ वर्ष स्थिति छे. आ बधामां अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे.

बाकीना कवाय मनुष्य तिर्यच गति पञ्चेन्द्रिय जाति औदारिक तथा तेनां अंगोपांग तथा तैजस कार्मण छ संस्थान तथा संहन वर्ण, गंध, रस. स्पर्श, तिर्यच, मनुष्य, अनुपूर्वी, अगुस्तुघु, उपघात, पराघात, उच्छ्वास आतप उद्योत, प्रशस्त, अप्रशस्त विहायोगति, यशः कीर्ति. छोटीने त्रस आदि २० प्रकृति निर्माण नीचगोत्र देवगति अनुपूर्वी. मळीने २ तथा नरकगति अनुपूर्वी. २ वैक्रिय शरीर तथा अंगोपांग एम ६८ उत्तर प्रकृतिनी स्थिति न सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्येय भाग ओछो छे. तेमां अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे. वैक्रिय पट्टकनी हजार सागरोपमना न भाग लेवा. तेमां पल्योपमनो असंख्येय भाग ओछो छे. तेमां अंतर्मुहूर्त्तनी अबाधा छे. आहारक शरीर तेनुं अंगोपांग तथा तीर्थकर नामनी सागरोपम कोटीकोटी स्थिति छे. भिन्न अन्तर्मुहूर्त्त अबाधा छे.

प्रश्न—उत्कृष्ट पण एटलीज स्थिति कही त्यारे जघन्य साथे तो थुं भेद छे ?

सूत्रम्

॥२७१॥

आचारो
॥२७२॥

उत्तर—उत्कृष्टी संख्येय, गुणहीन जघन्य छे. यश, कीर्ति तथा उंच गोत्र ए बनेनी स्थिति आठ मुहुर्त्त छे. अने अन्तमुहुर्त्तनी अवाधा छे. देव अने नारकिनुं आयुष्य. दशहजार वर्षनुं छे. अने अंतमुहुर्त्तनी अवाधा छे. तिर्यंच मनुष्यना आयुष्यनी स्थिति, शुल्क भव अने अंतमुहुर्त्तनी अवाधा छे. बन्धन, संघात, ए बनेनी औदारिक विगेरे शरीरनी साथे रहेवाथी तेनी अंदरज उत्कृष्ट जघन्य भेद जाणवो स्थितिबन्ध कहो

हवे अनुभव बन्ध कहे छे—तेमां शुभ, अशुभ, प्रयोग कर्मथी उत्पन्न थएल प्रकृति, स्थिति, अने प्रदेशरूप, कर्म प्रकृतिनुं तीव्र मंद अनुभवपणे जे अनुभवाय (भोगवाय) ते अनुभव (रस) छे, ते रस एक बे त्रण चार स्थान भेद वडे जाणवो.

तेमां अशुभ प्रकृतिनुं कोषातकी ना उकाळेला रस जेवो तेमां अडधो रहे. त्रीजो भाग रहे ते अनुक्रमे तीव्र अनुभव जाणवो. [कडवा पदार्थना रसने उकाळतां पाणी जेम ओलुं रहे तेम कडवास वधारे थाय छे, तेम अशुभ कर्मनुं दल जेम वधारे चीकणुं थाय तेम वधारे दुःख भोगववुं पडे छे.]

हवे मंद अनुभव कहे छे—मंद रसनो अनुभव ते जाइ [फुल] रसमां एक बे त्रण चारगणुं पाणी वधारे नाखवाथी रसनी मुगंधो ओछी थइ जाय छे, ते प्रमाणे कर्मनी पण चीकणास ओछी होय तो ओलुं दुःख भोगववुं पडे छे.

शुभ प्रकृतिनो रस दुध तथा शेरडीना रस जेवो मीठो जाणवो. तेमां पण पूर्व माफक योजना करवी, एटले कोषातकी तथा शेरडीना रसमां पाणीनुं एक बिंदु विगेरे नाखवाथी अथवा रस वधारे नाखवाथी तेना भेदोन्तु अनंतपणुं जाणवुं. अहीं आयुष्यमां

सूत्रम्

॥२७२॥

आचा०

॥२७३॥

चार प्रकृतिओ भवविपाकिनी छे. (ते भवमां गया पछी भोगवाय छे. तथा चार अनुपूर्वीओ क्षेत्रविपाकिनी छे.) ते क्षेत्रोमां जतां उदयमां आवे छे.

शरीर, संस्थान, अंगोपांग, संघात, संहनन, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उद्योत, आतप, निर्माण, प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ तथा अशुभ रूपवाली छे, ते बधीए पुद्गलविपाकिनी छे, अने बाकीनी ज्ञान आवरण विगेरे जीवविपाकिनी छे, एम अनुभाव बंध कहो.

हवे प्रदेशबंध कहे छे—ते एक प्रकार विगेरे बंधकनी अक्षेपाए थाय छे, तेमां कोइ एक प्रकारे कर्म बांधे, ते वखते प्रयोग कर्म बडे एक समयमां ग्रहण करेला पुद्गलो सातावेदनीयना भावबडे विशेष करीने परिणमे छे, पण छ प्रकारानुं कर्म बांधनारने आयुष्य तथा मोहनीयकर्म छोडीने छ कर्मनो बंध जाणवो; तथा सात प्रकारे बांधनारने आयुष्य छोडीने सात प्रकारे जाणवो; तथा आठ प्रकारानां कर्म बांधनारो ते आठ प्रकारे जाणवो; तेमां पहेला समयमां ग्रहण करेलां पुद्गलो समुदानबडे, बीजा विगेरे समयमां अल्प बहुप्रदेशपणे आ कर्मबडे स्थापे छे.

तेमां आयुष्यनां थोडां पुद्गलो छे, तेथी विशेष अधिकनाम गोत्रना प्रत्येकना छे, ते बंने (बराबर) तुल्य छे, तेथी विशेष अधिक ज्ञानदर्शन—आवरणना तथा अंतरायना देरेकना छे, तेथी विशेष अधिक मोहनीयकर्मना छे.

प्रभः—तेथी विशेष अधिक एम निर्दारणमां पांचमी विभक्ति छे, ते पा. २-३ ४२ सूत्र प्रमाणे कराय छे, एट्छे एनो अर्थ

सूत्रम्

॥२७३॥

आचार्य
॥२७४॥

एवो छे के, विभाग ते विभक्ति तेमां पांचमी विभक्ति लेतां; जेमां अत्यंत विभाग होय; तेमांज थाय छे. जेमके मथुरा नगरीना रहेवासीथी पाटलीपुत्रना रहेवासी वधारे रूपवाळा छे, पण अहीं कर्म पुद्गळोनुं सदा एकपणुं छे, ते प्रमाणे अवस्थाओनुंज बुद्धि प्रमाणे बहुप्रदेश विगेरेना गुणवडे प्रथक् करवानुं वताच्युं; तेमां छट्ठी अथवा सातमी विभक्ति वापरवी ठीक छे. जेमके गायोना अथवा गायोमां आ काळी गाय वधारे दुधवाळी छे.

उत्तरः—तमे वतावेलो दोष बराबर नथी. जेमां अवधि (मर्यादा) अने अवधिवाळो सामान्यवाचक शब्द योजीए, त्यां छट्ठी सातमी विभक्ति होय छे, अने ज्यां निर्द्धारण पा. २-३-४१ आ सुत्रवडे कराय छे. जेम गायोमां काळी गाय सौथी वधारे दुधवाळी छे. मनुष्यमां पटनाना रहेवाशी वधारे पैसादार छे. तेम कर्मवर्गणाना पुद्गळो वेदनीयकर्ममां बहु वधारे छे, पण जेमां विशेष वाचीशब्द अवधिपणे लङ्घ त्यां पांचमी विभक्तिज वपराय जेमके—खंड, मुंड, शबल, शावलेय, धबल धावलेय आ व्यक्तिओथी काळी गाय वधारे दुधवाळी छे. अहींआं तेवो विभाग पोते कारण नथी अथवा विभाग विना छे. जेथी मथुरा पाटलीपुत्रकादि विभाग वडे विभक्तोनुं सामान्य मनुष्य विगेरे शब्द उच्चारणमां छट्ठी सातमी विभक्ति थाय छे. पण ज्यां मथुराना रहेवासी विगेरेमां कांइ पण विशेष अवधिपणे लेवाय तेमां कार्यवशथी एक स्थानमां पण पांचमी विभक्तिज लेवाय, तेज प्रमाणे अहींआं कर्मवर्गणाना एकपणामां तेना विशेषना अवधिपणे उपादान करवाथी पांचमीज विभक्त योग्य छे. तेथी विशेष अधिक वेदनीयमां छे. आ प्रमाणे प्रदेशबंध कहो. तथा समुदान कर्म पण कद्युं.

सुत्रम्

॥२७४॥

આચાર
॥૨૭૫॥

હવે ઇર્યાપથિક કહે છે—ઝર, ધાતુનો અર્થ ગતિ અને પ્રેરણ છે. અને ભાવમાં ય પ્રત્યય લાગવાથી સ્વીલિંગે ઇર્યા શબ્દ થાય છે, તેનોપંથ તે ઇર્યા પંથ છે તેનો આશ્રય થાય તે ઇર્યાપથિક જાણવી. પ્રશ્ન—ઇર્યાનો રંથ ક્યો છે ! કે જેને આશ્રયી પથિકી થાય છે ?
ઉત્તર—આ વ્યુત્પત્તિ (ઉત્પન્ન થવાને) નિમિત્ત છે કારણ કે તે ઉભા રહેનારને પણ થાય છે. પણ પ્રવૃત્તિ નિમિત્ત તો સ્થિતિનો અભાવ છે, અને તે ઉપશાંત ક્ષીણમોહ તથા સયોગીકેવળીને હોય છે કારણ કે સયોગીકેવળીઓ બેઠેલા હોય તો પણ નિશ્ચયથી સૂક્ષ્મ ગોત્રના સંચારવાલા હોય છે.

“કેવલી ણં ભંતે ! અસ્સિં સમયંસિ જેસુ આગાસપદેસેસુ હત્થં વા પાયં વા ઓગાહિત્તા ણં પડિસા-
હરેજા, પભૂ ણં ભંતે ! કેવલી તેસુ ચેવાગાસપદેસેસુ પડિસાહરિત્તએ ? ણો ઇણટે સમટે, કહં ?, કે-
વલિસ્સણં ચલાંદું સરીરોવગરણાંદું ભવંતિ, ચલોવગરણત્તાએ કેવલી ણો સંચાએતિ તેસુ ચેવાગા સ-
પદેસેસુ હત્થં વા પાયં વા પડિસાહરિત્તએ”

પ્રશ્ન—હે ભગવંત ? જે સમયમાં કેવળજ્ઞાનીએ જે આકાશ પ્રદેશોમાં હાથ અથવા પગ પહેલાં મુકીને પાછો તે જગ્યાએ લડ શકે ?

ઉત્તર—હે ગૌતમ. તે સમર્થ નથી. પ્રશ્ન—જા માટે. ? ઉત્તર—કેવલજ્ઞાનીના પોતાનાશરીરના ભાગો ચલાયમાન હોય છે, તેથી કરીને જે ભાગમાં પ્રથમ હાથ પગ મૂક્યા હોય ત્યાંથી પાછા લેતાં સહેજસાજ વાંકું થિ જાય. એટલે થોડો ફેર પડી જાય.

આપ્રમાણે વધારે સૂક્ષ્મ શરીરના સંચારરૂપ યોગવડે જે કર્મ બંધાય તે ઇર્યામાં થએલ હોવાથી ઇર્યાપથિક છે. કારણકે તેમાં

સૂત્રમ

॥૨૭૫॥

आचा०

॥२७६॥

गतिनोज हेतु छे, अने ते बे समयनो छे एटले पहेला समयमां वांधे अने बीजा समयमां भोगवे अने ते कर्मनी अपेक्षाए त्रीजा स-
मयमां अकर्मता थाय छे.

प्रश्न—कवी रीते ? उत्तर—जे प्रकृतिथी सातावेदनीय छे, ते कषाय विनानुं छे, अने तेथी स्थितिनो अभाव छे, तेथी बंधा-
वानी साथे खरी पडे छे, अनुभावथी अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थएल देवता अतिशय सुखने भोगवे, ते प्रदेशथी स्थुल लुख्खा
धोळा विगेरे बहु प्रदेशवाला छे. कहुं छे के—

अप्पं बायरमउयं बहुं च लुक्खं च सूक्षिकलं चेव । मंदं महव्वतंतिय साताबहुलं च तं कम्मं ॥ १ ॥

स्थितिथी अल्प छे, कारण के त्यां स्थितिनो अभाव छे, परिणामथी बादर छे, अने अनुभावथी मृदु (कोमळ) अनुभाव छे,
प्रदेशथी बहु छे, अने स्पर्शथी लुख्खुं छे, वर्णथी शुक (धोळुं) छे लेपथी मंद छे जेमके करकरी भूकीनी मुठी भरीने पालीस
करेली भीत उपर नाखतां जेम अल्प (नहीं जेवो) लेप थाय, तेम महाव्यये करेलुं ते एक समयमांज बधुं दूर थइ जाय छे, साता-
वेदनीना घणापणाथी अनुत्तर विमानना देवतानुं सुखनुं घणापणुं छे (सुख भोगववा छतां तेमने अल्पमोहथी नवां अशुभ कर्म वं-
धातां नथी) इर्यापथिक कहुं.

हवे आधा कर्म कहे छे—जे निमित्तने आश्रयी पूर्वे कहेला आठे प्रकारना कर्म बन्धाय; ते आधाकर्म छे, अने ते शब्द, स्पर्श,
रस, रूप, अने गंध विगेरे छे, जेमके शब्द विगेरे काम गुणना विषयनो रसीयो सुखनी इच्छाथी मोहमां जेनी बुद्धि इणाइ गइ छे,

सूत्रम्

॥२७६॥

आचारा०
॥२७७॥

एवो जीव खरीरीते ते विषयोमां सुख नथी, छतां तेमां सुखनो खोटो आरोप करीने तेने भोगवे छे, तेथी कहुँ छे:—
 “दुःखात्मकेषु विषयेषु सुखाभिमानः, सौख्यात्मकेषु नियमादिषु दुःख बुद्धिः । उत्कीर्णवर्णपदप-
 डिक्त रिबान्यरूपा, सारूप्यमेति विपरीतगति प्रयोगात् ॥ १ ॥” (वसंत तिलका)

दुःखरूप-विषयमां सुखनुं अभिमान करीने खरा सुखरूप नियम विगेरेमां जे मूर्ख माणस दुःखरूप माने छे, ते माणस कोत-
 रेला अक्षरपदनीश्रेणी माफक अन्यरूपे छतां ते रूपवाली विपरित गतिना प्रयोगथी तेने खरापणे माने छे. एनो भावार्थ आ छे के,
 कर्म निमित्तथी थयला मनोहर अथवा कठोर शब्द विगेरेज आधाकर्म छे (एट्ले रागद्रेष करवाई चीकणा कर्म बंधाय छे.)

हवे तपकर्म कहे छे—ते आठ प्रकारना कर्मने वांवेला स्पर्श थयेला निधन्त (मलीगयेला) निकाचित (पक्का जोडायेला) एवा
 एकरूपे थयला कर्मने पण निर्जरा करनार ए तप छे, ते बाह्य अने अभ्यंतर एम बे भेदे बार प्रकारे छे ते तपकर्म छे.

हवे कृतिकर्म कहे छे—तेज आठ कर्मने दुर करनार अहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय संबंधी नमस्कार विगेरे छे.

हवे भावकर्म कहे छे—अवाधाने उलुंघी पोताना उदयमां आवेलां; अथवा उदीरणा करवा वडे उदयमां लावेला जे पुद्गलो
 छे, ते प्रदेश तथा विपाकवडे भव, क्षेत्र, पुद्गल, जीवोमां अनुभाव करावे; ते भावकर्म शब्दना नामे ओळखाय छे. आ प्रभाणे
 नाम विगेरे दश प्रकारना निक्षेपावडे कर्मनी व्याख्या कही; पण अहींयां समुदान कर्मथी ग्रहण करेला आठ प्रकारना कर्मवडे अ-
 धिकार छे, ते नीचली अडधी गाथावडे बतावे छे.

सूत्रम्

॥२७७॥

आचार्य
॥२७८॥

अद्विहेण उ कम्मेण, एत्थ होइ अहीगारो ॥ १८४ ॥

आठ प्रकारना कर्मवडे अहीं अधिकार छे अने एज प्रमाणे सूत्र अनुगमवडे सूत्र बरोबर उच्चारतां निक्षेप निर्युक्ति अनुगमवडे दरेक पदमां नामादि निक्षेपा करीने व्याख्यान कर्यु. हवे ते उत्तरकाळना सूत्रनुं विवरण करे छे.

जे गुणे से मूलद्वाणे, जे मूलद्वाणे से गुणे । इति से गुणट्ठी महया परियावेण पुणो पुणो रसे पमत्ते पिया मे माया मे भज्ञा मे पुक्ता मे धुआ मे एहुसा मे सहिसयणसंगंथसंथुआ मे, बिवित्तुवगरण-परिवट्टणभोयणच्छायणं मे । इच्छत्थं गढ्हिए लोए अहो य राओ य परितप्पमाणे कालाकालसमुद्धाई, संजोगट्ठी अद्वीलोभोआलुंपेसहसाकारे, वेणिविड्वा चित्ते, एत्थ सत्थे पुणो, पुणो अप्यं च खलु आउयं इह मेगेसिंमाणवाणं तंजहा ॥ ६२ ॥

पूर्वना सूत्र साथे तथा ते अगाउना सूत्रो साथे ६२ मा सूत्रनो संबंध बताववो ते आ प्रमाणे छे, गया सूत्रमां कह्युं हतुं के:—“सेहुमुणि” इत्यादि. ते मुनि परिज्ञातकर्मां छे, जेने आ मूळ गुण विगेरे मळेला छे.

परंपर सूत्र संबंध आ प्रमाणे छे. ‘सेजं पुण’ विगेरे एटले जे पोतानी बुद्धिवडे अथवा तीर्थकरना उपदेशथी, अथवा तीर्थकर जिवाय बीजा आचार्य पासेथी सांभळीने जे जाणे; अने तेनो विचार करे; ते जे गुण छे, ते मूळ स्थान छे, एम बीजां सूत्रो साथे

सूत्रम्

॥२७८॥

आचार
॥२७९॥

संबंध छे, तथा पहेला सूत्र साथे आ संबंध छे. “सुयंमेआउसंतेण” इत्यादि में भगवान् पासे आ प्रमाणे सांभळ्युं विगेरे छे.

पश्च—में शुं सांभळ्युं ? उत्तर—जे गुणो सेमूल ठाणे इत्यादि जे गुजरातीमां सर्वनाम छे, ते एक वचनमां छे. ते एम सूचवे छे के जेनां वडे गुणाय भेदाय अथवा विशेष बतावे ते गुण छे अने अहीं ते शब्द, रूप, रस, गंध, अने स्पर्श, विगेरे छे, अने मूल एटले ते निमित्त कारण छे, अने प्रत्यय ते पर्यायो छे, ते जेमां रहे ते स्थान छे. मूलमां स्थान ते मूलस्थान छे, अने ते वाक्योनुं विवेचन करनार छे, तेथी ते न्याये जे शब्दादिक काम गुण छे, तेज संसाररूप चार गति नारक तिर्यच, मनुष्य, देवनुं मूल छे, ते मूल कारण कषायो छे, तेओनुं स्थान एटले आश्रय छे, ते आश्रय ज्यारे सुंदर अथवा कठोर शब्द विगेरे प्राप्त थाय त्यारे कषायनो उदय थाय छे अने तेथी संसार छे.

अथवा मूल ते कारण अने तेज आठ प्रकारनां कर्म छे तेनुं स्थान आश्रय ते काम गुण छे.

अथवा मूल ते मोहनीय कर्म अथवा तेनो भेद काम (संसारी इच्छा) छे, तेनुं स्थान शब्द विगेरे विषय गुण छे अथवा मूल ते शब्दादिक विषय गुण छे, तेनुं स्थान इष्टअनिष्ट विषय गुणना भेदवडे व्यवस्थामां रहेलो गुणरूप संसारज छे.

अथवा आत्मा पोते शब्दादि उपयोगथी एक पणे होवाथी ते गुण छे अथवा मूल ते संसारमां तेना स्थान रूपे शब्द विगेरे छे, अथवा कषायो छे, तथा गुण पण शब्दादिक अथवा कषायथी परिणत थएलो आत्मा संसारनुं मूल छे, तेनुं स्थान शब्दादिक छे, अने गुण पण तेज छे, तेथी बधी रीते सिद्ध थयुं के जे गुण तेज मूल स्थान छे.

सूत्रम्

॥२७९॥

आचारा०
॥२८०॥

प्रश्न—सूत्रमां वर्तन क्रियाने नथी लीधुं छनां शा माटे प्रक्षेप करो छो ?

उत्तर—ज्यां कोइ विशेष क्रिया लीधी न होय त्यां पण सामान्य क्रिया होय छे, तेथी पहेलांनी क्रियाने लळने वाक्य समाप्त कराय छे, ए प्रमाणे बीजे पण ज्यां साक्षात् क्रिया न लीधी होय त्यां पण पूर्वनी सामान्य लेवी अथवा मूळ ते आद्य (प्रथम) अथवा प्रधान छे, अने स्थान ते कारण छे, तेमां मूळ अने कारण ए वेनो कर्मधारय समाप्त करीए; तो एवो अर्थ थाय के जे शब्दादि गुण छे, तेज मूळ स्थान संसारनुं प्रधान कारण छे वाकी वधुं पूर्व माफक लेबुं. ते गुण अने मूळ स्थाननुं नियम्य (दोर ववा योग्य) तथा नियामकभाव बतावतां तेना तेना स्वीकारेला विषय कषाय विगेरेनां बीज अने अंकुरना न्यायवडे परस्पर कार्य-कारणभाव सूत्रवडेज बतावे छे, एटले संसारनुं मूळ अथवा कर्मनुं मूळ अथवा कषायोनुं स्थान आश्रय ते, शब्दादि गुण पण आज छे, अथवा कषाय मूळ शब्ददिक्नुं जे स्थान छे, ते कर्म संसार छे, अने ते ते स्वभावनी प्रासीथी गुण पण तेज छे, अथवा शब्दादिक कषाय परिणाम मूळ जे संसार अथवा कर्मनुं जे स्थान मोहनीयकर्म छे, ते शब्दादि कषायथी परिणामवालो आत्मा छे, तेना गुणनी प्रासीथी गुण पण तेज छे, अथवा संसारकषाय मूळ जे आत्मा, तेनुं स्थान विषयोनो अभिलाष ते पण शब्दादि विषयपणाथी गुणरूपज छे, अने अहींया विषयना लेवाथी विषयीना पण आक्षेपथी, अने सुचन मात्र करवाथी सूत्रबुंपण एम जाणबुं के, जे जीव गुणमां, अथवा गुणोमां वर्ते छे, ते मूळ स्थानमां अथवा मूळ स्थानोमां वर्ते छे, अने जे मूळस्थान विगेरेमां वर्ते छे, तेज गुणोमां वर्ते छे.

सूत्रम्
॥२८०॥

आचारो
॥२८१॥

जे जीव पूर्वे वर्णवेला शब्दादिक गुणोमां वर्ते; तेज संसार मूल कषाय आदि स्थान विगेरेमां वर्ते छे, अने तेज बीजा सूत्रनी अपेक्षावडे व्यत्यय करवाथी पूर्व माफक योजवुं; कारणके सूत्रनुं अनंतगम अने पर्यायपणुं छे.

वली आ पण जोवुं. जे गुण तेज मूल स्थान छे, अने जे मूल तेज गुण स्थान पण तेज छे अने जे स्थान तेज गुण अने मूल पण तेज छे.

आ प्रमाणे बीजा विकल्पोमां पण योजवुं अने विषयना निर्देश (बताववा) मां विषयी पण बतावी दीधो छे. जे गुणमां वर्ते छे. तेज मूलस्थानमां वर्ते छे. ते प्रमाणे वधे जाणवुं. अहीआं सर्वज्ञनुं कहेलुं होवाथी सूत्रनुं अनंत अर्थपणुं जाणवुं ते आ प्रमाणे छे.

अहीआं कषाय विगेरे मूल बताव्यु. अने क्रोध विगेरे चार कषायो छे. वली अनंतानुबंधी विगेरे चार भेदे क्रोध छे. अने अने अनंतानुबंधीनां असंख्ये लोकाकाश प्रदेश प्रमाण बंधना अध्यवसायनां स्थान जाणवां तथा तेओना पर्यायो पण अनंता छे. तेथी प्रत्येकने स्थान गुणना निरूपणवडे सूत्रनुं अनंत अर्थपणुं थाय छे. छद्मस्थ (केवल ज्ञानविनाना) जीवोने बधा आयुष्यमां पण ते मेळवी न शकाय तेथी अनंत पणाने लीधे समजाववाने पण अशक्य छे. पण एम अहीं आ दिशावडे थोडामां दिग्दर्शनरूपे बताव्यु छे. अने कुशाग्र (तिक्षण) बुद्धिवालाए गुण स्थानोनुं परस्पर कार्य कारण भाव विगेरेनी संयोजना करवी.

तेथी आ प्रमाणे जे गुण तेज मूलस्थान, अने जे मूलस्थान तेज गुण एम कहुं, तेथी शुं समजवुं ते कहे छे “इतिसे गुणठी” विगेरे अहीआं इति शब्द हेतुना अर्थमां छे. एटले जे शब्दादि गुणथी परीत. (व्याप्त) आत्मा छे ते कषायना मूल स्थानमां वर्ते छे. अने बधाए प्राणीओ गुणना प्रयोजनवाला छे. तथा गुणना रागी छे. तेथी गुणोनी प्राप्तिमां अथवा प्राप्त थइने नाश थतां

सूत्रम्

॥२८१॥

आचारो
॥२८२॥

इच्छा अने शोक वडे ते घणा परिताप वडे शरीर तथा मनना संबंधी दुःखवडे हारी जड़ने वारंवार ते ते स्थानमां उद्यम करे छे. अने त्यां प्रमत्त बने छे. अने प्रमाद छे ते रागद्वेषनुं स्वरूप छे. अने राग विना प्रायः द्वेष थतो नर्थी तथा राग पण उत्पत्तिशी मांडीने अनादि भवना अभ्यासथी माता पिता विगेरे संबंधी थाय छे. ते बतावे छे. कोइने “मायामे” एटले मासंबंधी राग संसारना स्वभावथी माताए उपकार करवाथी तेना उपर राग थाय छे. अने तेवो राग थतां मारी मा भूख तरसथी न पीडाओ तेटला माटे तेनो दिकरो खेती, वेपार, नोकरी विगेरे बीजा जीवोने दुःख आपनारी क्रिया आरंभे छे, अथवा तेनो उपवात करवा वाली ते क्रियामां वर्ततां अथवा माता विगेरे अकार्यमां प्रवर्ततां द्वेष थाय छे. ते आ प्रमाणे छे.

जेमके. ‘जमदग्नि’ रूपिनी स्त्री रेणुकामां अनंत वीर्य राजानो दुराचार जोइ परशुरामने द्वेष थयो (अने परस्पर महान अनर्थ कर्यो)

एज प्रमाणे कोइने मनमां थायके आ मारो पिता छे. तेथी तेने ते संबंधी रागद्वेष थयो छे. जेमके तेज परशुरामने बाप उपर प्रेम होवाथी तेने हणनार उपर द्वेष लावीने सातवार क्षत्रियोने मारी नाख्या.

अने तेथी क्षत्रीय पुत्र सभूष चक्रवर्तिए. एकवीस वार ब्राह्मणोने मार्या

कोइ प्राणी बेनना माटे कलेश पामे छे. कोइ स्त्री माटे रागद्वेष करे छे, जेमके चाणाक्य नामना ब्राह्मणे बेन तथा बनेवी विगेरेए पोतानी स्त्रीनुं करेलुं अपमान सांभली तेनी प्रेरणाथी “नंदराजा” पासे द्रव्य माटे जतां नंदराजाए तेनुं अपमान कर्युं तेथी चाणाक्ये क्रोधमां आवी नंदनुं कुळ क्षय करी नाख्युं, (चाणाक्यनी स्त्री तेना बनेवीने त्यां गयेलो त्यां गरीबीथी तेनुं अपमान थयुं,

सूत्रम्

॥२८२॥

आचारा०

॥२८३॥

स्त्रीए पोताना पति चाणाक्यने वात करी. तेथी धन लेवा नंदराजा पासे गयो त्यां धनने बदले अपमान मळयुं तेथी चाणाक्ये नं-
दराजाना कुलनो नाश कर्यो.)

कोइ विचारे छे के मारे पुत्रो जीवता नथी. ते जीवाडवा बीजा आरंभो करे छे, कोइ प्राणी मारी दीकरी दुःखी छे, एवा राग
अथवा द्वेषथी घेला जेवो बनी परमार्थने न जाणतो एवां एवां कृत्यो करे छे के जेनावडे आलोक परलोकमां नवां दुःखोने भोगवे छे.

जेमके “जरासंध” नामनो प्रतिवासुदेव. पोताना जमाइ कंसना मरणथी पोताना लक्षकरना अहंकारथी कंसने मारनार “वासुदेव”
(कृष्ण.) ना उपर कोप करीने तेना पाल्छ जड्ने लडाइ करतां सेना साथे नाश पाम्यो.

कोइ तो मारी पुत्रवधु जीवती नथी, तेयी आरंभ विगेरेमां वर्ते छे. कोइ मित्र माटे, कोइ स्वजन. (काका, दिकरा के साळा)
माटे क्लेश करे छे. के ए मारा बारंबार परिचयमां आवेला छे. अथवा पूर्वे मारा माता पिता उपकारी हता अने पाल्छथी साळा विगेरे
उपकारी हता ते अत्यारे दुःखी छे. एम प्राणीओ कोइना कंझण निमित्ते शोक करे छे. अथवा जुदां जुदां शोभायमान अथवा धणा हाथी
घोडा रथ, आसन, पलंग विगेरे जे उपकरणो छे तेनाथी बमणा, तमणा विगेरे वधारे राखीने बदले छे. तथा भोजन (लाङु विगेरे)
आच्छादन (पट्ट युगम विगेरे वस्त्र मने मळशे, अथवा मारां नाश थयां एम रागद्वेष करे छे आ प्रमाणे प्राणीओ चेतन वस्तुमां गृध्य
बनीने पूर्वे कहेला माता पिताविगेरेना रागथी आखी जींदगी सूधी प्रमादि रहे छे एटले ए मारां छे. अथवा हुं आ परिवारनो रक्षक
हुं, पोषण करनारो हुं एम ममता करीने मोहीत मनवालो थाय छे.

सूत्रम्

॥२८३॥

आचा०
॥२८४॥

“ पुत्रा मे, भ्राता मे, स्वजना मे, गृहकलत्रवर्गों मे । इति कृतमेमेशब्दं, पशुमिव मृत्युर्जनं हरति ॥१॥

मारा पुत्रो मारा भाइओ, मारां सगां मारांघर, तथा स्त्री समुदाय छे. आबुं पशुनी माफक मे मे ‘बोलता माणसने मृत्यु हरी जाय छे. पुत्रकलत्रपरिग्रहममत्वदोषैर्नरो ब्रजति नाशम् । कृमिक इव कोशकारः परिग्रहादुःखमाप्नोति ॥ २ ॥

पुत्र, स्त्रीनुं परणबुं तेथी तथा उपर ममता राखवी ए दोषोथी माणस नाश पामे छे जेमके कोशेटानो बनावनार कृमि (रेशमनो) कीडो कोशेटाना दुःखथी मरण पामे छे तेम संसारी मनुष्य स्त्रीपुत्रनी चिंतामां रीबी रीबीने परे छे. आज सूत्र अर्थने मळतुं निर्युक्तिकार वे गाथा बडे कहे छे.

संसारं छेत्तुमणो कम्मं, उम्मूलए तदद्वाए । उम्मूलिज्ज कसाया, तम्हा उ चड्ज सयणाई ॥१८५॥

नरक विगेरे चार गतिरूप संसार, अथवा माता, पिता, स्त्री विगेरे उपर प्रेम छे. ते संसार छे तेने जडमूळथी छेदवानी इच्छा वालो कर्मने मूळथी उखेडी नाखे तेटला माटे कर्मोनुं मूळ कषायो छे, तेने दूर करे.

माया मेत्ति पिया मे, भगिणी भाया य पुत्तदारा मे । अत्थंमि चैव गिद्वा, जम्मणमरणाणि पावंति॥१८६॥

अने ते दूर करवा माटे पूर्वे बताव्या प्रमाणे माता पिता विगेरेनो स्नेह छोडी दे. जो न छोडेतो माता पिता विगेरेनो संयोगना अभिलाषीओ तेमना सुख माटे रत्नकुपी (रसकुपी जेना बडे सोनुं बने छे ते) ना माटे गृध्य बनीने तेमां अनेक पाप करतां जन्म जरा अने मरण विगेरेना दुःखोने भोगवे छे ए प्रमाणे कषाय अने इन्द्रियोमां प्रमादि थएलो माता पिता विगेरे माटे धन

सूत्रम्

॥२८४॥

आचार
॥२८५॥

मेलववा तथा मेलवेलानुं रक्षण करवा फक्त दुःखनेज भोगवे छे, तेज मूल सूत्रोमां बताव्युं छे के अहो (दिवस) राओ (रात) मां, अने सूत्रोमां “च” शब्द छे तेथी पक्षमासमां सारा धर्मना विचारो छोडीने बधी रीते चिन्तामां बढतो रहे छे जेमके—
“ कइया वच्चइ सत्थो? किं भण्डं कत्थ कित्तिया भूमी । को कयविक्कयकालो, निविसइ किं कहिं केण? ॥१॥

क्यारे आ सार्थ (वेपारीओनो समूह) उपडशे ? शुं माल छे ? केटले दूर जबुं छे तथा लेवा वेचवाने कयो काळ छे अथवा क्युं कयां कोना वडे आ चोकहुं बेसशे ? (कार्य सिद्धि थशे) विगेरे चिन्तामां बढतो रहे छे अने ते चिन्ताग्रस्त केवो थाय छे. ते कहे छे.

काळ (योग्य समय) अकाळ (अयोग्य समय) मां उठीने एटले दिवसमां जे करवानुं होय ते काम रातना करे अथवा प्रभातनुं काम सांजना करे विगेरे अथवा काळ अकाळ ए वंनेमां करे अथवा अवसरमां न करे, तेम बीजा वर्खतमां ए न करे, जेम कोइ धन विगेरेनी हानी थतां गांडो बनी गमे तेम करे पण तेने काळ अकाळनो विवेक नथी एम जाणबुं.

जेमके “चंडप्रधोत ” नामना राजाए मृगावती नामनी राणी, जेनो पति “ शतानिक ” राजा मरण पामेलो छे. तेना कहेवाथी मोहीत थइने जे काळे किल्लो लेवानो छे ते काळे न लेतां किल्ला विगेरे नवा सुधरावीने लेवानी इच्छ करी (पण लइ शवयो नहि.)

पण जे योग्य काळे क्रिया करे छे. ते बाधा रहीत बधी क्रिया करे छे. कहुं छे के—

“मासैरष्टभिरहा च, पूर्वेण वयसाऽयुषा । तत् कर्तव्यं मनुष्येण, येनान्ते सुखमेधते ॥ ५ ॥”

आठ मास तथा दिवसे तथा जुवानीमां पहेला आयुष्यमां माणसे कृत्य करी लेबुं एटले बार मासमां चोमासाना चारमासमां

सूत्रम्

॥२८५॥

आचारा०

॥२८६॥

पाणी कादव विगेरेनां दुःख न भोगववां पडे माटे कमावुं के संग्रह करवो, ते आठ मासमां करवो, तथा रातना अंधारामां खराब माल न आवे स्वपरनी हिंस। न थाय माटे दरेक कार्य दिवसना करवुं तथा पहेली अवस्थामां विद्या भणी धनउपार्जन करवुं तथा युवानीमां धर्म साधवो के जेथी पाछली शृद्धावस्थामां दुःख भोगववुं न पडे अने सुख मेळवे।

जेम मृत्युने आवतां अकाळ नडतो नथी तेम धर्मनुं अनुष्ठान करतां पण अकाळ नडतो नथी, त्यारे शा माटे काळ अकाळनो समुत्थायी थाय छे. ए माटे कहे छे. संजोगने माटे अर्थात् जेने प्रयोजन छे, ते तेने माटे करे छे. धन धान्य, सोनुं वे पगवालां दास दासी अने चार पगवालां घोडा विगेरे तथा राज्य ख्ती विगेरेनो संसारमां अमुक अमुक कारणे संयोग थाय छे. तेने माटे अथवा तो शब्दादि विषय तेनो संयोग अथवा माता पिता विगेरेना संयोगवडे तेने माटे संसारी जीवो काळमां अथवा अकाळमां काम करनारा थाय छे।

कोइ अर्थ एटले रत्नकुपि विगेरे अथवा कोइ अत्यंत लोभने लीधे स्वार्थी बनी काळ अकाळ जोया विना ममण शेठ माफक करवा मंडे छे. ते ममण शेठनुं द्रष्टांत कहे छे आ शेठे अतिशय धन छतां युवावस्थामां (सुख भोगववुं छोडीने) जळ स्थळने मार्गे जुदा जुदा देशोमां माल भरीने वहाण गाढां उंटनी मंडली विगेरेना भारथी भरेलां मोकलीने (नफो मेळव्या छतां संतोष न पकड्यो) पछी भर चोमासामां सात रात्री सुधी मूशळ प्रमाण जळ धारा पडते वरसादथी बथा प्राणी एक जग्याए स्थिर थया पण आ शेठ संतोष न पकडतां पोताना शहेरनी नजदीकमां रहेली महा नदीना पुरमां तणाइ आवेला लाकडां लेवानी इच्छावालो धननो उपभोग धर्म नकरतां बथा शुभ परिणामने छोडीने फक्त धन मेळववामांज तैयार थयो तेज कह्नुं छे।

सुत्रम्

॥२८६॥

आचार
॥२८७॥

“उपखण्ड खण्ड निहण्ड रत्नं, ण सुअति दियावि य ससंको । लिंपइ, ठएइ, सययं, लंछियपडिलंछिय कुणइ धन लोभी उचेथी खोदे छे तथा खाण खोदे छे तथा जीवोनी हिंसा करे छे, रात्रिमां सुतो नथी दिवसे पण चिन्तावालो होय छे, कर्मथी लेपाय छे विचार करतो पडी रहे छे तथा हमेशां लांच्छित तथा प्रति लांच्छित (लज्जास्पद कृत्य पण करे छे.) भुंजस्तु न ताव रिको, जेमेतु नविय अज्ज मज्जोहं । नवि य वसीहामि घरे, कायव्वमिणं बहुं अज्जं । २।”

कोइ कहे खा तो पण पोतानो वेपार पूरो न थाय त्यां सुधी तेने खावानुं सुझानुं नथी तेथी कहे के हुं स्नान नही करुं तेम घरमां रहीश नहीं अत्यारे मारे बहु काम छे, (अर्थात् लोभीओ कंइ पण सुख छते धने भोगवतो नथी तेम दान पण आपतो नथी). वली लोभीना अशुभ वेपारो बतावे छे.

मूळ सूत्रमां आलुंप शब्द छे, तेनो अर्थ आ छे, ते लोभथी हणायला अंतःकरणवालो बधा कर्त्तव्य अकर्त्तव्यनो विवेक छो-डीने अर्थ लोभमां एक दृष्टि राखीने आलोक अने परलोकमां दुःख आपनारी कलंकरूप गळां कापवां तथा चोरी विगेरे कृत्य करे छे, एटले तेनी मति सर्वथा लोपाइ गएली छे.

सहसककारे—आगळ पाछळनुं विचार्या विना दोष भूलीने एकदम. (सहसा) कार्य करी नांखे ते काम करनारो (पा. र. १२७ सूत्र प्रमाणे) सहसककार जाणवो जेमके लोभ अंधकारथी छवाइ गएली दृष्टिवालो “हाय दैसो” माननारो शकुंत पक्षी माफक तीरना घाने भूलीने मांसना अभिलाषथी सांधाना छेदनथी नाश पामे छे, (पक्षीने फसाववा धनुष्यमां मांसनो ढुकडो बांधे छे.

सूत्रम
॥२८७॥

आचारो
॥२८८॥

अने ते पक्षी खावा जतां तीर छुटे छे. अने पक्षी मरी जाय छे.) तेज प्रमाणे लोभी धनमां लुब्ध मनवालो थइ बीजा दुःखोने जोतो नथी.
 “विणि विठ्ठ चिठे”—(विविध) अनेक प्रकारे (निविष्ट) रहेलु. पैसा मेळवां माटे चित्त जेनुं छे, ते माणस अथवा जे माणसने मातापिता विगेरेमां प्रेम रहो छे, अथवा जेने उत्तम गायन विगेरेनो रस लेवामां चित्त लाग्युं छे, अथवा सूत्रपाठमां चित्तने बदले चिठ्ठ लइए तो, कहे छे के:—ते माणस विशेषे करीने काय, वचन, अने मनना चंचलपणाथी पैसो पेढा करवामां रातदिवस चित्त राखे छे, तेज प्रमाणे मातापिता विगेरेनो प्रेम धारण करी संसारवालो छे, अथवा अर्थनो लोभी थइने पापथी लेपातो बगर विचारे संसार-विषयमां एक चित्तवालो बनीने हवे पछीथी शुं शुं करे ते कहे छे.

आलोकमां मातापिता विगेरेमां, अथवा इंद्रिय-विषयमां लोलुपी बनी पृथ्वीकाय विगेरे जंतुने दुःख आपनारो ते पुरुष शख्स वापरवामां वारेवारे तैयार थाय छे, ए प्रमाणे वारंवार पृथ्वीकाय विगेरेनी हिंसा करी नवां कर्म बांधे छे. जीवोने दुःख आपनार शख्स बे प्रकारनुं छे, एटले खारा कुवानुं पाणी मीठा कुवामां नांखे; तो स्वकायथी हिंसा छे, अने अग्नि उपर पाणी नांखे तो, पर-कायथी हिंसा छे, (ते पहेलां अव्ययनमां बताव्युं छे.) आ प्रमाणे उपर कहा मुजब हिंसा करे छे. वली मूळ सूत्रमां एत्य सत्थे ने बदले बीजी जग्याए एत्य सत्ते पाठ छे, तेनो आ प्रमाणेनो अर्थ छे. के मातापितामां अथवा पोते गायननो रसिक लोभी लोभमां पडीने सक्त (शुद्ध) बनीने वारंवार तेमां एक चित्तवालो थइने धर्मकर्म लोपीने विना विचारे काळ-अकाळ न जोतां पापमां प्रवर्ते छे.

आ हालना जीवोने जो, अजरामरपद होय; अथवा लांबुं आयुष्य होय; तो ते करबुं घटे; पण दुंका आयुष्यमां, तथा मरण माथे भमतुं होवाथी भोगनी इच्छाए व्यर्थ पाप करे छे. कारणके, हालना काळमां मोटामां मोडुं आयुष्य निश्चयथी सो वरसनी

सूत्रम्

॥२८८॥

आचारो
॥२८९॥

आसपास छे, अने नानुं आयुष्य क्षुल्लक (नाना) भव आश्रयी अंतर्मुहूर्त मात्र छे, अने वधारेमां वधारे त्रण पल्योपमनुं छे तेमां पण; संयजीवित (साधुपणुं) अल्पकाळ छे, तथा अंतमूहूर्तथी लङ्ने थोडुं ओळुं एवुं करोड पूर्वनुं आयुष्य छे. जेमां साधुपणुं उदय आवे ते अपेक्षाए ते पण थोडुं छे, एटले गमेतेटलुं मनुष्यनुं आयुष्य होय; तोपण ते एक अंतर्मुहूर्त छोडीने बाकीनुं अपवर्तन (अकाळ मोत) थाय छे. तेथी कहुं छे के:—

“अद्वा जोगुक्कोसे, वंधित्ता भोगभूमिएसु लहुं । सव्वप्पजीवियं, वज्जइत्तु उव्वद्विया दोणहं ॥ १ ॥”

उत्कृष्ट योगमां बंधना अध्यवसाय स्थानमां आयुष्यनो जे बंधकाळ छे. ते उत्कृष्टो काळ बांधीने जे जीव देव गुरु विगेरे भोग भूमीमां युगलिक तरीके जन्मे छे. तेनुं जलदीथी बधु आयुष्य छोडीने तिर्यंच अने मनुष्यनुं अपवर्तन थाय छे. अने ते अपर्याप्त अंतर्मुहूर्तनुं अंतर जाणवुं, त्यारपछी अपवर्तन थाय छे, (जे आयुष्य त्रण पल्योपमनुं छे, ते पण कारण विशेषथी ओळुं थवा संभव छे.)

सामान्यथी आयुष्य सोपक्रम जीवोने सोपक्रम छे, अने निरूपक्रमआयुष्यवालाने निरूपक्रम छे ते बतावे छे. ज्यारे जीवने पोतानुं आयुष्य त्रीजे भागे बाकी रहेछे. अथवा त्रीजानो त्रीजो (-) नवमो भाग बाकी रहे अथवा जघन्यथी एक बे अथवा उत्कृष्टी सात आठ वर्षे अथवा अंतकाळे काळे अंतर्मुहूर्त काळना प्रमाणथी जीव पोते पोताना आत्मप्रदेशोने नाडिकाना अंतरमां रहेला आयुष्य कर्मवर्गणाना पुद्गळोने प्रयत्न विशेषथी रचना करे छे. ते वरवते निरूपक्रम आयुष्यवालो थाय छे, अने बीजीवखते आयुष्य बांधे तो उपक्रम आयुष्य थाय छे. उपक्रम ते उपक्रमणना कारणथी थाय छे. ते कारणो नीचे बताव्यां छे.

सूत्रम्

॥२८९॥

आचार
॥२९०॥

“ दंडकसस्त्थरज्जू, अग्नि उदगपडणं विसं वाला । सीउणहं अरइ भयं खुहा पिवासा य वाही य ॥ १ ॥
 दंड, चावखो, शस्त्र, दोरी, अग्नि, पाणी, पडी जबुं, झेर, साप, अती डंड, अती गरमी, अरति, भय, भूख, तरस, अने रोग (आयणा प्रमाणमां थाय. एटले दंड विगेरेथी मार पडे तो लांबु आयुष्य पण ढुङ्का वर्खतमां समाप्त थाय, जेने लोकमां अकाळ मोत कहे छे, जेनाथी मोत थाय ते उपक्रम अने जेनुं मोत थयुं ते सोपक्रम मृत्यु कहेवाय छे. अने तेनुं जीवित पण पूर्ण न थवाथी सोपक्रम आयुष्य कहेवाय.

मुत्तपुरीसनिरोहे जिणाजिणे भोयणे बहुसो । घंसणघोलणपोलण आउस्स उवक्कमा एते ॥ २ ॥

झाडो पीशाव रोकवाथी, भोजन जीर्ण थयां पहेलां वधारे खाय अथवा जीर्ण थया पछीथी पण वधारे खाय अथवा घर्षण. (घसारो) अथवा घोलन. अथवा पोडन—(शरीरने गजा उपरांत बोजो अथवा श्रम पडे ते)थी आयुष्यनो अंत आवे छे. तेथी ते उपक्रमो छे. वळी कहुं छे के.

स्वतोऽन्यत इतस्ततोऽभिमुखधावमानापदामहो निपुणता नृणां क्षणमपीह यज्जीव्यते ।

मुखे फलमतिक्षुधा सरसमल्पमायोजितं, कियच्चिरमवर्वितं दशनसङ्कटे स्थास्यति? ॥ ३ ॥

पोतानाथी के बीजाथी आम तेम सामे दोडती आवती आपदाओवाला मनुष्यो छे. तेमां तेमनी निपुणता जुओ के. क्षण पण अहींआं जे जीवे छे. मोढामां फळ छे. घणी भूख लागी छे. रसवालुं अने थोडुं भोजन मलयुं छे. ते केटलो काळ चवाशे अने ते

सूत्रम्

॥२९०॥

आचारो
॥२९१॥

दांतना संकटमां पडेलु रहेशे. (माणसो विषय तृष्णाना लोभी बनी तेने माटे आम तेम दोडे छे. पण ते भोग प्राप्त करवा पहेलां क्यारे काळ झडपशे तेनी खबर पण नथी राखता ते आश्र्वर्यनी वात छे.) उच्छ्वासनी मर्यादावाला प्राण छे. अने ते उच्छ्वास पोते पवन छे अने पवनथी बीजुं कँइ वधारे चंचल नथी तो पण क्षणभरनु आयुष्य लोकोने मोह करावे छे. ते पण एक आश्र्वर्य छे.

उच्छ्वासावधयः प्राणाः, स चोच्छ्वासः समीरणः । समीरणाच्चलं नान्यत् क्षणमप्यायुरद्धुतम् ॥ २ ॥

आ प्रमाणे मनुष्यने मोह उतारवा कछु. वली जेओ लांवा आयुष्य वाला छे. तेओने पण उपक्रमण (आफत) ना अभावे आयुष्य भोगवे छे. तेओ पण मरणथी पण वधारे पीडा करनार बुद्धापाथी पीडाएला शरीरवाला सुखनी जींदगी अल्पमां अल्प भोगवे छे, ते हवे सूत्रकार बतावे छे.

तंजहा—सोयषरिणाणेहि, परिहायमाणेहि, चक्षुपरिणाणेहि, परिहायमाणेहि घाणपरिणाणेहि प-
रिहायमाणेहि रसणापरिणाणेहि परिहायमाणेहि फासपरिणाणेहि परिहायमाणेहि, अभिकंतं च खलु
वयं स पेहाए तओ से एगदा मूढभावं जणयंति ॥ ६३ ॥

भाषारूपे परिणमेला पुद्गलोने जे सांभळे; ते श्रोत (कान) छे, अने तेनो आकार कदंबना झाडना फुल जेवो द्रव्यथी छे, अने भावथी तो जे भाषा द्रव्यने ग्रहण करवानी लब्धि, तथा तेनो उपयोगनो जे स्वभाव छे, ते जाणबुं. पूर्वे कहेलां श्रोत्र (कानबडे) चारे बाजुथी घटपट शब्द विगेरे विषयोनुं जे ज्ञान थाय; ते परिज्ञान छे, ते कानना परिज्ञानमां बुद्धापाना प्रभावथी जे सांभळवानी

सूत्रम्

॥२९१॥

आचारो

॥२९२॥

शक्ति कमी (बहेराश) थाय तेथी ते प्राणी बुद्धापामां, अथवा तेवाज रोगना उदयना वर्खतमां मूढभावपणाने पामे छे, जेथी करवा योग्य न करवा योग्य, विवेक जतां अज्ञानपणुं इंद्रियोनी शक्ति कम थतां आवे छे. अने तेथी हित पास करवुं; अने अहित छोडवुं; तेनो विवेक नाश पामे छे. जेम कान संबंधी कहुं; तेज प्रमाणे आंखनु पण बुद्धापामां के रोगमां विज्ञान नाश पामे छे.

प्रश्नः—आत्मा साथे जेम काननो संबंध छे, तेम आंख साथे पण संबंध छे, त्यारे आंखनी माफक कानथी केम देखातुं नथी?

उत्तरः—तेम थवुं अशक्य छे, कारणके. तेना विनाशमां तेनो उपलब्ध (प्राप्त) अर्थनी स्मृतिनो भाव थाय छे, अने एवुं देखाय पण छे के, इंद्रियना उपवात (नाशमां) पण तेनो उपलब्ध अर्थनुं स्मरण थाय छे. जेमके, धोळुं घर. तेमां बेठेलो पुरुष पांच बारीओथी देखायलो जे कंइ पदार्थ होय; ते वारीमांथी कोइपण वारी ढांकतां पूर्वे जोयलु; ते याद आवे छे, तेवीज रीते में कानवडे, सांभळ्यो अथवा आंखवडे धीमो (धीमाशथी) पदार्थ जोयो; अने में आ कान, जाण्यो अथवा आंखथी स्फुट (खुल्हो) अने स्पष्ट पदार्थ जोयो, ते इंद्रियोनी करणपणानी अवगति (बोध) छे, तेथी आत्मा साथे दरेक इंद्रियोनो संबंध छे.

वादीनी शंका—जो, एम छे तो; बीजी पण इंद्रियो छे, ते केम न लीधी? (बीजी कइ इंद्रियो छे? एवुं पूछो तो नीचे बतावीए छीए) जेवी के जीभ हाथ पग टटी अने पेशाबनी इंद्रियो तथा मन ए केस न लीधी? जेमके वचन बोलवाथी ते पण जीभ इंद्रिय छे. तथा लेवा मुकवामां हाथ इंद्रिय छे. चालवामां पग इंद्रिय छेतथा मळ काढवामां टटीनी इंद्रिय छे. अने संसारी आनंद भोगववामां गुह्य इंद्रिय छे. तथा विचारकरवामां मन इंद्रिय छे. आ छ इंद्रियो पग आत्माने उपकारकरे छे. तेथी तेमां पण करणपणुं घटे छे. अने करणपणाथी इंद्रियपणुं छे. तेथी वधी मलीने अगीआर इंद्रियो थाय छतां तमो पांच इंद्रियो केम बतावो छो?

सूत्रम्

॥२९२॥

आचार
॥२९३॥

जेनाचार्यनो उत्तर—एमां कंइ दोष नथी कारणके अहीं आत्माना विज्ञाननी उत्पत्तिमां जे विशेष उपकारक होय छे, तेज करण (जेना बडे कार्य थाय ते) पणे लेवाथी पांचज इन्द्रियो छे. अने जीभ हाथ पग विगेरे आत्मा साथे साधारण रीते एक पणे होवाथी करण पणे वपराती नथी अने कंइ पण क्रियाना उपकारपणाथी जो करण पणुं मानीए तो ते प्रमाणे “भ्रू” (पांपण) अथवा उदर (पेट) विगेरे पण उंचेनिचे थवानो संभव होवाथी तेनामां पण करण पणुं थाय, वली इन्द्रियोना पोताना विषयमां नियत (चोकस-पणुं) होवाथी एकनुं काम बीजी करी शकवाने शक्तिवान नथी. तेज कहे छे के:—रूप जोवाना काममां आंख काम लागे पण आंखने बदले आंखना अभावमां कान विगेरे काम न लागे

पण जे रस विगेरे प्राप्त थतां थंडा विगेरे स्पर्शनो लाभ थाय छे ते स्पर्शनु सर्व व्यापिष्ठुं होवाथी त्यां शंका न करवी के जीभथी चाखतां खारा खाटा साथे ठंडो उनो पदार्थ लागेले तेथी जीभ जीभनुं पण काम करे छे तेम बीजी इन्द्रियनुं काम करे छे. तेम न मानवुं पण जीभमां स्पर्श इन्द्रियनुं पण सर्व व्यापिष्ठुं छे एम जाणवुं.

अहींआं हाथ कापवा छतां तेनुं कार्य जे लेवापणुं छे. ते दांतथी पण लेवाय छे. तेथी हाथमां लेवाना कारणथीज ते इन्द्रिय-पणुं मानवुं ते नकामुं छे. अने मननुं सर्व इन्द्रियो उपर उपकारपणुं होवाथी. तेने अंतःकरणपणे अमे इच्छिए छीएज, अने बाह्य इन्द्रियोना विज्ञानना उपधान बडे ते छे. अने ते तेमां समाइ जवाथी मनने तेमां जुदुं लीधुं नथी. अने प्रत्येकनुं ग्रहण करवुं ते क्रमनी उत्पत्तिना विज्ञानना उपलक्षण माटे छे. तेज बतावे छे. जे इन्द्रियनी साथे मन योजाय छे तेज पोताना विषयनो गुण ग्रहण करवा माटे वर्ते छे. पण बीजो ग्रहण करवाने माटे नहीं.

सूत्रम्

॥२९३॥

आचार
॥२९४॥

प्रश्न—दीर्घ शष्कुली. (तलपापडी) खावा विगेरेमां पांच इन्द्रियोनुं विज्ञान थाय छे. अने ते साथे अनुभव थाय छे, ते केवी रीते छे? उत्तर—तेम नथी. कारणके. केवळीने पण वे उपयोग साथे नथी. त्यारे बीजानेतो आरातीय (अल्पमात्र) भाग जोनारने पांचेने उपयोग साथे कयांथी होय आ बाबतमां अमे बीजी जग्याए विस्तारथी कहुं छे. तेथी अहीं कहेता नथी अने जे साथेना अनुभवनो आभास थाय छे. ते मननुं जलदी दोडवानी वृत्तिपणानुं छे. कहुं छे के—

“आत्मा सहैति मनसा मन इन्द्रियेण, स्वार्थेन चेन्द्रियमिति क्रम एष शीघ्रः। योगोऽयमेव मनसः किमगम्यमस्ति?, यस्मिन्मनो ब्रजति तत्र गतोऽयमात्मा ॥ १ ॥

आत्मा मननी साथे जाय छे. अने मन छे ते इन्द्रिय साथे जाय छे. अने इन्द्रिय पोताना इच्छित पदार्थमां जाय छे. अने ते क्रम शीघ्र बने छे. आ मननो योग शुं अजाण्यो छे के जेमां मन जाय छे त्यां आत्मा गएलोज छे.

अने अहीआं आ आत्मा, इन्द्रियोनी लब्धिवालो शरुआतथीज जन्मना उत्पत्ति स्थानमां एक समयमां आहार पर्याप्तिने निप-जावे छे. त्यार पछी अंतर्मुहूर्तमां शरीर पर्याप्तिने निपजावे छे. त्यार पछी इन्द्रिय पर्याप्तिने तेटलाज काळमां निपजावे छे. अने ते पांच इन्द्रियो स्पर्श-रस घ्राण चक्षु अने श्रोत्र एम छे. ते पण द्रव्य अने भाव एम दरेक वे भेदे छे. तेमां द्रव्य इन्द्रिय निर्वृत्ति अने उपकरण एम वे भेदे छे. निर्वृत्ति पण अंतर अने बाह्य एम वे भेदे छे.

जेनाथी निर्वाह थाय ते निवृत्ति छे. अने ते कोनाथी निर्वाह थाय छे.? तेनो उत्तर—कर्मबडे निर्वाह थाय छे.

सूत्रम्
॥२९४॥

आचा०

॥२९५॥

तेमां उत्सेध (लोकमां वपरातुं माप आंगलीनुं) अंगुलना असंख्येय भाग जेटला शुद्ध आत्म प्रदेशना प्रतिनियत चक्षु विगेरे इंद्रियोना संस्थान वडे जे वृत्ति अंदर रहेली छे ते निवृत्ति जाणवी।

ते आत्मा प्रदेशोमांज इंद्रियना व्यपदेशने भजनार जे प्रतिनियत संस्थानवालो निर्माण नामना पुद्गल विपाकवाली (कर्म-प्रकृतिवडे) वर्द्धकि (सुतार माफक) विगेरे विशेष रूपवालो (इंद्रिय विभाग) अने अंगोपांग नामना कर्मवडे बनावेल जे छे ते बहारनी निर्वृत्ति जाणवी।

(आ उपर जे वर्णन कर्यु ते शरीरनी अंदर अने बहार ज्यां जे इंद्रिय रहेली छे तेनुं वने प्रकारनुं वर्णन बताव्युं छे, बहारनी इंद्रियो दरेकनी देखाय छे पण अंदरनी तो आत्मज्ञानी जाणी शके छे) उपरनी बतावेली निवृत्ति बे प्रकारनी कही तेने जेना वडे उपकार कराय छे ते उपकरण छे अने ते इंद्रियोना कार्यमां समर्थ छे. वली निर्वृत्ति होय अने हणाइ नहोय तो पण मशुर (जेनी दाळ थाय छे) तेना आकार वाली निर्वृत्तिमां तेने जो उपघात थाय तो आंख जोइ शकती नथी (आंखनो बहारनो आकार मशुरनी दाळ जेवो छे, जोते नाश पामे तो अंदर आत्मानी शक्ति छे छतां ते जोइ शकतो नथी माटे बहारना आकारने उपकरण कहुं छे).

ते पण निर्वृत्ति माफक बे प्रकारे छे तेमां आंखनी अंदरनुं काळुं धोलुं मंडळ छे अने बहारनुं पण पांदडांना आकारे बे पांपण विगेरे छे, (ते सौने जाणीतुं छे.)

आ प्रमाणे बीजी इंद्रियोमां पण जाणी लेबुं.

भावइंद्रिय पण लब्धि अने उपयोग एम बे भेदे छे. तेमां लब्धि छे, ते ज्ञानदर्शन आवरणीय कर्मना क्षय उपशमरूप जेना सं-

सूत्रम्

॥२९५॥

आचारा०

॥२९६॥

निधानथी आत्मा द्रव्य इंद्रिय निर्वृति तरफ जाय छे, अने तेना निभित्तथी आत्मानो मनना जोडाणथीं पदार्थनुं ग्रहण करवानो व्यापार थाय; ते उपयोग छे, ते आ छती लब्धिए निर्वृति उपकरण, अने उपयोग छे, अने छती निवृत्तिमां उपकरण अने उपयोग छे, अने उपकरण होय; त्यारे उपयोग थाय छे. आ कान विगेरे वधी इंद्रियोना आकार अलुक्रमे नीचे मुजब जाणवा.

काननो आकार कदंबना फुल जेवो छे. आंखनो मथुर जेवो, अने नाकनो कलंबुका ना फुल जेवो छे, जीभनो भुरप (खरपो, तावेता)ना आकार जेवो, तथा शरीरनो स्पर्श, इंद्रियोनो आकार जुदी जुदी जातनो छे एम जाणवुं.

काननो विषय. बार योजनथी आवेला शब्दने ग्रहण करे छे, अने आंखनो विषय. एकवीस लाख योजनथी कंइक अधिक दूर होय; अने ते प्रकाश करनार होय; ते देखाय छे.

पण प्रकाश करवा योग्य होय; ते एकलाख योजनथी कंइक थधिक होय; तेवा रूपने ग्रहण करे छे, पण वाकीनी इंद्रियोनो विषय नव योजनथी आवेलो होय; तेने ग्रहण करे छे, अने जघन्यथी तो, वधी इंद्रियोनो विषय आंगळना असंख्येय भाग मात्र छे. (नीचेना टीपणमां खुलासो कर्यो छेके, वधी इंद्रियोथी आंखनुं जुदुं छे, कारण के, आंखनो विषय जघन्यथी आंगळना संख्येय भाग मात्रथी जाणवो

अहीं मूळसूत्रमां श्रोत्रना परिज्ञानथी हणातां, अथवा ओळुं थतां इंद्रियोनी केवी दशा थाय छे ते बताव्युं. तेनो परमार्थ आ छे. अहींयां संज्ञी पचेंद्रिय जीवने उपदेश आपवानो अधिकार होवाथी उपदेश छे ते काननो विषय छे. (काननी शक्ति सारी होय; ताज उपदेश संभलाय.) एटला माटे तेनी पर्यासिमां वधी इंद्रियोनी पर्यासि पण साथे सूचवी.

(काने सांभळीने जीवरक्षा माटे आंखथी जोइने चाले; विचारीने बोले विगेरे छे, तेथी बीजी इंद्रियोनुं पण स्वरूप बताव्युं छे.)

सूत्रम्

॥२९६॥

आचा०

॥२३७॥

आ कान विगेरेनो आत्मानी साथे संबंध थतां; जे ज्ञान थाय छे, ते ज्ञान उमर वृद्ध थतां ओहुं थाय छे, ते हवे बतावे छे. मूलसूत्रमां कहुं छेके:-
“अभिकंतं घ” विगेरे एटले उपर बताव्या प्रमाणे बुद्धापामां शक्ति ओछी थइ जाय छे.

अथवा आखा सूत्रनो आ प्रमाणे अर्थ लेवो के:-

कान विगेरे विज्ञानथी कमी थयेल कर्णभूत इन्द्रियो छतांपण अभिकंतं. विगेरेनो अर्थ आ थाय छे के:-जेम जेम ऊंमर वीते; तेम तेम बुद्धि-शक्ति ओछी थाय; तेमां प्राणीओने काळेकरेली शरीरनी अवस्था जेमां यौवन विगेरे वय (उमर) छे. तेने जरा अ-थवा मृत्युना सामे जवानुं छे. कारण के अहीआं शरीरनी चार अवस्थाओ छे, (१) कुमार (२) योवन (३) मध्यम (४) वृद्धत्व छे, एम जाणबुं. ते शास्त्रमां कहुं छे. के—

“प्रथमे वयसि नाधीतं, द्वितीए नार्जितं धनम्। तृतीए न तपस्ततं, चतुर्थे किं करिष्यति ? ॥ १ ॥

पहेली वयमां विद्या न भण्यो, बीजी वयमां धन न मेळबयुं. त्रीजीमां तप न कर्या. (एवो आळसु माणस इन्द्रियो थाकतां. चोथी अवस्थामां शुं करवानो छे !)

तेथी पहेली बे अवस्था जतां वृद्धावस्थाना सामे वय जाय छे, अथवा बीजीरीते त्रण अवस्थाओ छे. (१) कुकार (२) योवन (३) वृद्धावस्था छे कहुं छे के—

“पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने। पुत्राश्च स्थाविरे भावे, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ १ ॥”

सूत्रम्

॥२३७॥

आचा०

॥२९८॥

बालक पणामां पिता रक्षा करे छे. यौवनअवस्थामां धणी बचावे छे. अने वृद्धावस्थामां दिकरा पाळे छे, पण स्त्रीने कोइपण अवस्थामां स्वतंत्रता आपवी योग्य नथी.

अथवा बीजी रीते त्रण अवस्थाओ छे. (१) बाल (२) मध्य अने (३) वृद्धत्व एम छे. कहुं छे के—

आषोडशाङ्गवेहालो, यावत्क्षीरान्नवर्त्तकः । मध्यमः सप्ततिं यावत्परतो वृद्ध उच्यते ॥ १ ॥

दुध अने अब खानार (जन्मथी लङ्घने) सोळ वर्ष सुधी बालक कहेवो, अने सीत्तेर वर्ष सुधी मध्यम अने त्यारपछी वृद्ध कहेवो, आ वधी अवस्थामां पण जे उपचयवाली (बल वधे त्यां सुधी) अवस्था ढोडीने आगळ गएलो अतिक्रांत वयवालो जाणवो. (“च” समुच्चयना अर्थमां छे.)

अहींआं कान, चक्षु, नाक, जीभ, अने स्पर्श इंद्रियोना अस्त (नाश) पामेला समस्त ज्ञाननी वात फक्त न लेवी पण तेनी साथे शरीरनी बीजी शक्तिओ पण नाश थतां मूढृपणुं आवे छे. (आ करवुं आ न करवुं. एवो विवेक नष्ट थाय छे.)

तेथी वय उलंघतां (शरीरनी शक्ति ओछी थतां) विचारीने ते प्राणी (संसारमां मोह राखनारो पुरुष) निश्चयथी वधारे मूढृपणुं पामे छे. (पण धर्म आराधतो नथी) तेथीज मूळ सूत्रमां कहुं छे के—“तओस” विगेरे

अटेले धोका वाल जोइने अथवा शरीरपर करोचलीपडेली जोइने पोते हुं बुद्धो थयो एम जाणी वधारे खेद करे छे; अने तेथी मूढृता प्राप्तकरेछे अथवा ते संसारी जीवने कान विगेरेनी शक्ति ओछी थतां तेने मूढृता आवे छे; ए प्रमाणे वृद्धावस्थामां ते मूढृ भावने पामीने

सूत्रम्

॥२९९॥

आचार
॥२९९॥

प्राय-लोकमां अवगीत (तीरस्कार करवा योग्य.) थाय छे. ते बतावे छे.

जेहिं वा सद्धिं संवसति, ते विणं एगदा णियगा पुछिं परिवधंति, सोऽवि ते णियए पच्छा परिवएज्जा, णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा, से ण हासाय ण किङ्गाए ण रतीए विभूसाए सू० ॥ ६४ ॥”

बीजा लोको तो दूर रहो पण जेनी साथे घरमां रहे छे. ते पोताना पुत्र स्त्री विगेरे छे ते स्त्री पुत्र विगेरे पण एटले वृद्धावस्थामां तेना पोताना सगा छतां तथा पोते समर्थ अवस्थामां कमाइने तेमने पोष्या हता ते स्त्री पुत्र विगेरे पण तेनो तीरस्कार करे छे. अने बोले छे के. आ मरतो नथी अने खाटलो पण मुकतो नथी. अथवा “परिवदंति” एटले पराभव करे. (छोकराओ तेमनुं अपमान करतां बोले छे के. “बेस बेस डोकरा? तुं शुं समजे छे.” विगेरे अथवा परस्पर वातो करे छे के. इवे आ बुझानुं शुं काम छे. ए सगाओनोज तीरस्कार खमतो नथी पण पोतानो आत्मा पण पोताने निंदवा योग्य थाय छे. ते बतावे छे.

‘वलिसन्ततमस्थिशेषितं, शिथिलस्नायुधृतं कडेवरम् । स्वयमेव पुमान् जुगुप्सते, किमु कान्ता कमनीयविग्रहा?’

सर्वत्र करोचलीओ पडी गएल अने हाडकां बाकी रहेल तथा ढीलां पडीगएल स्नायु (नाडीओ) ने धारण करनार.

आहाहा आ मारुं आवुं शरीर रहुं! आवुं पोतानुं शरीर जोइने पुरुष पोतेज पोतानी निंदा करे छे. तो सुंदर शरीरवाली स्त्री निंदा करे तो तेमां शुं नवाइ छे.!

सूत्रम्

॥२९९॥

आचा०

॥३००॥

गोवालीओ बाळक तथा स्त्री विगेरे मंद बुद्धिवालाना ताटे द्रष्टांत द्वाराए कहेलो विषय वधारे बुद्धिमां ठसे छे. तेटला माटे उ-पर बतावेल विषयने समजवा माटे कथा कहे छे. धना शेठनी कथा, कौसंबी नगरीमां घणुं धन अने घणा पुत्रवालो धनो नामनो सार्थवाह (मोटो वेपारी) हतो. तेणे एक वखत पोते एकलाए घणा उपायो बडे स्वापतेय (पोतानुं कमाएँलुं धन) मेलव्यु. अने वधां दुःखी जे भाइ सगां मित्र स्त्री पुत्र विगेरे हतां तेमने माटे उपभोगभां लीधुं. त्यार पछी आ शेठ उमरना परिपाकथी बुढो थ्यो, त्यारे तेणे साचववामां होंशीयार एवा पुत्रोने वधा कार्यनी चिन्तानो भार सोंपी दीधो, ते पुत्रो पण विचारवा लाग्या के आ बुद्धाए अमने आवी अवस्थामां मूक्या के जेथी वधा माणसोमां हमो अग्रेसर थया, तेनो उपकार मानता छता उत्तम कुळनी सज्जनता धारण करता रह्या. पण कोइ वखते कार्यना प्रसंगे तेओ दूर थया, तेथी पोतानी स्त्रीओने पोतानो अशक्त वाप सोंप्यो ते स्त्रीओ पण घरनी श्रीभ-ताइथी ते बुद्धाने तेल मर्दन तथा स्नान तथा भोजन विगेरेथी यथायोग्य कार्य संतोष पमाडवा करती हती.

त्यार पछी केटलोक काळ गयो. त्यारे घरमा पुत्र परिवार तथा माल मीलकत वधतां ए स्त्रीओ पोताना पतिनी संपदाथी अ-हंकासमां आवी. अने ते बुढो परवश थएलो अने तेनुं आखुं अंग कंपतुं हतुं. शरीरनां वधां द्वार अंदरना मळ विगेरे नीकळवाथी गंधाता हतां. तेथी ते बुद्धा तरफ घरनो स्त्रीओ धीमे धीमे योग्य उपचार करवामां प्रमाद करवा लागी.

आ ढोशो पण पोतानी ओछी सेवा थतो जोइ चित्तना अभिमानबडे तथा कुदरती लागणीथी दुःखना सागरमां डुबेलो वर्ना छोकरानी वहुओनी फरीआद छोकराओ पासे करवा लाग्यो, ते स्त्रीओने पोताना पतिए ठपको आपवाथी वधारे खेदवाली वर्ना (ससरानी उपर क्रोध लावी.)ने थोडी पण चाकरो करवो छोडी दीधी, अने ते दरेक वहुओ एक विचारवाली वनीने पोताना पतिने कहेवा

सूत्रम्

॥३००॥

आचा०

॥३०१॥

लागी के अमो आवी सारी रीते रात दिवस जागीने डोशानी चाकरी करीए छीए, छतां आ डोशो बुद्धपाथी विपरीत बुद्धिवालो बनीने गुणोनो चोर थाय छे, अने जो अमारा उपर पण तमोने विश्वास न होय तो जे कोइ विश्वासवाला होय तेने काम सोंपो. तेथी छोकराओए पण तेज प्रमाणे कर्यु, अने बीजी वहुओने काम सोंप्यु, पण बीजी वहुओए वधां कार्योने बराबर योग्य अवसरे कर्या, पछी पुत्रोए डोशाने पूछ्यु. त्यारे पहेलांथी रीसाएलो डोशो तेज प्रमाणे निंदा करवा लाग्यो. अने कहेवा लाग्यो के मारा कहेवा प्रमाणे आ वहुओ पण काम करती नथी. एटले छोकराओए खातरीवाळा माणसोना वचनथी खरी वात जाणीने विचार्यु के, आ डोशानी बराबर चाकरी करवा छतां वृद्धावस्थाथी व्यर्थ रोदणां रुवे छे, तेथी छोकराओए पण तेनी उपेक्षा करी तेथी बीजाओ आगळ पण अवसर आवतां छोकराओ डोशानी निंदा करवा लाग्या. आ प्रमाणे छोकराओए तथा वहुओए पराभव करेलो तथा सगां वहालांए तथा नोकरोए अपमान करेलो अने तेनुं वचन पण कोइ न मानतुं जोइने घरनां वधां सुखीओमां ते एकलो दुःखी बुद्धो पाढ़ली अवस्थामां वधारे वधारे दुःख जोवा लाग्यो.

ए प्रमाणे बुद्धपाथी अशक्त थएल शरीरवाळो बीजो बुद्धो माणस पण तरखलाने वांकुं वाळवामां असमर्थ जेवो थतां कार्यनेज चाहता लोकोमां पराभव पामे छे. कद्दुं छे के—

“गात्रं संकुचितं गतिर्विग्लिता दन्ताश्च नाश गता, दृष्टिर्भ्रश्यति रूपमेव हसते वक्त्रं च लालायते ।
वाक्यं नैव करोति बान्धवजनः पत्नो न शुश्रूषते, धिक्षुं जरयाऽभिभूतपुरुषं पुत्रोऽप्यवज्ञायते ॥ १ ॥

सूत्रम्

॥३०१॥

आचारा०

॥३०२॥

शरीर संकोचाइ गयुं, टांटीआ लथडवा लाग्या, दांत पडी गया, आंखोनुं तेज गयुं, मोढांमांथी लाळ पडवा लागी, सगां वहालां कहेलुं करतां नस्थी. अने पोतानी स्थी पण जोडती मागणी स्वीकारती नस्थी. आ हाहाहा ! बुद्धा थएल पुरुषने अशक्त थतां पुत्र पण अपमान करे छे. ते कष्टदाइ बुद्धापाने घिकार हो—(विगेरे जाणवुं.)

आ प्रमाणे बुद्धापाथी हारेलाने सगां वहालां निंदे छे. अने ते पण गभराएलो बेवाकलो बनीने बीजा लोको आगळ पोताना घरनी निंदा करे छे.

मूळ सूत्रमां “सो वा” इत्यादि शब्दो छे. ते पहेलांनी अपेक्षाए बीजो पक्ष सूचवे छे. एटले एम जाणवुं के सगां वहालां अपमान करे छे. अथवा पोते बुद्धो थतां दुःखने लीधे सगां वहालांनी निंदा पारका आगळ पोते करे छे. अथवा पोते गभरामणथी सगांनुं अपमान करे छे.

कदाच कोइए पूर्वे धर्म आराध्यो होय तेवानुं धर्मात्मा जीवो बुद्धापामां अपमान न करे तो पण तेनुं दुःख दूर करवाने तेओ समर्थ थता नस्थी तेबुं सूत्रकार कहे छे. “के तारा छोकरा तथा वहुओ तने तारवा माटे शक्तिमान नस्थी अथवा तने शरण आपवा योग्य नस्थी तेमज तुं पण तेओने तारवाने समर्थ नस्थी तेम शरण आपवा योग्य नस्थी (आपदामांथी बचावे ते त्राण छे) जेम महा श्रोतवडे (पाणीना पूरमां सारा नाविकने आश्रयी जे नावमां बेसाय तो पार उतराय) जेनो आश्रय लइने बेसीए अने भय न आवे ते शरण छे किलो अथवा पर्बतने आश्रये बचे; अथवा शूर पुरुष गामने बचावे ते शरण छे.

“ जन्मज्जरामरणभयै, रभिद्रुते व्याधिवेदनाध्रस्ते । जिनवरवचनादन्यत्र, नास्ति शरणं क्वचिलोके ॥ १ ॥ ”

जन्म जरा अने मरणना भयर्थी पीडाएला अने रोगनी वेदनाथी घेराएला पुरुषने जिनेश्वरना वचनर्थी बीजुं कंइ शरण आ

सूत्रम्

॥३०२॥

आचा०

॥३०३॥

लोकमां क्यांय नथी. उलटुं ते पीडाएली अवस्थामां पोते कोइनी हांसी करवा योग्य रहो नथी. किंतु जगत् तेनी हांसी करे छे.! जेनी पारकाथी हांसी थाय ते केवीरीते हर्ष पामे (पोते पोताना समक्ष के पाढ़क्थी हसी खुसीनी वात करवा योग्य नथी किंतु हांसी करवाने योग्य छे. तेम तेनी साथे ओळंगवा, कुदवाने, ताळी पाडवा के तेवो बीजो कोइ जातनो वात करवा विगेरेनो आनंद पण करवा योग्य नथी तथा तेनुं रूप विगेरे खीओने गमतुं नथी उलटुं खीओ तेनी निंदा करे छे. अने कहे छे के. “तुं तारा आत्माने जोतो नथी! माथुं जोतो नथी! के जे धोळा वाळ रूप राखथी लेपाएल छे! हुं तारी दिकरी जेवी जुवान छुं अने तुं मारी साथे आनंद (लग्न) करवा इच्छे छे. आ दुनीयामां जाणीतुं छे के ते बुद्धो संसार सुखने योग्य नथी तेम शरीरनी शोभा करवाने पण योग्य नथी अने कदाच शोभा करे तो पण बगडी गएली अने करोचली पडेली चामडीवालो बुद्धो शोभतो नथी. कब्युं छे के.
न विभूषणमस्य युज्यते न च हास्यं कुत एव विभ्रमः? । अथ तेषु च वर्तते जनो, ध्रुवमायाति परां विडम्बनां॥

तेने शोभा करवी योग्य नथी. तेने हर्ष नथी अने खीने खुश करवानो विभ्रम (चेष्टा) क्यांथी होय अने ते छतां जुवान खी-ओमां खेलवा जाय तो निश्चये मोटा अपमानने पामे छे.

जं जं करेइ तं तं न सोहए जोव्वणे अतिकंते॥ पुरिसस्स महिलियाइ, व एककं धर्मं पमुक्तूणं ॥२॥
जुवानी जतां बुद्धो माणस जे कंइ करे ते शोभतुं नथी. एटले एक धर्मने छोडीने खीने खुशी करवा जे कंइ बुद्धो करे ते बधुं निरर्थक छे.
अप्रशस्त मूळ स्थान कब्युं हवे प्रशस्त मूळ स्थान कहे छे.

सूत्रम्

॥३०३॥

आचार
॥३०४॥

इच्चेवं समुद्धिए अहोविहाराए अंतरं च खलु इमं सपेहाए धीरे मुहुक्तमवि, णो पमायए वओ अच्चेति
जोव्वणं व. (सूत्र. ६५)

अथवा जे कारणर्थी ते वहालांओ संसार समुद्रथी तारवा के बीजाना भयथी रक्षण आपवा समर्थ नथी एवं शास्त्रना उपदेशथी उत्तम पुरुषने समजाय तो तेणे शुं करबुं ते कहे छे (इति शब्दनो उपर कहेलो अर्थ छे) अपशस्त मूळ गुणस्थान (संसारी विषय सुख) मां राचेला जीवने बुद्धापानी अशक्तिथी घेरातां हर्षना माटे के क्रीडाना माटे के भोगविलास माटे अथवा शरीरनी शोभामाटे योग्यता नथी (परंतु ते तेणे पहेलेथी समजबुं जोइए) के संसारमां जे किं सुख अथवा दुःख पडे छे, ते दरेक पोताना शुभ अशुभ कर्मनुं फळ बधा प्राणीओने भोगववानुं छे. एवं जाणीने ते समजेला प्राणीए पूर्वे कहेला पहेला अध्ययन शस्त्र परिज्ञामां बतावेल महाव्रतोमां स्थिर चित्तवाला बनीने साधुए विचारबुं के अहो (पारा पुन्य उदयथी आबुं निर्मल चारित्र मल्युं छे. एम जाणीने) सुंदर विहार करवा योग्य छे.” जेमां शास्त्रमां कहेल संयम अनुष्ठान छे. तेना माटे योग्य विहारमां तत्पर बनी जरा पण प्रमाद् न करे. वली तेणे विचारबुं जोइए के आर्य क्षेत्र उत्तम कुलमां जन्म वीतरागनो धर्म तेना उपर श्रद्धा अने आवां सुंदर महाव्रतो विग्रेनो सारो अवसर मने मल्यो छे. तो केवीरीते प्रमाद थाय तेथी विनेय (शिष्ये) तप संयममां जरापण खेद न पामतां उपर कहेल उत्तम वस्तु आर्य क्षेत्र प्राप्तिथी आनंद पामीने गुरु शुं कहे छे ते समजे. गुरु कहे छे के आ तारो योग्य अवसर छे, अनादि संसारमां घणा भव भमतां तने धर्म प्राप्ति थवी घणी दुर्लभ छे. माटे हे धीर ! आ सारा अवसरने विचारीने तुं एक मुहूर्त (४८ मीनीटनी अंदरनो

सूत्रम्

॥३०४॥

आचारा०

॥३०५॥

वखत.) पण प्रमाद वश न थजे (मूळसूत्रमां अनुस्वारनो लोप थयो छे. अने ते प्रमाणे बीजुं, पण व्याकरण विरुद्ध आवे तो समजी लेखुं के. मागधीमां तथा संस्कृतमां कंइक भेद छे.) अंतर्ष्वृहूर्त्तनो वखत वताववानुं कारण ए छे के. केवलज्ञान विनाना जीवोने समय विगेरेनुं बारीक ज्ञान नथी तेथी तेटलो वखत वताव्यो. खरी रीते तो एक समय मात्र पण प्रमाद न करवो एवो सुगुरुनो उपदेश जाणवो. कहुं छे के.

“सम्प्राप्य मनुष्टत्वं संसारासारतां च विज्ञाय । हे जीव ? किं प्रमादान्न चेष्टसे शान्तये सततम्? ॥ १ ॥
मनुष्य पणुं पामीने संसारनी असारता समजीने. प्रमादथी केम बचतो नथी तथा हे जीव शांतिना माटे महेनत केम करतो नथी ?

ननु पुनरिदमतिदुर्लभं मगाधसंसारजलधिविभ्रष्टम् । मानुष्यं खद्योतकतडिल्लताविलसितप्रतिभम् ॥

तुं जोतो नथी के आ अतिदुर्लभ संसार समुद्रमां भ्रष्ट थएला मनुष्यने आगीआना कीडाना प्रकाशवा जेखुं अथवा विजळीना झबकारा जेखुं सारी सुख छे.

वळी शास्त्राकार कहे छे के शामाटे प्रमाद न करवो? सांभळो. तारी वय (उंमर) दिवसे दिवसे व्यतीत थाय छे. जुवानी चाली जाय छे. ! (मूळ सूत्रमां वय अने जुवानी एक छतां जुवानीमां मोह थाय माटे ते जुदुं वतावेलुं छे.) जुवानीमां धर्म अर्थ अने काम त्रणे सधाय छे. माटे मोहमां न पडतां तेमां धर्म साधी लेवो गुरु कहे छे के हे शिष्य! ते जुवानी जलदीयी जाय छे. कहुं छे के.

“नइवेगसमं चवलं च जीवियं जोववणं च कुसुमसमं । सोक्खं च जं अणिच्चं तिपिणवि तुरमाणभोजाइं” ॥

सूत्रम्

॥३०५॥

आचा०
॥३०६॥

नदीना पूर समान तारुं जीवित चपळ छे. अने जुवानी फुलनी समान. (जलझी करमाय तेवी.) छे संसारीक मुख अनित्य छे अने ते जीवित जुवानी अने मुख ए त्रणे शीघ्र भोगववानां छे. (जलझी विती जनारां छे.)

आ प्रमाणे मानीने साधुए विचारबुं के विहार करवो ते वधारे सारुं छे. (जे साधुओ चालवाथी कंटाली एक जग्याए पडी रहेता होय तेमणे उपरनुं रहस्य विचारवा जेबुं छे.)

पण जे संसारना मुख वांच्छको छे, तेओ असंयम जीवित ने खुखकारी माने छे. तेमनी शुं दशा थाय छे. ते सूत्रकार कहे छे. जीविए इह जे पमत्ता से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्यवित्ता उत्तासइत्ता, अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे, जेहिंवा सर्द्धि संवसइ ते वा णं एगया निगया तं पुर्वि पोसेंति, सो वा ते नियगे पच्छा पोसिज्जा, नालं ते तव ताणाए 'वा' सरणाए 'वा' तुमंपितेसिं, नालं ताणाए वा सरणाए वा (सू. ६६)

जेओ पोतानी वय वीते छे, तेने जाणता नथी तेओ विषय कषायमां प्रमादी थाय छे. तेओ रात दिवस कलेश पामता काळ अकाळमां उद्यम करी जीवोने दुःख आपनारी क्रिया (आरंभ) करे छे. संसारी गुणमां रहीने विषयना अभिलाषमां प्रमादी बनी स्थावर अने त्रस जीवोना घातक बने छे. (बहु वचनने बदले. एक वचन मूळ सूत्रमां छे. ते जातिनी अपाक्षाए जाणबुं) तथा कान नाक विगेरेने छेदनारा पण छे. तथा माथुं आंख पेट विगेरेने भेदनारा पण छे. अने कपडानी गांठ विगेरेने छोडीने चोरनारा पण छे. गामनी लुंट करनारा पण छे. तथा विष तथा शख्त वडे प्राण लेनारा पण छे. अथवा दगो देनारा पण छे. अथवा ढेखालो

सूत्रम्
॥३०६॥

आचा०

॥३०७॥

विगेरे मारीने त्रास आपनारा पण छे.

शिष्य पूछे छे. शामाटे आवी परने पीडा आपनारी क्रिया करे छे.?

उत्तर—बीजो तेबुं नथी करी शकतो पण हुं बहादुर छुं एवुं अभिमान लावीने पैसो मेळववा मारवा विगेरेनी पाप क्रियामां ते जीव वर्ते छे. वली ए प्रमाणे ते अतिशय क्रूरकर्म करनारो समुद्रने तरवानी क्रिया पण करे छे. छतां तेना पापना उदयथी कंइ पण न मेळवेलो. गांठनुं गुमावी केवो थाय छे. (केबुं अपमान पामे छे.) ते बतावे छे के जेओनी साथे ते वसे छे, ते माता पिता सगां विगेरेनुं पूर्वे जेणे पोषण कर्युं छे. अने आ वखते जो ते न कमाइ लाव्यो होय तो तेओ तेनुं रक्षण करता नथी अथवा संसारी दुःखथी पार उतारता नथी. कदाच कमाइने लावे अने सगाने पोषे तो तेओ तारुं रक्षण करवा समर्थ नथी तेमज तुं तेमना आलो-कना रक्षण माटे के परलोक ना भलाना माटे समर्थ नथी. वली एम समजबुं के-महा कष्टथी मेळवेलुं धन पण साचनी राख्या छतां रक्षण आपवा योग्य नथी. ते बतावे छे.

उवाईयसेसेण वा संनिहिसंनिघओ किज्जई, इहमेगोसिं असंजयाण ‘भोयणाए’ तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जति, जेहिं वा सर्दि संवसइ ते वा णं एगया नियगा तं पुव्विं परिहरंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिहरिज्जा, नालं ते तव ताणाए ‘वा’ सरणाए वा, तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा (सू.६७)
ते घणुं खाधुं (भोगव्युं.) हवे तेमांनुं थोडुं बाकी छे. अथवा जे नथी भोगवायुं तेनो तुं संचय करे छे. अथवा उपभोग करवाने

सूत्रम्

॥३०७॥

आचा०

॥३०८॥

माटे पुष्कल सुख लेवा द्रव्यनो संचय करे छे. ते लोभीओ जीव आ संसारमां असंयत. (संसारसुखना चाहक.) ना माटे अथवा साधुनो वेश मात्र धारेला पण साधुगुणथी रहित एवाने जमाडवा माटे धन एकदुं करे छे. तेने गुरु कहे छे के ते तने अंतराय कर्मनो उदय आवतां तारी संपत्ति माटे सहायक नही थाय अथवा द्रव्य क्षेत्र काळ भावना निमित्तथी ज्यारे तने असातावेदनीयकर्मनो उदय थाय त्यारे रोगो आवतां ताव विगेरेथी तुं पीडाय छे. (त्यारे ते धन के सगां कंइ पण काम लागतां नथी) ते पापी ज्यारे तेना पापना उदयथी कोढ, क्षय रोग, विगेरेथी पीडाएलो ज्यारे तेनुं नाक झारे छे. अथवा हाथ पग गळे छे. (लथडे छे.) अथवा दम चढवाथी अशक्त थतां जे सगां बहालां साथे पोते वसेलो छे ते तेना दुःखथी कंटाली भयंकर रोग उत्पन्न थतां तेने त्यजे छे. (क्षयरोगीना आश्रममां मोकले छे.) अथवा सगांने घणो कंटाळो आये तो ते सगां तेनी बेलाइथी तेनी उपेक्षा करे. एटले बधा सगां तजीदे. अथवा न तजे तोपण ते रोगोथी बचाववा के शरणुं आपवा समर्थ नथी त्यारे रोगीए शुं करवुं! ते गुरु कहे छे के समताथी सहन करवुं.

जाणितु दुःखं पत्तेयं सायं (सू. ६८)

आ प्रमाणे बुद्धिमाने दरेक प्राणीनुं दुःख के सुख तेना पुन्य पापथी आवेलुं छे. ते विचारबुं एटले ताव विगेरेनुं दुःख आवतां पोताना करेलां कर्मनुं फल अवश्य भोगवबुं पडशे. माटे हाय पीट न करवी कह्युं छे के.

“सह कलेवर ! दुःखमचिन्तयन्, स्ववशता हि पुनस्तव दुर्लभा । बहुतरं च सहिष्यसि जीवहे! परवशो न च तत्र गुणोऽस्ति ते ॥ १ ॥”

सूत्रम्

॥३०८॥

आचार
॥३०९॥

हे शरीर! तुं बीजो विचार कर्या विना दुःखने सहन कर कारण के हाल तने स्ववशता मळी छे. ते दुर्लभ छे. पण जो तुं हायपीट करीश तो परभवमां घणां दुःख भोगवां पडशे. त्यां परवशता छे. तने त्यां विशेष लाभ नथी.

एथी ज्यां सुधी कान विग्रेनी शक्ति न हणाय अने तारा सगा तने बुद्धो थतां न निंदे अने दया लावीने तारुं पोषण करवानो वखत न आवे तथा क्षयरोगी थतां घरमांथी न काढे त्यां सुधी तुं तारो आत्मार्थ (परलोकनुं हित) साधी छे ते बतावे छे.

अणभिक्रंतं च खलु वयं संपेहाए (सू. ६९)

(मूळ सूत्रमा “च” विशेष पणा पाटे छे. खलु शब्दनो अर्थ पुनः—थाय छे.) आ प्रमाणे पोतानी उमर जती जोइने संसारी जीव वेलो बने छे. एवुं पूर्वे कहेलुं छे. माटे ते पश्चाताप न करवो पडे तेथी जुवानअवस्थामां बुद्धिथी विचारीने आत्महित करे.

प्रश्न—शुं जुवानीमांज आत्महित करवुं? के बीजी वखतमां पण करवुं!

उत्तर—बीजाए पण आत्महित ज्यारे समज्यो होय त्यारे करी लेवुं. अर्थात् बोध मले त्यारे धर्म साधी लेवो ते बतावे छे.

खणं जाणाहि पंडिए (सू. ७०)

क्षण—ते धर्म करवानो समय छे. ते आर्यक्षेत्र उत्तम कुळ विग्रे छे. अने निंदायोग्य, पोषण करवा योग्य, तथा तजावाना दो-पथी दुष्ट छे. तेवा जरा (बुद्धापो) बाळकपणुं अथवा रोग छे. ते न होय त्यारे गुरु कहे छे. हे पंडित हे आत्मज! तुं बोध पाम अने आत्महित कर अथवा खेद पामता शिष्यने गुरु कहे छे. हे शिष्य! ज्यांसुधी तारी जुवानी वीती नथी अथवा निंदापात्र थयो नथी

सूत्रम्
॥३०९॥

आचा०

॥३१०॥

अथवा पूर्वे कहेला त्रण दोषथी रहित छे, त्यांसुधी हे पंडित शिष्य द्रव्य क्षेत्र काळ भावना भेदथी भिन्न अवसरने आ प्रमाणे तुं जाण बोध पाम, ते बतावे छे.

द्रव्य क्षण ते तुं जंगमपणुं पाम्यो छे. पांच इंद्रियो छे. उत्तम कुलमां जन्म्यो छे. रूप बळ आरोग्य अने आयुष्य सारुं पाम्यो छे आ प्रमाणे उत्तम मनुष्य भव पामीने संसार समुद्रथी पार उतारवा सर्वथ चारित्रनी प्राप्ति योग्य तने अवसर मल्ह्यो छे अने अनादि संसारमां भमता जीवने आ अवसर मल्ह्यो दुर्लभ छे. कारणके चारित्र मनुष्य जन्ममां छे. देव नारकीना भवमां सम्यक्त्व तथा ज्ञानना बोध रूप सामायिक छे. अने तिर्यचमां कोकनेज देशविरति (श्रावकनां व्रत.) होय छे.

क्षेत्र क्षण ते जे क्षेत्रमां चारित्र मले ते सर्व विरति अधोलोकनागाममां अथवा तिर्यच क्षेत्रमांज छे तेमां पण अढीदीप अने वे समुद्रमां छे. तेमांपण “१५” कर्म भूमिमां छे. तेमां पण भरतक्षेत्रनी अपेक्षाए “२५॥” देशमां चारित्रधर्म प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे क्षेत्ररूप अवसर दुर्लभ जाणवो बीजा क्षेत्रोमां पहेलां बेज सामायिक छे. बीजा घणा ढीपो अने समुद्रो छे. तेमां सम्यक्त्व अने श्रुत सामायिक छे. तथा कोइकने देशविरतिनो संभव थाय छे.) काळक्षण—

काळरूप अवसर आ अवसर्पिणीमां त्रण आरा जे सुखम, दुखम, दुखम सुखम. तथा दुखम नामना त्रण आरामां धर्म प्राप्ति छे. तथा उत्सर्पिणीमां त्रीजा चोथा आरामां सर्व विरति सामायिकनी प्राप्ति छे. आ नबो धर्म पामता जीवआश्रयी कहुं पण पूर्वे धर्म पामेला तो तिर्यक् अथवा उद्ध तथा अधोलोकमां तथा बधा आरामां जाणवा. भावक्षण—

ते बे प्रकारे छे. कर्म भावक्षणनो कर्म भावक्षण कर्म भावक्षण ते कर्मनुं उपशम थवुं. क्षय उपशम थवुं अथवा सर्वथा क्षय थवुं

सूत्रम्

॥३१०॥

आचार
॥३११॥

ए त्रणमानुं कोइपण प्राप्त थाय ते अवसर जाणवो तेमां उपशम श्रेणीमां चारित्रमोहनीयउपशम थतां अंतर्मुहूर्त काळ औपशमीक नामनो चारित्र क्षण थाय छे ते चारित्र मोहनीयनो क्षय थतां अंतर्मुहूर्तनोज छद्मस्थ यथाख्यातचारित्र नामनो क्षण थाय छे. अने क्षय उपशमवडे क्षायोपशमिक चारित्रनो अवसर छे ते उत्कृष्टथी योङु ओळुं एवो पूर्व कोडी वर्षनो चारित्र काळ जाणवो. सम्यक्त्व क्षण ते अजघन्य उत्कृष्ट (मध्यम) स्थितिमां वर्तता आयुष्यवाळा जीवने छे.

अने बीजा कर्मानुं पल्योपमना असंख्येय भाग ओळुं एवा सागरोपम कोडाकोडी स्थितिवाळा जीवने छे. तेनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे.
सम्यक्त्वनुं वर्णन.

ग्रंथी-(मिथ्यात्वनी चीकणा कर्मनी बंधाएली गांठ) वाळा अभव्य जीवोथी अनंत गुणवाळी शुद्धिथी शुद्ध थएल मति, श्रुत, विभंग ए त्रण ज्ञानमांथी कोइपण साकार उपयोग जे जीवने होय ते शुद्ध लेश्या (तेजु, पदम, शुक्ल) मांनी कोइपण लेश्यावालो जीव अशुभकर्मप्रकृतिनो चार ठाणीओ रस तेने बे ठाणीओ करीने अने शुभ प्रकृतिना बे ठाणीआ (चासणीमां जेम वधारे रसना तार पडे ते प्रमाणे कर्मना भाव होय. अने आत्मा वेदे ते ठाण कहेवाय छे.) ने चार ठाणीआवाळो करी बांधतो तथा ध्रुव प्रकृतिने परिवर्त्तमान करतो भव प्रायोग्य बांधतो जीव जाणवो. हवे ध्रुव प्रकृति बतावे छे.

ज्ञानआवरणीय पांच; तथा दर्शनावरणीय नव-मिथ्यात्वनी एक-तथा सोऽ कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस कार्मण शरीर, वर्ण, गंध, रस स्पर्श अगुरुलघु उपघात-निर्माण अने पांच अंतराय ए वधी मलीने ४७ ध्रुव प्रकृति छे. ध्रुवनो अर्थ एवो छे के, ते हंमेशां बंधाय छे. मनुष्य अथवा तिर्थं आ बेमांथी कोइपण जीव ज्यारे प्रथम सम्यक्त्व मेल्वे छे, त्यारे आ २१ प्रकृति परिवर्तनवाळी बांधे छे ते नीचे सुजब छे.

देवगति तथा अनुपूर्वी मली बे. तथा पंचेद्रिय जाति वैक्रिय शरीर, अंगोपांग मली बे, तथा समचतुरस्संस्थान, पराघात, उ-

सुत्रम्
॥३११॥

आचा०

॥३१२॥

च्छ्रास, प्रशस्त विहायोगति, प्रशस्त त्रसादि दशक, शाता वेदनिय उंचगोत्र मली २१ छे. पण देव अने नारकिना जीव मनुष्यगति अने अनुपूर्वी मली बे. तथा औदारिक शरीर अंगेपांग मलीने बे. पहेलुं संघयण मलीने ए पांच सहीत शुभ बांधे छे.

तमतमा (सातमी नारकी.) वाळा तिर्यंच गति तथा अनुपूर्वी मली बे तथा नीच गोत्र सहीत बांधे छे.

आ प्रमाणे तेना अध्यवसाय उत्पन्न थतां आयुष्य न बांधतो प्रथम उपर कही गया ते जीव यथा प्रवृत्ति नामना करणवडे ग्रंथीने मेळवीने अपूर्व करणवडे मिथ्यात्वने भेदीने अंतरकरण करीने अनिवृत्तिकरणवडे सम्यकत्व मेळवे छे.

त्यारपछी क्रमवडे कर्म ओळां थतां चढता भावना शुद्ध कंडक (शुद्ध भावना अंशने कंडक कहे छे.) मां देश विरति तथा सर्व-विरति (साधुपणा)नो अवसर आवे छे. आ प्रमाणे कर्म भाव क्षण कहीने नो कर्मभाव क्षण बतावे छे.

नो कर्मभावक्षण ते आल्स मोह अवर्णवाद तथा स्थंभ (मान विगेरे)ना अभावे सम्यकत्व विगेरेनी प्रासिनो अवसर छे.

कारणके आल्स विगेरेथी हणाएलो (प्रमादी जीव) संसारथी छुटवा समर्थ मनुष्य भव पामीने पण धर्म श्रद्धा विगेरे उत्तम गुणो मेल्वतो नथी. कहुं छे के.—

“आलस्स मोहवन्ना थंभा कोहा पमाय किविणत्ता भयसोगा अन्नाणा, विकखेव कुऊहला रमणा ॥ १ ॥
आलस्य मोह अवरण (निंदा) स्थंभ (अहंकार) क्रोध प्रमाद, कृपणता, भय, शोक अज्ञान विक्षेप कुतुहल रमण आ १३ कारणो (१३ काठीआ) छे.

एएहिं कारणेहिं, लङ्घण स्तुल्लहंपि माणुस्सं । न लहइ सुइं हिअकरि संसारत्ताराणि जीवो ॥ २ ॥

सूत्रम्

॥३१२॥

आचारो
॥३१३॥

ते मळतां जीव पोते मनुष्यपणुं अमूल्य छे. ते मेळवीने पण संसारने पार उतारनार हितकानार गुरुवाणीने पामतो नथी. आ प्रमाणे चार प्रकारनो क्षण बताव्यो तेमां एम समजवुं के द्रव्यक्षणमां जंगमपणाथी श्रेष्ठ मनुष्यजन्म अने क्षेत्र क्षणमां आर्यक्षेत्र छे. काळ क्षणमां धर्म चरणनो काळ छे भाव क्षणमां क्षय उपशम विगेरे छे. आ प्रमाणे सारो अवसर पामीने धर्म आराधवो जोइए बली कहे छे के.

जाव सोयपरिणाणा अपरिहीणा, नेत्तपरिणाणा, अपरिहीणा घाणपरिणाणा अपरिहीणा जीह परिणाणा
फरि० इच्छेएहिं विरुद्धरुवेहिं, पणाणोहिं अपरिहिणोहिं आयटुं संमं समणुवासिज्ञासि (सू.७१) त्तिवेमि

ज्यांसुधी आ नाश पामनारी कायाना अपशद (निमकहरामपणा)थी काननुं ज्ञान (सांभळवुं ते) बुढापणाना के रोगना कारणे ओछुं न थाय त्यांसुधी धर्म करी लेवो.

आप्रमाणे आंख कान जीभ स्पर्शना विज्ञाननी शक्ति पण पोतानुं काम करवामां निष्फल न थाय त्यांसुधी पण धर्म साधवो. जो पांच इंद्रियोनी शक्ति ओछी थशे तो धर्म नही थाय आ शक्ति ओछी थशे तो इष्ट अनिष्टपणे जुदा जुदा ज्ञानवडे काम नहि थाय माटे ज्यांसुधी शक्ति होय त्यांसुधी आत्मानो अर्थ ते सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्ररूप साधी लेबुं. आ त्रण सीवाय वाकी बधां अनर्थ समजवां अथवा आत्माने माटे जे प्रयोजन छे. ते आत्मार्थ छे. अने ते चारित्रनुं अनुष्टान जाणवुं. अथवा “आयत” ते अपर्यवसान (अनंतपणा) थी मोक्षज छे. ते मोक्ष अर्थ छे. तेने साधी ले. अथवा आयत्त (मोक्ष.) तेज जेनुं प्रयोजन छे एवा पूर्वे कहेला सम्यक्

सूत्रम्

॥३१३॥

आचारा०

३१४

दर्शन ज्ञान चारित्र छे. तेमां निवास कर एटले शास्त्रोक्त रीतिए अनुष्ठान वडे तुं आराध, अने पछी पण वय न वीती होय ते विचारीने अवसर मेलऱ्याने कान विगेरेनुं ज्ञान ओहुं थतुं जाणीने आत्मार्थने आत्मामां धारण करजे.

अथवा ते आत्मार्थवडे एटले ज्ञान दर्शन चारित्ररूप आत्मार्थवडे आत्माने रंजीत करजे. (तेमां आनंद मानजे.) अथवा आयतर्थ जे मोक्ष छे. तेने करीथी संसारमां न आवऱुं पडे ते माटे शास्त्रमां कहेली विधिए अनुष्ठान करीने आत्मावडे (मोक्षने) पामजे.

आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. मैं श्री वर्धमानस्वामी पासे अर्थथी जे सांभळ्युं. ते हुं तने सूत्र रचनावडे कहुं लुं. आ प्रमाणे बीजा अध्ययननो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.

बोजो उद्देशो.

पहेला उद्देशानो बीजा उद्देशा साथे आ प्रमाणे संबंध छे के विषय-कषाय तथा माता-पिता विगेरेनो प्रेम विगेरेथी जे बंधन ते लोक छे. तेनो विजय करवाथी अर्थात् राग द्वेषने छोडी समभाव धारण करवाथी मोक्षनी प्राप्ति छे. अने तेनो हेतु चारित्र छे. जेम संपूर्ण भावने अनुभवे छे, एवा रूपवालो आ अध्ययननो अर्थ अधिकार पूर्वे कह्यो छे, तेमां मातापिता विगेरे लोकनो विजय करवाथी रोग अने बुद्धापानी अशक्तिर्था ज्यांसुधी अशक्त न थाय; ते पहेलां आत्मार्थ ते संयमने आराधवो; ए पहेला उद्देशामां कहुं; अने आ बीजा उद्देशामां पण ते संयमने पाळतां कदाच ते जीवने मोहनीयकर्मनो उदय थवाथी अरति थाय; अथवा अज्ञानकर्म विगेरे, तथा लोभना उदयथी पूर्वकर्मना दोषथी संयममां स्थिरता न रहे; तो उत्तम साधुए ते अरति विगेरेने दूरकरी जेम, संयममां दृढता थाय तेम करबुं. ते आ बीजा उद्देशामां बताव्युं छे. अथवा आठ प्रकारना कर्म जेम दूर थाय; ते आ अध्ययनना अर्थाधिकारमां कहुं

सूत्रम्

॥३१४॥

आचार
॥३१५॥

छे, ते केवीरीते कर्मक्षय थाय ते बतावे छे.

अरइं आउटे से मेहावी, खणंसि मुके (सू. ७२)

पूर्वमूत्र साथे एनो संबंध कहेवो जोइए ते बतावे छे. ७१ मा सूत्रमां कहुः—आत्मार्थ ते संयम छे. तेने सारी रीते पालेते संयममां कदाचित अरति थाय; तेथी उपदेश आपे छे के, अरति न करवी; ते आ ७२ मां सूत्रमां बताव्युं छे.

तथा परंपर सूत्र संबंध आ प्रभाणे छे. “खणं जाणाहि पंडिए.” एटले चारित्रनो क्षण (अवसर) मेळवीने अरति न करे; तथा प्रथमना सूत्र साथे आ संबंध छे. “सुअं मे” इत्यादि में भगवान पासे आ सांभव्युं छे के, “अरइं” इत्यादिके साधु अरति न करे.

आ अरति साधुने पांच प्रकारना आचारमां मोहना उदयथी कषाय, तथा प्रेमथी एटले मातापिता स्त्री विगेरेमां स्नेह थतां थाय छे, ते समये संसारनो स्वभाव जाणेला बुद्धिमान साधुए ते मोहने दूर करवो. जो तेम करे तो चारित्र पछे नहिं तो शुं थाय? ते कहे छे. जेम, कंडरीकने दुःख थयुं; तेम, संयममां अरति करनारने नरकगम्भ छे, तथा विषयवांच्छामां रति दूर करीने साधुनी दश प्रकारनी गुरुनी आज्ञामां रहेवारूप विगेरे समाचारीमां ते कंडरिकना भाइंडुरिकनी माफक रतिथाय; तो संयममां अरति न थाय तेज कहे छेः-

साधु संयममां रति करे (आनंद माने) जेथी तेने कोइपण प्रकारनी बाधा (अडचण) न आवे; तथा आलोकमां पण संयम शिवाय बीजुं सुख छे, एवुं मनमां पण न लावे. कहुं छे के:—

“क्षितितलशयनं वा प्रान्तभैक्षाशनं वा, सहजपरिभवो वा नीचदुर्भाषितं वा, महति फलविशेषे नित्य-

सूत्रम्

॥३१५॥

आचारा०
॥३१६॥

सभ्युद्यतानां, न मनसि न शरीरे दुःख सुत्पादयन्ति ॥ १ ॥

पृथ्वीनां तक्षमां शयन छे तुच्छ भिक्षानुं भोजन, अथवा कुद्रती लोकनुं अपमान, अथवा नीच पुरुषोनां महेणां सांभल्वां; आटलुं छता उत्तम साधुओ मोटाफळ (मोक्षने) माटे निरंतर उद्यम करनारा छे. तेमने मनमां के, शरीरमां पूर्वे कहेलां कृत्य कंपण दुःख उपजावी शक्तां नथी. (मोक्षार्थी—साधु तेने गणकारता नथी.)

तणसंथारनिसण्णोऽवि, मुणिवरो भट्ठ रागमयमोहो । जं पावइ मुक्तिसुहं, तं कत्तो चक्रवट्टीवि? ॥ २ ॥”
घासना संथारे बेठेलो जे मुनि छे, अने तेणे राग-मद, मोह त्यज्यां छे, तेवो मुनिज मुक्ति-मुख पामे छे, तेवुं मुख चक्रवर्तीं पण क्यांथी पामे!
अहीं चारित्र मोहनीयकर्मना क्षय उपशमथी जे पुरुषने चारित्र मळ्यु छे, तेने पाढो मोहनो उदय थतां वेर जवानी इच्छावालाने आ
मूत्रवडे उपदेश अपाय छे, अने ते संबंधमां जे कारणोथी संयममांथी भ्रष्ट थवाय छे, ते हेतुओने निर्युक्तिकार कहे छे.

विइउद्देसे अदढो उ, संजमे कोइ हुज्ज अरईए । अन्नाणकम्मलोभा, इएहिं अज्ञत्थ दोसेहिं ॥ १९७ ॥
(पहेला उद्देशामां निर्युक्तिनी गाथा घणी कही; अने आ उद्देशामां आ एकज छे, तेथी मंदबुद्धिवाला शिष्यने आरेका (शंका)
थाय के, आ एक पण पहेला उद्देशानी हशे; ते शंका दूर करवा बीजो उद्देशो एवुं गाथामां लखवुं पडयुं छे.) बीजा उद्देशामां बताव्युं
के, कोइ कंडरीक जेवा साधुने १७ प्रकारना संयममां मोहनीयना उदयथी अरति थाय; अने तेथी संयममां ढीलापणुं थाय; अने ते
मोहनो उदय मनमां रहेला जे दोषो छे, तेनाथी थाय छे, ते दोषो अज्ञान, लोभ, विग्रे छे.

सूत्रम्
॥३१६॥

आचा०
॥३१७॥

एट्ले आदि शब्दथी इच्छा मदन काम विगेरे पण लेवा ते अज्ञान लोभ काम विगेरेथी साधुने अरति थाय छे. ते बताव्युं. शंका-अरतिवाला बुद्धिवानने आ ७२ मा सूत्रवडे उपदेश अपाय छे के संयममां अरति थाय तो बुद्धिवान साधुए अरति दूर करवी परंतु संसारनो स्वभाव जाणेलो आवुं कहेवाथी ते अरतिवालो थाय नही अने जो अरतिवालो थाय तो संसारनुं स्वरूप जाणनारो विद्वान न कहेवाय आ वेने परस्पर विरोध होवाथी जेम एक जग्याए छाया अने तडको न रहे ते अहीं ते बुद्धिमान न कहेवो अथवा अरतिवालो न कहेवो. कह्यं छे के.

तज्ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः। तमसः कुतोऽस्ति शक्तिर्दिनकरकिरणायतः स्थातुम्?

जेना उदयथी राग गण (संसारप्रेम) उत्पन्न थाय छे. तेने ज्ञान न कहेबुं कारणके ज्यां सूर्यना किरणो प्रकाशीत थयां होय त्यां अंधाराने रहेवानी शक्ति क्यांथी होय? विगेरे छे.

जे अज्ञानी जीव मोहथी चित्तमां विकल्प करे ते विषयमुख्यथी निश्चय (नकी) रागद्वेष विगेरे सर्व जोडलां जे संयमना शत्रु छे, तेमां रति करे अने संयममां अरति करे.

अज्ञानान्धाश्चदुलवनितापाङ्गुञ्जिक्षेपितास्ते; कामे सकिं दधति विभवाभोगतुङ्गार्जने वा; विद्वच्चित्तं भवति हि महन्मोक्षमार्गेकतानं, नाल्पस्कन्धे विटपिनि कषत्यंसभित्तिं गजेन्द्रः ॥ १ ॥

अज्ञानथी आंधला थएला, सुंदर स्त्रीओना अपांगथी ढामाढोळ थएला कामीओ काममां प्रेम धारण करे छे. अथवा वैभवना

सूत्रम्

॥३१७॥

आचार्य

॥३१८॥

विस्तारने मेळववा चाहे छे. पण जेओ विद्वान छे, तेनुं चित्त मोटा मोक्ष मार्गमां एकतान वालुं छे. कारणके श्रेष्ठ हाथी नाना पातळा थडबाला झाडनी साथे पोतानुं शरीर घसतो नथी.

आचार्यनो उत्तरः—अमे तेने जुहुं कहेता नथी. कारणके, चारित्र पापेलाने आ उपदेश छे, अने चारित्रप्राप्ति ज्ञान शिवाय नथी; कारण के चारित्रनुं कारण ज्ञान छे अने कार्यए चारित्र छे. तथा ज्ञान, अने अरति तेने विरोध नथी; परंतु रतिनो विरोधी अरति छे. तेथी संयममां जेने रति छे, तेनी साथे अरति बाधारूप छे, परंतु ज्ञाननी साथे तेनो विरोध नथी; कारणके, ज्ञानीने पण चारित्र मोहनीयना उपशमथी संयममां अरति थाय छे, कारणके, ज्ञान पण अज्ञाननुं बाधकज छे, पण संयमनी अरतिनुं बाधक नथी; तेज कहुं छेः-

ज्ञानं भूरि यथार्थ वस्तुविषयं स्वस्य द्विषो बाधकं, रागारातिशमाय हेतुमपरं युड्के न कर्त्त स्वयम्। दीपो यत्तमसि व्यनक्ति किमु नो रूपं स एवेक्षतां, सर्वः स्वं विषयं प्रसाधयति हि प्रासङ्गिकोऽन्यो विधिः ॥१॥”

घणुं ज्ञान छे, ते यथार्थ वस्तुविषय संवेदी छे, ते पोताना शत्रु अज्ञाननुं बाधक छे. रागनो शत्रु, शम (शांतिने) माटे बीजो हेतु पोते जोडतो नथी. जेम दीवो छे ते पोते अंधारामां रूपने प्रगट करे छे, तेज अहींया रूपने जुओ; कारणके, सर्व प्रासंगीक विधि पोतपोताना विषयने साधे छे. तथा आचार्य कहे छे केः—आ तमारा कानमां आव्यु नथी.

‘बलवानिन्द्रियग्रामः, पण्डितोऽप्यत्र मुद्द्यतोति’

इंद्रियसमूह बलवान छे, अने तेमां पंडित पण मुँझाय छे, एथी तमारुं कहेबुं कंइ विसातमां नथी.

सूत्रम्

॥३१८॥

आचारा०

॥३१९॥

अथवा जेने अरति प्राप्त न थइ होय; तेनेज एम कहेवाय छे, पण आ उपदेश संयम-विषयमां बुद्धिमान पुरुषने कहेवाय के, संयममां अरति न करवी; तथा संयममांथी अरति दुर करनारने केवा गुण मळे ते कहे छेः—

“खण्ण सि मुके” विगेरे बारीक काळने क्षण कहे छे. ते क्षण, जुनी साडी (वस्त्रने) फाइतां जेटली वार लागे; तेथी पण बारीक काळ सपय छे. आवा सूक्ष्म संयममां पण कर्म जे आठ प्रकारनां छे, अथवा संसारबंधन छे ते बंधन नथी. भरत महाराजा माफक मोह मूकी दे, तो तेनुं कल्याण थइ जाय. (केवलज्ञान पामीने मोक्षमां जाय;) अने जेओ उपदेश न माने; तेओ कंडरीक मुनि माफक चार गतिमां भ्रमण करे छे, अने दुःखसागरमां ढुबे छे, तेज कहे छेः—

अणाणाय पुट्ठावि एगे नियट्टिति, मंदा मोहेण पाउडा, अपरिग्गहा भविस्सामो, समुट्ठाय लङ्घे कामे अभिगाहइ, अणाणाए मुणिणो पडिलेहंति, इत्थ मोहे पुणो सन्ना नो हव्वाए नो पाराए (सूत्र-७३)

हित मानबुं अहित छोडबुं, ए जिनेश्वरनी आज्ञामां छे. तेथी विरुद्ध चालबुं ते अनाज्ञा छे. जे पुरुषो आज्ञावहार थइने परिषह अने ऊपसर्गथी कंटाळीने, अथवा मोहनीयकर्मना उदयथी कंडरीक विगेरे मुनिओनी माफक संयमथी भ्रष्ट थाय छे, ते जडपुरुषो जेमने करवा न करवानो विवेक नथी; तेओ मोहथी, अथवा अज्ञानथी घेरायला छे. कहुं छे केः—

“अज्ञानं खलु कष्टं, क्रोधादिभ्योऽपि सर्वपापेभ्यः। अर्थं हितमहितं वा न वेत्ति येनावृतो लोकः ॥ १ ॥”

खरेखर, क्रोध विगेरे बधां पापोथी पण अज्ञान मोडुं पाप छे, ते घण्णुं दुःख आपनार छे, ते अज्ञानथी घेरायलो माणस पोताना

सूत्रम्

॥३१९॥

आचा०

॥३२०॥

हित-अहित पदार्थने जाणतो नथी.

आ प्रमाणे मोहथी घेरायलो जडमाणस चारित्र पामेलो छतां, कर्मना उदयथी, अथवा परिसहना उदयमां चारित्र धारण करेलो चारित्र मूकवा इच्छा करे छे अने बीजा साधुओ पोतानी रुची प्रमाणे वृत्ति रचीने जुदा जुदा उपायोवडे लोक पासेथी पैसा ग्रहण करता छता कहे छे केः-अमे संसारथी खेद पामेला छीए; अने मोक्षनी इच्छावाळा छीए. तोपण, तेओ (अंतरंगत्यागी न होवार्थी) जुदा जुदा आरंभमां, तथा विषय-अभिलाषामां वर्ते छे ते बतावे छे.

मन, वचन अने कायाना कर्मवडे जेनाथी घेराय ते परिग्रह छे. ते परिग्रह जेमनामां नथी; ते अपरिग्रहवाळा अमे थइथुं; एवुं बौद्धमत विगेरेना साधुओ माने छे, अथवा जैनदर्शनमां जे साधुओए साधुवेष पहेरेलो छे, तेओ पछी इच्छानुसार (भोळा माणसोने ठगीने) परिग्रह धारीने भोगो भोगवे छे. जे प्रमाणे निस्पृहता धारवी जोइए; तेज प्रमाणे बीजां महाव्रतो पाळवां जोइए; एटले जैनेतर मतवाळाए, अथवा पास्त्य (वेष मात्र धारी जैनसाधु) जेम परिग्रह धारेछे तेवीरीते मोढेथी कहे के, अमे सर्व जीवोना रक्षक (अहिंसक) छीए; छतां तेओ स्वार्थना माटे हिंसा करे छे, तेवीजरीते उपरथी कहे छे केः-अमे साचुं बोलीए छीए; अने खरीरीते तो, तेओ जुदुं बोले छे, जेम चोरी करता होय; छतां कहे के, अमे चोरी करता नथी; तेथी आवुं करनारा शैलुष (ठगनी) माफक बोलवानुं जुदुं, अने करवानुं जुदुं. एवा जगतने ठगनारा भोगनी इच्छाथीज वेष मात्रने धारे छे. कहु छे केः—

“स्वेच्छाविरचितशास्त्रः प्रत्रज्यावेषधारिभिः क्षुद्रैः। नानाविधैरुपायैरनाथवन्मुष्यते लोकः ॥ १ ॥”

सूत्रम्

॥३२०॥

आचारो
॥३२१॥

पोतानी इच्छा मुजब शास्त्र बनावनारा, अने दीक्षामां वेष धारण करनारा क्षुद्र मनुष्योए जुदा जुदा उपायोथी अनाथने जेम लुंटारो लुंटे; नेम आ भोला लोकोने आ साधुउगो लुंटे छे, तेथी आ प्रमाणे वेषधारी साधुओ मेळवेला भोगोने भोगवे छे, अने तेवा बीजा भोगो मेळववा, तेवा तेवा उपायोमां वर्ते छे. ते कहे छे के:—

वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध पोतानी बुद्धिए मुनिना वेषने लजावनारा संसार सुखना उपायना आरंभमां वारंवार लागे छे. (मचेछे) आ विषयसुखना अज्ञानरूप भावमोहमां वारंवार कादवमां खुंचेला हाथी माफक वहार पोते पोताने काढवाने समर्थ नथी. जेम कोइ महा नदीना पूरमां वचमां जडने डुब्यो होय तो ते जलदीथी तरवा के सामे किनारे आववा समर्थ नथी एज प्रमाणे कोइपण निमित्तर्थी प्रथमथी घर स्त्री पुत्र धन धान्य सोनुं रत्न तांबु दास दासी विगेरे वैभव छोडी त्यागदृत्ति स्वीकारीने आरातीयतीर (पाढो आववा के किनारे जवा ते समर्थ नथी ते) समान घरवासना सुखथी नीकलेलो साधु थयो अने फरी ते वमेला भोगने पाढो ग्रहण करवा इच्छा करे तो संयम पण जाय तो मोक्षमां जडशके नहि तेम घरवालां पण संघरे नही एटले बंने बाजुथी जुदी पडेली मुक्तोली माफक साधुपण जो संसार बांच्छना करे तो न ग्रहस्थ रहे तेम न साधु रहे तेथी ते बंने प्रकारे भ्रष्ट छे. कद्युं छे के.

“इन्द्रियाणि न गुतानि, लालितानि न चेच्छया । मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य, न भुक्तं नापि शोषितम् ॥१॥”

जेणे इंद्रियोने कवजे लीधो नथी अथवा इच्छानुसार ते इंद्रियोने विषय सुखमां जोडी नथी तेणे मनुष्यपणुं पासीने न भोग भोगव्या न त्यागदृत्ति स्वीकारी (आ वधानो केहेवानो सार ए छेके साधुए साधु वेष धार्या पछी गमे तेटलां कष्ट आवे; तोपण धीरज राखी संयम पालवुं.)

सूत्रम्
॥३२१॥

आचारो

॥३२२॥

जे ओ उपर कहेली अप्रशस्त (संसारी विषय सुख) रतिथी दूर थयला छे, अने उत्तम रति (चारित्रिमां प्रेमवाला) छे, ते केवा होय छे ते बतावे छे.

विमुक्ता हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो, लोभमलोभेण दुगुंछमाणे लङ्घे कामे नाभि गाहइ ७४

द्रव्यथी एट्ले धन सगाना अनेक रीतना प्रेमथी मुकायला; अने भावथी विषय कषायथी प्रत्येक समये छुटता साधुओ जे भ-विष्यकाळमां वधारे वधारे निर्लोभी बने छे, ते पुरुषो सर्व प्राणीने समानभावे गणी निर्ममत्ववाला बनी (संसारथी) पारगामी बने छे. पार ते मोक्ष छे, कारणके, संसार-समुद्रना किनारे जवानी वृत्तिनां कारणो ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण छे, ते त्रणने पार कहे छे. जेम, लोकमां सारा वरसादने चोखानो वरसाद कहे छे. एट्ले कारणने कार्यमां समाव्युं; तेथी ते प्रमाणे ज्ञान दर्शन चारित्रनो परे जवानो आचार जेमनो छे, ते ओ संसारना मोहथी के, विषयकषायथी मुक्त थाय छे.

प्रश्नः—ते ओ केवीरीते संपूर्ण पारगामी थाय ?

उत्तरः—जोके, आ लोकमां लोभछे, ते वधाने तजवो दुर्लभ छे. जेमके क्षपक ऐणीमां चडेला मुनिने पण ओछो ओछो करतां जरा जरापण लोभ रहे छे, तेवा जरा लोभने पण उत्तम साधु संतोषवडे पूर्वना लोभने निंदतो; अने छोडतो सामे आवता सुंदर विलासोने (लोको प्रार्थना करे; छतां पण) सेवतो नथी जेम भहात्मा पोताना शरीरमां पण महत्व रहित थयलो छे, ते पर वस्तुना विषयसुखमां लुब्ध थतो नथी जेमके, ब्रह्मदत्त, चक्रवर्तिए पोताना पूर्वभवना भाइ चित्रमुनिने ओळखीने प्रार्थना कर्या छतां पण,

सूत्रम्

॥३२२॥

आचारो

॥३२३॥

तेणे भोगो न स्वीकार्या.

उपर प्रमाणे सुंदर भोगो जेणे त्याग्या; ते त्यागवाथी बीजुं पण त्यागेलुं जाणवुं ते आ प्रमाणे-क्रोधने क्षमाथी, तथा मानने कोमळताथी, मायाने सरळताथी, ए प्रमाणे बधा दुर्गुणोने निंदी उत्तम साधु छोडे छे.

सूत्रमां लोभ लेवानुं कारण ए छे के, ते बधा कषायमां मुख्य छे ते बतावे छे. ते लोभमां पडेलो साध्य असाध्यना विवेकथी शुन्य छे तथा कार्य अकार्यना विचारथी रहित बनी ने एक धनमांज दृष्टि राखनारोज पापना मूळमां उभो रहीने सर्व क्रियाओ करे छे कह्यां छे के.

“धावेइ रोहणं तरइ सायरं, भमइ गिरिणिगुंजेसुं । मारेइ बंधवंपिहु पुरिसो तो होइ धणलुङ्गो ॥१॥

जे धननो लोभीओ होय ते पहाड चढे छे समुद्र तरे छे पहाडनी झाडीमां भमे छे बंधुओने पण मारे छे.

अडइ बहुं वहइ भरं, सहइ छुहं पावमायरइ धिढो। कुल सील जाइपच्चय, विइं च लोभहुओ चयइ॥२॥”

घणुं भटके छे घणोभार वहन करेछे भूखने सहे छे. पाप आचरे छे कुल शील जाति विश्वास धीरज ए बधाने लोभथी पीडा-एलो घृष्ण पुरुष त्यजे छे.

तेथी आ प्रमाणे उत्तम साधुए प्रथमथी लोभ विगेरेथी दीक्षा लीधी होय अने तेवा भोग मळतां लालच थायतो पण मन दृढ करीने लोभ विगेरेनो त्याग करवो केटलाक लोभ विना पण दीक्षाले छे ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥३२३॥

आचारो
॥३२४॥

विणावि लोभं निवखस्म एस अकम्मे जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकंखइ, एस
अणगारित्ति पबुच्चइ, अहो य राओ परितप्पमाणे कालाकालसमुद्धाइ संजोगट्टी अट्टा-
लोभी आलुंपे सहकारे विणिविट्टचित्ते इत्थ सत्थे पुणो पुणो से आयबले से नाइबले
से मित्तबले से पिच्चबले से देवबले से रायबले से चोरबले से अतिहिबले से कि-
विणबले से समणबले, इच्चेएहिं विरूबरूवेहिं कज्जेहिं दंडसमायाणं संपेहाए भया
कज्जइ, पावमुक्खुत्ति मन्नमाणे, अदुवा आसंसाए (सू० ७५)

भरतचक्रवर्तीं विगेरे कोइ लोभना कारण विना पण दीक्षाने मेळवीने अथवा सूत्र पाठांतरमां विणइत्तुलोभं छे तेनो अर्थ
संज्वलन लोभने जडमूळथी दूर करीने पोते घाति कर्मनी चोकडीने दूर करीने आवरण रहित निर्मल केवळज्ञान प्राप्त करी सर्व
विशेषथी जाणे छे अने सामान्यथी जुए छे. अर्थात् जेणे पूर्वे बतावेलो अनर्थोनुं मूळ जे लोभ छे. तेने तज्यो छे तेनो लोभ
दूर थतां मोहनीयकर्म क्षय थतां अवश्ये घातीकर्मनो क्षय थाय छे अने निर्मल केवळज्ञान प्रगट थाय छे तेथी बीजां कर्म जे भवउप
ग्राहिक छे ते पण दूर थाय छे (जेनां घाती कर्म दूर थयां तेना अघाती कर्म सर्वथा स्वयं नष्ट थाय छे.) तेथी लोभ दूर थतां अ-
कर्मा एवुं विशेषण सूत्रमां आप्युं छे. आ प्रमाणे लोभतज्वो दुर्लभ अने तजवाथी अवश्य कर्मनो क्षय थाय छे तेथी शुं करवुं ते कहे

सूत्रम्
॥३२४॥

आचारा०

॥३२५॥

छे प्रति उपेक्षणा एटले गुण दोषनो विचार करी गुणोने ग्रहण करवा अने लोभ छोडवो अथवा लोभनां कडवां फळने विचारी तेना अभावमां जे गुण तेने चाहीने ते लोभने जे त्यजे तेनेज अणगार कहेवो.

अने जे अज्ञानवडे मनमां मुंझाएलो छे ते अप्रशस्त मूळ गुण स्थानमां रही विषय कषाय विगेरेमां फसेलो होय ते दुःख पामे छे ए बधुं फरीथी सारो साधु याद करे के संसारी जीव अलोभने लोभ वडे निंदे अने विशयसुखमळतां तेने भोगवे अने लोभने छोडी साधु थइ पाळो लोभमां गृद्ध बनी बहोळा कर्मवालो कंइ पण जाणे नहीं तथा जुवे नहीं (कामान्ध जन्मथी आंधळा करतां पण वथारे आंधळो छे) अने हृदयमां चक्षु भीचावाथी विवेकरहित बनी भोगोने वांच्छे छे. अने पहेला उद्देशमां जे बताव्युं ते अहि जाणवुं.

आ प्रमाणे उत्तम साधु विचारे छे के लोभी गत दिवस दुख पामतो अकाळमां उठतो भोग वांच्छुक अर्थ लोभी लुंटारो विचार वगरनो घेला जेवो बने छे अने पृथ्वी विगेरे जीवोने उपघात करी शस्त्रो वारंवार चलावे छे.

बली ते पोतानी शरीर शक्ति वधारवा जुदा जुदा उपायो वडे आलोक परलोकना सुखने नाश करनारी क्रिया करे छे ते नीचे मुजब छे.

मांसथी मांस वधे तेथी पंचेन्द्रिय जीवोने हणे छे तथा चोरी विगेरे करे छे सूत्रमां बताव्युं छे एज प्रमाणे संसारी जीव स-गांने पुष्ट करवा मित्रने पुष्ट करवा मथे छे एटले ते शक्तिवालां हशे तो हुं तेमनी मददथी आपदामांथी बचीश तथा प्रेत्य बळ व-धारवा वस्त (घेडुं) विगेरेने ते हणे छे, तथा देवबळ वधारवा (पसन्न करवा) रांधवा रंधावानी क्रिया (नैवेद्य करे छे,) अथवा राजानुं बळ वधारवा राजानुं इच्छित करे छे, अथवा अतिथीनुं बळ वधारवा चाहे छे, ते अतिथी निःस्पृह होय छे. कहुं छे के;—

सूत्रम्

॥३२५॥

आचा०
॥३२६॥

“तिथिपवेंत्सवाः सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना । अतिथिं तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विदुः ॥ १ ॥”

जे महात्माए तिथिना, तथा पर्बना वधा महोसत्वो तज्या छे, तेने अतिथि कहेवो; अने बाकीनाने अभ्यागत कहेवो; तेनो सार आ छे. तेना माटे पण प्राणीओने दुःख न आपवुं एज प्रमाणे कृपण-श्रमण विगेरेने माटे पण जाणवुं जे संसारीजीव बीजाओने माटे के, पोतानां आलोकनां सुख छे, तेना माटे जुदी जुदी जातनां हिंसककृत्यो करी; एटले पिंडदान विगेरे आपी बीजा जीवोने दुःख आपे छे, तेओने अल्पलाभने बदले महान दुःख मलवुं जाणीने उत्तम पुरुषेते पाप न करवुं जोइए. छतां, अज्ञानथी, अथवा मोहथी हणायलो भयथी तेवां पाप करे छे, अथवा कुगुरुना खोटा उपदेशथी पापकर्ममां पण, धर्म मानी दुष्ट कृत्य करे छे, अथवा कांडपण आशाथी पाप करे छे, ते बतावे छे. अग्नि जे छ जीवनिकायनुं घात करनार शख्त छे, छतां ते अग्निमां पीपळानुं, अरणीनुं लाकडुं होमे छे, अथवा समित्ति (एक जातनुं लाकडुं) लाज्य, (धाणी) विगेरे नांखे छे, अने तेमां धर्म समजे छे, तथा बापनुं श्राद्ध करवामां घेटा विगेरेनुं मांस रांधीने ब्राह्मणोने जमाडे छे, अने वधेलुं पोते खाय छे. (आ रीवाज गुजरात विगेरे देशोमां नथी; पण बंगाल दक्षिण विगेरेमां छे.)

ते आ प्रमाणे जुदा जुदा उपायोवडे अज्ञानथी हणायली बुद्धी वळा पापथी छुटवाना बहाने दंड मेलववारूप ते ते क्रियाओ प्राणी ओने दुःख आपनारी करे छे. अथात् अनेक शत करोडनी संख्याना भवमां भोगववा छतां पण न छुटाय तेवुं अघोर पाप करे छे, अथवा पापथी छुटवानुं मानीने अज्ञानदशाथी नवां पापज बांधे छे.

सूत्रम्
॥३२६॥

आचार
॥३२७॥

अथवा न मेळवेलुं फरीथी मेलववानी इच्छाथी प्राणीओने दुःख आपी पोते दंड मेळवे छे ते आ प्रमाणे:—
आ मने वीजा लोकमां, अथवा आलोकमां, पछीथी कांइ ऊंचपद अपावशे; एवी इच्छाथी ते पाप करवामां वर्ते छे.
अथवा पोते धननी आशाथी मूढ बनीने राजानी सेवा करे छे, (अने राजाने खुशी करवा प्रजाने पीडवाना अनेक पाप करे छे.) कह्यु छे के:—

आराध्य भूपतिमवाप्य ततो धनानि, भोक्ष्यामहे किल वयं सततं सुखानि;
इत्याशया धनत्रिमोहितमानसानां, कालः प्रयाति मरणावधिरेव पुंसाम ॥१॥

राजाने प्रसन्न करीने तेनी पासेथी धन मेळवीशुं अने पछी अमे रोज सुख भोगवीशुं. आवी आशाथी धनथी मोह पामेला मनवाला माणसेने आखी जींदगी सुधीकाल वीती जाय छे. (पण तेओ धर्म आराधी शक्ता नथी.)

एहो गच्छ पतोक्तिष्ठ, वद मौनं समाचर । इत्याद्याशाग्रहग्रस्तैः, क्रीडन्ति धनिनोऽर्थिभिः ॥२॥

आव जा, पड, उठ, बोल, चुप रहे आ प्रमाणे बोलनारा धनवाला छे. ते धननी इच्छवाला गरीबोने वारंवार रमाडे छे. आ आ प्रमाणे सारा साधुए समजीने थुं करबुं ते शास्त्रकार कहे छे.

तं परिपणाय मेहावी नेव सयं एषहिं कज्जोहिं दंडं समारंभिज्ञा नेव अन्नं एषहिं कज्जोहिं दंडं समा-

सूत्रम्

॥३२७॥

आचार
॥३२८॥

रंभाविज्ञा, एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंतंपि अन्नं न समणुजाणिज्ञा, एस मगे आरिएहिं पवेइए,
जहेत्थ कुसले नोवलिंपिज्ञासि, त्तिवेमि, (सू० ७६) लोगविजयस्स वितिओ उद्देसो ॥२॥

पहेला अध्ययनमां परिज्ञा बतावेली छे. तेमां बे प्रकारनां स्वकाय अने परकायवालां दुःख देनारां शह्वने चलाववां नहीं अ-
थवा पहेला उद्देशामां बतावेल विषय तथा मातापिता संबंधी प्रेमनुं अप्रशस्त गुणमूळ स्थान समजीने तथा काळ अकाळे रखडबुं ते
समजीने अथवा अमूल्य अवसर तथा सुगुरुनो बोध तथा पांचे इन्द्रियोनुं विचक्षणपणुं तथा वृद्धावस्थामां तेनी हानी विगेरे समजीने
तथा आज उद्देशामां शरीर शक्ति वधारवा अथवा सगावहालांनुं बळ वधारवा दंडनुं लेबुं (नवा पाप बांधवानुं) ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने
मर्यादामां रहेला मुनिए प्रत्याख्या न परिज्ञावडे पाप कृत्य छोडी देवा ते बतावे छे.

पोते जाते शरीर शक्ति वधारवानां के बीजां दुष्ट कृत्यो करवा वडे जीवोने दुःख न आपे तेम हिंसा जुठ विगेरे पाप कृत्य
बीजा पासे न करावे, अथवा पापीओने मन वचन अने कायाथी कोइ पण रीते सहायता के अनुमोदना न करे.

आवो सर्व जीवने अभयदान देवानो उपदेश तीर्थकरे कर्यो छे. तेबुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे.

ज्ञान विगेरेथी युक्त भावमार्ग जेनाथी कोइ पण जातनुं दूपण के दंड के पाप लागवानां नथी ते मन वचन अने कायाए करी
करवो कराववो अने अनुमोदवो जोइए तेम करनारा आर्य पुरुषो छे. एटले जेटला पाप धर्म छे. तेमने छोडी सर्व प्रकारे उत्तम
मार्गमां जे जीवो जोडायला छे तेओ संसार समुद्रथी किनारे पहोचेला अने घातीकर्मनो अंश पण नाश करनार जीवो संसारनी

सूत्रम्

॥३२८॥

आचार
॥३२९॥

अंदर रहेला वधा भावोने जाणनारा सर्वज्ञ तर्थकर प्रभुए देव मनुष्यनी सभामां वधाए समजी शके तेवी तथा वधाना मनना संशय छेदनारी वाणीवडे आ मार्ग कहो छे. पोते ते प्रमाणे बतेला छे एवो आ मार्ग जाणीने उत्तम पुरुषे उपर बतावेलां पाप कृत्योने छोडीने वधां तत्व जाणीने पोतानो आत्मा पापोमां न लेपाय तेम सर्व प्रकारे करबुं. आ प्रमाणे हुं कहुं छुं बीजो उद्देशो समाप्त थयो. हवे त्रीजो उद्देशो कहे छे.

बीजा उद्देशानी साथे त्रीजानो आ प्रमाणे संबन्ध छे. गया उद्देशामां कहुं के संयममां दृढ़ता करवी अने असंयममां उपेक्षा करवी अने ते बन्ने पण कषाय दूर करवाथी थाय तेमां पण मान उत्पत्तिना आरंभथी उंच गोत्रमां जन्मे छे ते उत्थापेलो (अहंकारी) थाय तेथी ते दूर करवा कहेवाय छे तेथी बीजा अने त्रीजानो आ संबन्ध छे के बुद्धिमान साधु राग द्वेषमां न लेपाय तेज प्रमाणे बुद्धिमान साधु उंच गोत्रना अभिमानमां पण न लेपाय शुं मानीने अहंकार न करवो ते सिद्धांतकार बतावे छे.

से असइं उच्चागोए असइं नीआगोए, नो हीणे नो अइरिसे नोऽपीहए, इय सखाय को गोयावाइ को माणावाई? कंसि वा एगे गिज्जा, तम्हा नो हरिसे नो कुप्पे, भूएहिं जाण पडिलेह सायं सू. ७७

आ संसारी जीव अनेक बार मान सत्कारने योग्य एवा उंच गोत्रमां आव्यो छे तथा अनेकबार नीच गोत्रमां ज्यां लोको निंदे तेवामां पण पोते जन्म्यो छे ते कहे छे. नीच गोत्रना उदयथी अनन्तकाळ तिर्यचगतिमां संसारी जीव रहेल छे त्यारपछी भट्कनो जीव नाम कर्मनी ९२ उत्तर प्रकृतिना कर्मवालो बजी तेवा तेवा अध्यवसाये उत्पन्न थयेलो आहारक शरीर तेनुं संघात बन्धन

सूत्रम्
॥३२९॥

आचार्य

॥३३०॥

अंगोपांग देवगति तथा अनुपूर्वी मली बे तथा नरकगति अने अनुपूर्वी मली बे ए वैक्रिय चतुष्टय (चोकटु) ए १२ कर्म प्रकृतिने निर्लेप करीने (दूर करीने) वाकीनी ८० प्रकृतिवालो बनी तैजस अने वायुकायमां उत्पन्न थयो त्यारपछी मनुष्यगति तथा अनुपूर्वी मली बे ते दूर करीने उंच गोत्रने पल्योपमना असंख्येय भागवडे उद्गल करे छे. एथी तैजस वायुकायनो पहेलो भांगो थयो. ते आपमाणे नीच गोत्रनो बन्ध, अने उदय पण अने तेज कर्मनी सकर्मता (सत्ता) छे. त्यांथी नीकळीने बीजी कायना एकेन्द्रियमां आवीने उपजे तो, तेज भांगो थाय; अने त्रसकायमां पण अपर्याप्तअवस्थामां पण तेज भांगो थाय; अने ज्यांसुधी उंच गोत्रनो निर्लेप न थाय; तो बीजो चोथो एम बे भांगा थाय ते बतावे छे. नीच गोत्रनो बंध, अने उदय, तथा तेज कर्मपणाथी सत्ताथी उभयरूपे बीजो भागो थाय; तथा ऊंच गोत्रनो बन्ध नीच गोत्रनो उदय, अने सत्कर्मपणु बन्ने रूपे छे. ए चोथो भांगो छे, पण वाकीना चार भांगा नथीज थतांः कारणके:—तिर्यच्योनिमां उंच गोत्रना उदयनो अभाव छे. तेज उंच गोत्रना (अहंकारथी) उद्गलनवडे कलंकवाला भावमां आवेलो जीव अनंतकाळ सुधी एकेन्द्रियमां रहे छे, अथवा उद्गलन थया विना तिर्यचमां अनंत उत्सर्पिणी, अने अवसर्पिणी रहे छे.

प्रश्न—आवलिकाना संख्येय भाग समय संख्यावाला पुद्गल परावर्त एम जोइए; पण पुद्गलपरावर्त केम जोइए ?

आचार्यनो उत्तरः—जेओ औदारिक, वैक्रिय तैजस भाषाअनापान, (श्वासोश्वास) मन=(आ छ थाय छे, पण सात लखेल छे. आहारक ए टीकामां लखबुँ रही गयुँ छे.) कर्मसम्प्रकथी संसारना बचला भागमां पुद्गलो आत्मानी साक्षे एकमेकपणे परिणमेलाछे, ते

सूत्रम्

॥३३०॥

आचार्य
॥३३१॥

पुदल परावर्त छे, एवुं केटलाक आचार्य कहे छे.

बीजा आचार्यनो मत एवो छे के, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भाव, एम चार भेदे वर्णवे छे, अने आ प्रत्येक पण बादर, अने सूक्ष्म एम वे भेदे अनुभवे छे, तथा द्रव्यथी बादर जे औदारिक, वैक्रिय, तैजस कार्मणना चतुष्टय (चोकडावडे) सर्व पुदलो ग्रहण करीने छांडी दीधा त्यारे थाय छे, अने सूक्ष्म छे, ते एक शरीरवडे बधा पुदलो स्पर्शवाला थाय त्यारे जाणबुं.

(२) क्षेत्रथी बादर ज्यारे क्रम, अने उत्क्रमवडे मरतां जीवने बधा लोकाकाशना प्रदेश स्पर्शवाला थाय त्यारे होय छे, अने सूक्ष्म तो त्यारेज जाणवो के एक विवक्षित आकाशखंडमां मरेलो, ज्यारे तेना प्रदेशोनी दृष्टि थाय त्यारे सर्वे लोकाकाशने व्याप्त थाय त्यारेज जाणबुं.

(३) काळथी बादर ज्यारे उत्सर्पिणी, अने अवसर्पिणीना जेटला समयो छे, तेटला क्रम, अने उत्क्रमवडे मरण पामवावडे स्पर्श करे छे त्यारे जाणबुं; पण सूक्ष्म तो, उत्सर्पिणीना प्रथम समयथी आरंभीने क्रमवडे सर्व समयो मरनारा जीवे बधा स्पर्श कर्या होय त्यारे जाणबुं

(४) भावथी बादर ज्यारे अनुभागना बन्धना अध्यवसायना स्थानो क्रम अने उत्क्रम वडे मरेला जीवथी व्याप्त थाय त्यारे कहे छे.

अनुभागना बन्धना अध्यवसायनुं प्रमाण प्रथम संयम स्थानना अवसरमां कही गया छीए अने सूक्ष्म तो जग्न्य अनुभाव बंधना अध्यवसाय स्थानथी आरंभीने ज्यारे बधामां पण क्रमे करीने मरेलो थाय त्यारे जाणबुं तेथी आ प्रमाणे कलंकी भावने पामेलो अथवा बीजो कोइ जीव नीच गोत्रना उदयथी अनंत काळ सुधी पण तिर्यचमां रहे छे. मनुष्यमां पण नीच गोत्रनाज उदयथी तेवा

सूत्रम्

॥३३१॥

आचार्य

॥३३२॥

निंदनीय स्थानमां उत्पन्न थाय छे. तथा कलंकवालो जीवपण बैइन्द्रिय विगेरेमां उत्पन्न थयेलो पहेला समयमां पर्याप्तिना उत्तर काळमां उंच गोत्र बांधीने मनुष्यमां अनेक वार उंच गोत्र मेलवे छे. त्यां त्रीजा भांगामां रहेलो अथवा पांचमा भांगामां उत्पन्न थएलो छे ते आ प्रमाणे छे.

नीचगोत्र बांधे छे. अने उंचगोत्रनो उदय होय छे. अने कर्मपणुं (सत्ता) बन्नेनुं छे ते त्रीजो भांगो अने पांचमा भांगामां उंच-गोत्र बांधे छे तथा तेनोज उदय छे. अने सत्कर्मपणुं (सत्ता) बन्नेनुं छे छट्ठो अने सातमो भांगो तो जे बंधथी उपरत (दूर) थयोहोय तेने थाय छे अने तेनो विषय न होवाथी ते बनेनो अधिकार नथी. ते बने बंधना उपरमां उंचगोत्रनो उदय थाय छे अने सकर्म पणुं बनेमां कायम छे ते छट्ठो भांगो थयो अने सातमो भांगो शैलेशी अवस्थामां द्विचरम (छेड़ा समयना अगाडीना समयमां) नीच-गोत्र खपावे छते उंचगोत्रनो उदय होय तेनेज छे. अने सत्ता पण उंचगोत्रनी छे. आप्रमाणे उंच नीच गोत्रमां रहेला जीवे अहंकार न करवो जोइए तेम दीनता पण न करवी जोइए.

उंच अने नीच ते बने गोत्रनो बंध अध्यवसाय स्थानना कंडको समान छे. सूत्रमां बतावे छे के.

णो हीणे, णो अइरिते जेटलां उंच गोत्रमां अनुभाव बन्धना अध्यवसायना स्थान कंडक छे तेटलांज नीचगोत्रमां पण छे अने ते सर्वे अनादि संसारमां आ जीवे वारंवार अनुभवेलां छे. तेथी उंचगोत्रना कंडकना अर्थपणे जीव हीणो पण नथी तेम वधारे पण नथी एज प्रमाणे नीचगोत्र कंडकमां पण समजबुं ते संबन्धमां “ नागार्जुनीया ” आ प्रमाणे कहे छे.

सूत्रम्

॥३३२॥

आचारा०
॥३३॥

“एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइं उच्चागोए असइं नीआ गोए, कंडगट्टयाए नो हीणे नो अइरित्ते”

एक एक जीव भूतकालमां अनेकवार उंच नीच गोत्रमां आव्यो अने उंच नीचना अनुभाग कंडकनी अपेक्षाए हीन के अतिरिक्त नथी तेज कहे छे. ऊंच गोत्र कंडकवालो एक भविक अथवा अनेक भविकमांथी नीच गोत्रना कंडको ओळां नथी तेम वधारे पण नथी. एवुं समजीने अहंकार के दिनता न करवी. (अर्थात् समाधि राखवी तेज साधुपणुं छे.) ते बतावे छे. कारण के उंच नीच स्थानमां कर्मना वशथी उत्पन्न थाय छे. तेज प्रमाणे बळ-रूप-लाभ विगेरे मदना स्थानोनुं असमंजसपणुं (अस्थिरता) समजीने साधुए शुं करवुं ते कहे छे. जाति विगेरेनो कोइ पण मद साधु न बांच्छे अथवा तेवी इच्छा पण न करे कारणके उंच नीच स्थानमां आ जीव घणीवार उत्पन्न थयो, एवुं समजीने कोण गोत्रनो-के-माननो अभीलाषी थाय.! अर्थात् मासूं उंच गोत्र वधा लोकोने माननीय छे. तेबुं बीजानुं नथी. एवुं क्यो बुद्धिवान मनुष्य माने. !

मैं तथा बीजा जीत्रोए उंच अने नीच ए वधां स्थानोने अनेकवार पूर्वे अनुभवेलां छे तेज प्रमाणे गोत्रना निमित्ते मान-वादी कोण थाय. अर्थात् जे संसारना स्वरूपने सारी रीते जाणे छे, ते अहंकारी न थाय वली अनेकवार ते स्थानो पूर्वे अनुभवे छते हमणां एकाद उंच गोत्र विगेरे अस्थिर स्थानकमां आवतां राग विगेरेना विरहथी गीतार्थ थएल कोण ममत्व करे !

एनो भावार्थ आ छे. के कर्मनुं परिणाम जेणे जाण्युं छे तेवो मुनि आ सेवाने धारण करे. ग्रद्धपणाने क्यारे योजे के जो पूर्वे तेणे तेबुं मेलब्बं होय तो. पण खरीरीते तेणे घणी वखत उंचगोत्र विगेरे मेलब्बुं छे. तो ते ऊंचगोत्रना लाभथी के अलाभथी

सूत्रम्

॥३३॥

आचारो

॥३४॥

अहंकार, दीनता, न करवां तेवुं सूत्रमां कह्युं छे. कारण के अनादि संसारमां भटकता जीवे भाग्यने आधारे घणी वार उंच नीच गोत्रनां स्थान अनुभवेलां छे. तेथी कोइ वखत उंच नीच गोत्र मेलवीने डाहो पुरुष जे खराब तथा सारी वस्तुने ओळखे छे ते उंच गोत्र विग्रेरेथी अहंकार न करे. कह्युं छे के:—

“सर्वं सुखान्यपि बहुशः प्राप्तान्यटता मयाऽत्र संसारे । उच्चैः स्थानानि तथा, तेन न मे विस्मयस्तेषु॥१॥

बधां ए सुखोनेमें आ संसारमां भयतां मेलव्यां छे. उंच स्थान पण मेलव्यां छे, तेथी हवे मने तेनामां कांइ आश्र्य जोवामां आवतुं नथी.

जड सोऽत्रि णिज्जरमओ पडिसिञ्चो अट्टमाण महणोहिं । अवसेस मयट्टाणा, परिहरि अद्वा पयत्तेण ॥२॥

जो के, निर्जराने माटे उंच गोत्रना मदनो निषेध कर्यो छे, तोपण आठ मानने मथनारा साधुओए प्रयत्नवडे बीजां मदस्थान पण त्यागी देवां. तेजप्रमाणे नीच गोत्रमा के निंदनीक स्थानमां उत्पन्न थड्ने दीनता न करवी. तेज सूत्रमां कह्युं छे के:—“नो-कुप्पे” भाग्यवशथी लोकमां निंदनीक जाति कुळ रूप बळ लाभ विग्रेमां ओळापणुं पामीने साधुए क्रोध न करवो मनमां विचारखुं के मारे नीच स्थान अथवा बीजाना हलका शब्द सांभळीने मारे दुःख शा माटे मानवुं, में पूर्वे तेवुं घणीवार अनुभव्युं छे तेथी दीनता न करवी कह्युं छे के.

“ अवमानात्परिभ्रंशाद्धधबन्धधनक्षयात् । प्राप्ता रोगाश्च शोकाश्च जात्यन्तरशतेष्वपि ॥ १ ॥

अपमानथी नीच दशा थवाथी अथवा वध बन्ध के धनना क्षयेथी माणसे खेद न करवो कारण के पूर्वे आ जीवे रोग शोक

सूत्रम्

॥३४॥

आचा०

॥३३५॥

जुदी जुदी जातिमां सेंकडोवार भोगव्या छे.

संते य अविभहइउं असोइउं पंडिएण य असंते । सक्का हु दुमोवमिअहिअएण हिअं धरंतेण ॥ २ ॥

पंडित पुरुषे प्राप्तिमां आश्र्य न करवुं; अने अप्राप्तिमां नाखुश थवुं नहि. (झाडनी उपमावाळा हृदयवडे हितने धारनारा पुरुषने शक्य छे.
(झाड वधां दुःख सहे; पण त्यांथी खसे नहि; तेम हृदय स्थिर करी दुःखसुख सहेवां.)

होऊण चक्रवटी, पुहइवई विमलपंडरच्छत्तो । सो चेव नाम भुज्जो अणाहसालालओ होइ ॥ ३ ॥

चक्रवर्ति के, पृथ्वीपति निर्मल सफेद छत्रने धरनारो पहेलां पोते बन्यो; अने तेज पुरुष पोते रहेनारो (तेज जन्ममां) अनाथ आश्रममां भाग्यवशथी बने छे. अथवा एक जन्ममां जुदी जुदी अवस्थानी नीच-उंचपणानी स्थिति कर्मवशथी अनुभवे छे, तेथी उंच-नीच गोत्रनी कल्पना मनमांथी काढीने तथा बीजा पण मनना विकल्प दूर करीने थुं करवुं ? ते कहे छे:—

जीवोने संसारमां आवां उंच-नीच पद हमणा थाय छे. पछीथी थवानां छे, अने पूर्वे थयां छे, एवुं विचारीने शिष्यने गुरु कहे छे के:—तारी तीक्ष्ण बुद्धिथी जाण के, जीवोने कर्मवशथी सुख आवे छे, तेम दुःख पण आवे छे, तथा तेनां कारणो पण विचार, (जीवे जेवां पुन्य पाप कर्या होय; तेवां सुखदुःख मळे छे.)

बळीअविगान पणे प्रणीओ सुखने इच्छे छे. अहींयां जीवजंतु प्राणी विगेरे शब्दोपयोग लक्षणवाळां द्रव्यना मुख्य शब्दोने छोडीने “सत्तावाचि” शब्द “भूत” शब्दने लेवाथी एम सूचव्युं के, जेम आ उपयोग लक्षणवाळो पदार्थ अवश्य सत्ताने धारण

सूत्रम्

॥३३५॥

आचारा०

॥३३६॥

करे छे, ते सुखने वांच्छे छे, अने दुःखने धिकारे छे, सुख पुन्यना उदयथी छे, तेथी एम जाणवुं के, वधी पण शुभ प्रकृतिओ पु-
न्यना उदयथी छे जेथी शुभ नाम गोत्र आयुष्य विगेरे कर्म प्रकृतिओने दरेक जीव चाहे छे अने अशुभने निंदे छे आ प्रमाणे छे
तो शुं करवुं ते कहे छे.

समिए एयाणुपस्सी, तं जहा—अन्धत्तं वहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुटत्तं खुजत्तं वडभत्तं सामत्तं सबलत्तं

सह पमाएणं अणेगरुवाओ जोणीओ संघायइ विरुवरुवे फासे परिसंवेयइ (सूत्र ७८)

अथवा शुभ अशुभ कर्म वधा जीवोमां जोइने ढाहा पुरुषे ते जीवोने अप्रिय होइ तेवुं कृत्य न करवुं एवो शास्त्रकारनो उपदेश
छे, आ संवन्धमां “ नागार्जुनीया ” कहे छे.

“पुरिसेण खलु दुक्खुव्वेअ सुहेसए”

जीव दुःखने काढवा तथा सुखने मेळववा इच्छे छे. तेथी जीवनी प्ररूपणा करवी अने ते पृथ्वी पाणी वायु अग्नि वनस्पती
सूर्यम वादर विकल पंचेन्द्रिय संज्ञी असंज्ञीपर्याप्ता अपर्याप्ता विगेरे पहेला अध्ययनमां बताव्या छे अने ते दुःखने छोडवानी इच्छावाला
तथा सुखने मेळववाती इच्छावाला जीवोनुं पोतानी उपमाए मानता साधुए पोताना सुखना माटे जीवोने दुःख आपवान हिंसा
विगेरे स्थान छोडवा इच्छता पुरुषे पंच महावतोमां पोतानो आत्मा स्थापन करवो, अने ते महावतो पूरां पाळवा माटे उत्तर
गुणो पण पाळवा जोइए तेज वात आ सूत्रमां लाव्या छे, ते कहे छे.

सूत्रम्

॥३३६॥

आचारा०

॥३३७॥

पांच समितिथी बनेलो हवे पछी कहेवाता शुभ अशुभ कर्मनुं स्वरूप जाणे एटले अंधपणुं बहेरापणुं मुँगापणुं काणापणुं अने कुंटपणुं विगेरे कर्मनांज फळ छे. ते जीवोमां साक्षात् जोइने पोते समजे, के हुंदुःख बीजाने आपीश, तो ते मने पण भोगवबुं पडशे ते खुलासावार कहे छे.

हवे समितिनुं वर्णन कहे छे.

सम् उपसर्ग इ. धातु अने ति. प्रत्यय लागवाथी समिति शब्द बन्यो छे. अर्थात् सम्यक् वर्तन ते समिति छे. तेना पांच भेद छे. (१) इर्या समिति ते जोइ विचारी पगलुं भरवानुं छे, जेथी बोजा जीवोनी तथा पोतानी रक्षा थाय, (जोइने चालेतो, पग नीचे कीडी विगेरे मरे नही, तेम ठोकर पण न लागे) आ अहिंसा नामना पहेला महाव्रतने टेको आपनार छे. तेथी अहिंसा वरोबर पळे छे. (२) भाषा समिति ते असत्य अहितकारक वचन रोकवा माटे छे, अर्थात् साधुए बीजुं महाव्रत पाळवुं जोइ विचारीने बोलवुं. तथा (३) एषणा समिति ते साधुने कोइनुं पण चोरीने के पूछ्या विना कांइ पण न लेबुं-ते त्रीजुं महाव्रत पाळवा माटे छे, एटले निर्दोष भोजन विगेरे दिवसना प्रकाशमां मालीकनी रजा लह वापरवानुं छे. बाकीनी वे समितिओ. (४) आदान-एटले वस्तु लेवी-मुकवी ते समिति तथा [५] उत्सर्ग-एटले शरीरमांथी के मकान विगेरेमांथी नीकळतो मळ विगेरे योग्य स्थाने नांखवो के जेथी बीजाने पीडा न थाय, ते वधा महाव्रतमां सर्वोत्तम अहिंसा नामना पहेला महाव्रतनी सिद्धि माटे छे, आ प्रमाणे पांच महाव्रतो मेलवीने पांच समिति पाळता साधुने बीजा जीवोनुं सुख विगेरे देखाय छे, अथवा जे रीते पोते बीजानुं भलुं चाहनारो थाय छे ते सूत्र वडेज बतावे छे अंधपणुं विगेरे जे जे विरुप रूपोमां संसारी जीवो संसारमां भ्रमणा करता घणी अवस्थाओ भोगवे छे. ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥३३७॥

आचारा०

॥३३८॥

तेमां एकेन्द्रिय बेरेन्द्रिय त्रेन्द्रिय ए आंख विनाना द्रव्य अने भाव अंधा छे (आपणी माफक तेमने आंखो जोवानी नथी) तथा चौरेन्द्रियवालाथी जोवानी आंखो छतां धर्मना अभावे मिथ्याहृषिओ भाव अंधा छे. (सारा माठानो तेमने विवेक नथी) कहुँ छे के.

“एकंहि चक्षुरमलं सहजो विवेकस्तद्विद्वितीयम्;

एतद्वयं भुवि न यस्य स तत्त्वतोऽन्धस्तस्यापमार्गचलने खलु कोऽपराधः ॥१॥

जेने निर्मल चक्षु समान स्वभाविक विवेक छे अने तेवा विवेक साथे एमने सोबतरूप बीजुं नेत्र छे, आ बन्ने चक्षु जेमने नथी ते हृदयना आंधला कुमार्गे जाय तो ते बीचारानो खरेखर शुं अपराध छे :

जे बीतरागनो धर्म पामेला छे तेओ सम्यक् हृषि छे. तेमने कोऽपण कारणे आंखनुं तेज नाश पाम्युं होय ते द्रव्यअंधा जाणवा पण खरा देखता कोने कहेवा के जे द्रव्यथी पण आंधला नथी अने भावथी पण आंधला नथी अर्थात् आंखे जुए छे, अने विवेकथी वर्ते छे.

तेथी द्रव्य अने भावथी भिन्न एवुं बन्ने प्रकारनुं जेने अंधपणुं छे, ते एकान्तथी दुःख आपनाहुं छे. कहुँ छे के.

“जवन्नेव मृतोऽन्धो, यस्मात्सर्वक्रियासु परतन्त्रः । नित्यास्तमितदिवाकर, स्तमोऽन्धकारार्णवनिमग्नः ॥१॥

जीवतांज मुवा जेवो आंखथी आंधलो छे. के ते बीचारो बधी क्रिधामां परतंत्र छे. जेने चक्षु नथी तेने हमेशां सूर्य अस्त थएलो छे. अने पोते अंधकारना समुद्रमां हुब्यो छे.

लोकद्रव्यव्यसनवह्विदीपिताङ्गमन्धं समीक्ष्य कृपणं परयष्टिनेयम् ॥

सूत्रम्

॥३३९॥

आचार
॥३३९॥

को नोद्विजेत भयकृजननादिवोग्रात्कृष्णाहि नैकनिचितादिव चान्धगर्त्ति? ॥२॥

आलोक परलोकमां दुःखना अश्रिमां बळता अंगवालो तथा पारकानी लाकडीए दोराता दुःखी आंधळाने जोइने कोण खेद न पामे? अथवा भयने पमाडनार एवो भयंकर काळो साप अंधारानी खाडावाळी जग्यामां जे एक दृष्टिए करडवानी इच्छावालो बेठेलो छे तेने जोइने तेना आगळ जतां जेवो भय लागे छे, तेवी रीते अंधपणना खाडानुं दुःख कोने भयंकर न लागे?

जेम उपर आंधळानुं दुःख बताव्युं ते प्रमाणे केटलाक जीवो कर्मना वशी बहेरापणुं भोगवे छे, अने जेने सारा के माठा विवेकनुं भान नथी ते आ लोक परलोकनुं जे सारुं फळ छे तेनी क्रिया करवाने ते अशक्त छे कहुं छे के-

“धर्मश्रुति श्रवणमङ्गलवर्जितो हि, लोकश्रुतिश्रवणसंद्यवहारवाह्यः ॥

किं जीवतीह बधिरो? भुवि यस्य शब्दाः, स्वप्नोपलब्ध धन निष्फलतां प्रयात्नि? ॥१॥

धर्मनां वचन सांभलवाना कल्याणथी दूर थयेल तथा लोकना वचन सांभलवाना बहेवारथी बहार थएल छे ते बहेरो आ दुनीयामां केम जीवे छे.? के जेने कहेला शब्दो स्वप्नमां मेलवेला धननी माफक निष्फलताए जाय छे.

स्वकलत्रबालपुत्रकमधुरवयःश्रवणवाह्यकरणस्य । बधिरस्य जीवितं किं, जीवन्मृतकाकृतिधरस्य ॥२॥

पोतानी स्त्री तथा नाना पुत्रनां मधुर वचन सांभलवाथी विमुख एवा बहेरानुं जीवित जीवतो छतां पण मरेलानो आकार धर-

सूत्रम
॥३३९॥

आचारा०

॥३४०॥

नारनुं कं इ गणत्रीमां छे ? (नकासुं छे.)

आ प्रमाणे मुगांने पण एकांत दुःखनो समूह भोगववानुं छे. कहुं छे केः—

“दुःखकरमकीर्तिकर, मूकत्वं सर्वलोकपरिभूतम् । प्रत्यादेशं मूढाः कर्म्म कृतं किं न पश्यन्ति ? ॥१॥”

दुःखने करनार अपजशवालुं सर्वलोकमां निंदा पात्र मुंगापणुं छे, ते पोतानाकर्मोनुं करेलुं फल बीजाने भोगववाताने मूढो केम जोता नथी ? (पोते पाप करशे तो, तेवुं फल भोगववुं पडशे.)

तेज प्रमाणे काणापणुं पण दुःखरूपे छे. कहुं छे�—

“काणो निमग्न विषमोन्नतदृष्टिरेकः शक्तोविरागजनने जननातुराणाम् ॥

यो नैव कस्यचिदुपैति मनःप्रियत्वमालेख्यकर्मलिखितोऽपि किमु स्वरूपः ?

विषमस्थानमां दुबेलो, जेने एकज दृष्टि (आंख) छे. जे पोते काणो होवाथी वैराग्य उत्पन्न करवामां शक्तिवान छे, अने जन्मदुःखीओमां ते छे पोते कोइनां पण मनने वहालो लागतो नथी. आलेखवा जोग कर्मथी लखायो छतां; जे बीजाने वहालो न लागे; तेनुं स्वरूप गइ गणत्रीनुं छे ?

आ प्रमाणे कुंटपणुं एटले, जेना हाथपग वांका होय; अथवा ठींगणापणुं होय; अथवा जेनी पीठ बडनी (खुंधाना) आकारे होय; तथा रंगे कळो होय; तथा सबक्लपणुं होय. आवुं स्वाभाविक कदरुं शरीर होय अथवा पछवाडे कर्मना वशथी तेवो थाय;

सूत्रम्

॥३४०॥

आचारा०
॥३४१॥

तो, घणुं दुःख भोगवे छे.

बली प्रमादथी एट्ले, विषयक्रीडाना कारणे सारां काममां एट्ले, धर्ममां प्रमाद करवाथी संकट, विकट शीत, ऊष्ण विगेरे, अनेक भेदवाळी योनीमां पोते भ्रमण करे छे, अथवा प्रथम बतावेली चोराशीलाख जीवायोनीमां एकसरखुं भ्रमण करे छे. अने नवां नवां आयुष्यो बांधीने तेमां जाय छे. अने ते योनीओमां जुदी जुदी जातनां दुःखोने अनुभवे छे, तेज प्रमाणे उंचगोत्रनो अहंकार करवामां हणाएला खित्तवाळो अथवा नीच गोत्रना कारणे दीन बनेलो, अथवा आंधलो बहेरो थवा छतां अज्ञानी जीव पोते पोतानुं कर्त्तव्य नथी जाणतो तथा पूर्वे करेलां कर्मनुं आ फल छे, ते जाणतो नथी. तथा संसारनी बुरी दशाने भूली जाय छे. अने हित-अहितने विसारे छे. तेमज उचित वातने गणतो नथी. ते तत्वने भुलेलो मूढ बनेलो होय तेज उंच गोत्र विगेरेमां अहंकार करे छे. तेज कहे छे—

से अबुज्ञमाणे हओ वहए जाईमरणं अणुपरियट्टमाणे, जीवियं पुढो पियं इहमेगेसि
माणवाणं खित्तवत्थुममायमाणाणं आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ प-
रिगिज्ञति, तत्थे व रत्ता, न इत्थं तवो वा दमो वा नियमो वा दिस्सइ, संपुण्णं बाले जो-
वित्कामे लालप्पमाणे मुढे विष्परियासमुवेइ ॥ (सू० ७९)

सूत्रम्

॥३४१॥

आचार
॥३४२॥

पूर्वे कहेलां उंचगोत्रनो अभिमानी अथवा आंधकां, बहेरां विगेरेनां दुःखने भोगवतो; अथवा कर्मविपाकने न जाणतो हत उ-पहत छे एटले, जुदीजुदी जातना रोगथी शरीरे पीडातां हणायलो छे, तथा बधा लोकमां पराभव पामवाथी उपहत छे, अथवा उंच-गोत्रना अहंकारथी उचित कार्यने छोडवाथी विद्वान पुरुषोना मुखथी, जेनो अपयश पडघो पडवाथी ते हणायलो छे, तथा अभिमान करवाथी अनेक भवमां अशुभकर्म बांधीने, नीचगोत्रना उदयने अनुभवतो उपहत छे, अने ते दुःखथी मूढ बने छे, ते दरेक जग्याए जोडवुं.

तेज प्रमाणे जाति (जन्म-मरण) ए वब्बेने “पाणी काढवाना रेटना न्याये” नवा नवा जन्म-मरणनां दुःखसंसारना मध्यभागमां रहीने ते जीव भोगवे छे, अथवा क्षणेक्षणे क्षयरूप आवीचीमरणथी दरेक क्षणे जन्म तथा विनाशने अनुभवतो दुःखसागरमां डुबेलो सघलुं नाशवंत छतां, तेने नित्य मानीनेः जेमां हित थवानुं छे तेने पण अहित मानी विमुख थाय छे. (धर्म, जे सुखने आपनार छे, ते धर्मने छोडी दुःख आपनार विषयमां खेचाय छे.) कहुं छे के:—

आयुष्यने नित्य मानीने अथवा, असर्यंगजीवित दरेक प्राणीने वधारे वहालुं छे. एटले आ संसारमां अज्ञान अंधकारथी हणाएला चित्तवाला मनुष्यने तथा बीजा प्राणीओने विषय रसमां जीववुं वहालुं छे, ते बतावे छे.

आयुष्य वधारवा माटे रसायण विगेरे क्रियाओ बीजा जीवोने जे दुःख करनारी छे तेने करे छे. तथा चोखा विगेरेनुं क्षेत्र खेडावे छे. धोळांघर (हवेलीओ) विगेरे वधावे छे. तथा आ मारां छे. एम मानीने तेना उपर वधारे प्रेम करे छे. तथा थोडां रंगेलां अथवा जुदी जुदी जातनां रंगेलां अथवा वगर रंगेलां वस्त्रो तथा रत्नोना कुँडलो तथा सोनुं तथा स्त्री विगेरे मेलवीने तेमां एटले उपर

सूत्रम्
॥३४२॥

आचारा०
॥३४३॥

कहेली रमणीय वस्तुओमां गृद्ध थएला छे. ते मूढपुरुषो दुःख आवतां गमराय छे. अथवा तेमनी शरीर शक्ति बरोबर होय त्यारे तेओ धर्म विगेरेने उत्तम बोलता नथी पण तप ते अणसण विगेरे तथा “इन्द्रियोनुं दमन तथा अहिंसानो नियम फलवालो नथी एम तेओ उलटुं बोले छे. ते बतावे छे, तप नियम धारण करेला धर्मि जीवने तेओ कहे छे. के” आ तप विगेरेनुं फल भविष्यमां नथी. फक्त आलोकमां कायाने दुःख अने भोग विगेरेथी दूर रहेबुं ए तमने ठगवा माटे गुरुओए खोडुं बतावेलुं छे.

वली बीजा जन्ममां सुख मलशे. ए पण खोटो गुरुए भ्रम आपेलो छे. कारणके हाथमां आवेला भोगो तथा सुखो भोगववां छोडीने भविष्यमां सुखनी आशा करवी ए वधारे पापरूप छे तेथी वर्तमाननुं सुख चहानार संसारी जीवो (गुरुना वचनोने ऊंचा मूकी) भोग भोगववामां एक पुरुषार्थ मानी अवसरे अवसरे संपूर्ण भोगोने भोगवतो अज्ञानी जीव लांबा आयुष्यने इच्छतो भोगोने माटे अतिशय कुवचन बोलती वचन दंडनुं पाप बांधे छे. एटले जे माणस एम बोले के तप तथा इन्द्रिय दमन अथवा अहिंसादिक नियम फलवालुं नथी एवुं बोलनारो मूढ तत्वने न जाणनारो हत उपहत थएलो नवां नवां जन्म भरण करी जीवित क्षेत्र स्त्री विगेरेमां लो-लुप बनी तत्वमां विमुख अने अतत्वमां तत्व मानीने हित अहितनी बाबतमां पण उलटो चाले छे. ते बतावे छे.

दाराः परिभवकारा बन्धुजनो बन्धनं विषं विषयाः । कोऽयं जनस्य मोहो ? ये रिपवस्तेषु सुहृदाशा ॥१॥

स्त्रीओ अपमानने करनारी, बंधुजन बंधन समान तथा इंद्रियोना विषयो विष समान छे. छतां माणसने आ केवो मोह छे के जे खरेखरा शत्रु छे. तेमां मित्रपणानी आशा राखे छे. पण जेओ शुश कर्म उपार्जन करीने मोक्षनी इच्छावाला बनेला छे ते केवा छे ते बतावे छे.

सूत्रम्
॥३४३॥

आचार
॥३४४॥

इणमेव नावकंखति, जे जणा धुवचारिणो । जाइमरणं परिन्नाय, चरै संकमणे दढे (१) नत्थि कालस्स णागमो, सब्बे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो जोवित्तकामा, सब्बेसिं जीवियं पियं, तं परिगिज्ज दुपयं चउप्पयं अभिजुंजिया णं संसिंचिया णं तिविहेण जाऽपि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुया वा, से तत्थ गड्ढिए चिट्ठइ, भोअणाए, तओ से एगया विविहं परिसिंदुं संभूयं महोवगरणं भवइ, तंपि से एगया दायाया वा विभयंति, अदत्तहारो वा से अवहरति, रायाणो वा से विलुंपंति, नस्सइ वा से विणस्सइ वा से, आगारदाहेण वा से डज्जङ्गइ इय, से परस्सड्डाए क्राइं कम्माइं बाले ठकुवमाणे तेण दुक्खेण सं मूढे विष्परियासमुवेइ, मुणिणा हु एयं पवेइयं, अणोहंतरा एए नो य ओहं तरित्तेष, अतीरंगमाझए नो य तोरं गमित्तेष, अपारंगमा एए नो य पारं गमित्तेष, अयाणिज्जं च आयाय तंमि ठाणे न चिट्ठइ, वितहं पप्पड्खेयन्ने तंमि ठाणंमि चिट्ठइ (सू० ८०)

सूत्रम्
॥३४४॥

आचा०

॥३४५॥

जे ओ धुतचारी एटले मोक्षनुं कारण ज्ञान विगेरे छे तेने मेलववाना स्वभाववाला छे तेवा धर्मात्मापुरुषो उपर कहेला असार जीवितक्षेत्र धन स्त्री विगेरेने चहाता नथी।

अथवा धुतचारी एटले धुत ते चारित्र तेमां रमणता करनारा छे, अर्थात् चारित्र लङ् तेने पूर्ण पाळी मोक्ष मेलवे ते संसारने चहाता नथी वली भोगना अभावे ज्ञान मेलवीने जन्मपरणना दुःखने जाणीने तेवा पुरुषे, संक्रमण (चारित्र) मां रमणता करवी एवं शिष्यने गुरु कहे छे के विश्रोतमिका रहित अथवा परिसद उपसर्ग आवतां तारे कंटाळवुं नही अथवा हे शिष्य तुं शंका रहीत मनवालो थइ संयममां रहे एटले शिष्ये तप दमन नियम विगेरे आलोकमां जे कष्ट छे, ते परभवनुं अनंतु सुख आपशे एवुं निःशंकपणे मानीने धर्ममां आस्था राखे; अने ते तप नियम विगेरे करे; अने तेथीज पोते तपना प्रभावथी राजा-महाराजाओने पण पूजवायोग्य थाय छे।

जेणे विषय कषायने जीत्या छे, तेवा तपस्वी शांत पुरुषने अहीं जे सुखरूप फळ मब्ब्युं छे, तथा तेणे बधा जोडकांने दूर करी समभाव मेलब्यो छे, तेवा पुरुषने परलोक कदाच न होय; तोपण तेनुं किं बगङ्गतुं नथी。(उपशमभावमां अहींज अनंतु सुख छे, तेने परलोकना सुखनी इच्छाज नथी. कह्युं छे के:—

“संदिग्धेऽपि परे लोके, त्याज्यमेवाशुभं बुधः ! यदि नास्ति ततः किं स्यादस्ति चेन्नास्तिको हतः॥१॥”

परलोक छे के नहि ? एवी एवी शुंकावाला लोकमां पंडित पुरुषोए पापने छोडवुंज जोड्ये; जो परलोक नथी; तो, तेनुं शुं बगङ्गवानुं छे ? अने परलोक छे तोपण, तेनुं शुं बगङ्गवानुं छे ? एथी परलोक न माननारो नास्तिक हणायो. अर्थात् पापने करनारो

सूत्रम्

॥३४५॥

आचा०

॥३४६॥

आलोकमांज नास्तिक केदमां पडी दुःख भोगवे छे, तोपण तेनी आशा पुराती नथी; अने आस्तिक भोगने रोग मानी तेनी आशा मूके छे, तो ते देवनी माफक पूजाय छे. तेथी गुरुमहाराज शिष्यने कहे छे के तमारे पोताना वशमां रहेलुं संयम सुख मेळववामां दृढ रहेहुं. पण आवुं न विचारहुं के थोडा वर्ष पछी अथवा दृद्धावस्थामां धर्म करीश. कारण के मृत्युनुं आववुं अनिश्चत छे के हमणा मृत्यु नहि आवे. कारण के सोपक्रम आयुष्यवाळा जीवने कोइ अवस्था एवी नथी के-जेमां कर्मरूपी अग्रिमां पडनारा लाखना गोळा माफक जीव पीगळी न जाय. कह्यु छे के—

शिशुमशिशुं कठोरमकठोरमपणिडतमपि च पणिडतं, धीरमधीरं मानिनममानिनमपगुणमपि
च बहुगुणम् । यतिमयतिं प्रकाशमवलीनमचेतन मथ सचेतनं, निशि दिवसेऽपि सान्ध्य
समयेऽपि विनश्यति कोऽपि कथमपि ॥१॥”

बाल्क, जुवान, कठोर कोमळ, मूर्ख, पंडित धीर, अधीर, अहंकारी दीन गुण रहित, घणा गुणवाळो, साधु, असाधु, प्रकाशवाळो अप्रकाशवाळो, अचेतन, सचेतन, अर्थात् जेटला जीवो संसारमां छे. ते बधा काळ (मृत्यु) थी दिवसमां, रात्रीमां अथवा संध्याना समयमां पण कोइ रीते नाश पामे छे. तेथी मृत्युना सर्वेने कडवापणाने समजीने उत्तम पुरुषे अहिंसा विगेरे महाव्रतोमां सावचेत थवुं जोइए. शा माटे ते कहे छे.

“ सब्वे पाणा पियाउया ”

सूत्रम्

॥३४६॥

आचारा०
॥३४७॥

एटले सूत्रमां वताव्या प्रमाणे बधा जीवोने पोतानुं आयुष्य प्रिय छे.
 शंका—सिद्धने आयुष्य प्रिय नथी, तेथी तमारा कहेवामां दोष आवशे.
 उत्तर—एटला माटेज अमे मुख्य शब्द जीवने न वापरतां प्राण शब्द वापर्यो छे. अने तेथी प्राण धारण करनार संसारी जीवज लेवा. तेथी तमारो वांधो नकामो छे.

“ सव्वे पाणा पियायया ”

आ पाठ छे. एटले आयुष्यने बदले आयत शब्द छे अने तेनो अर्थ आत्मा छे.
 कारण के ते अनादि अनंत छे. अने बधाने पोतानो आत्मा वहालो छे. अने सुखनी वांच्छा दुःखनो नाश करवानी अभिलाषा छे. कहुं छे के—
सुहसाया दुक्खपडिकूला.

आनंदरूप—सुख छे, तेनो स्वाद करवो ते सुख भोगवानी इच्छावाला जाणवा. अने असाता ते दुःख. तेना द्वेषी जाणवा; तथा पोतानो घात करे; तो, पोते अप्रिय माने छे, तथा जीवितने प्रिय माने छे, एटले दीर्घ आयुष्य वांच्छे छे, अने ते पण असंयम जीवित वांच्छे छे. एटले दुःखमां पीडाइने पण, अंतदशामां पण जीववाने इच्छे छे कहुं छे के:—

‘, रमझ विहवी विसेसे ठितिमित्तं थेव वित्थरो महई । मग्गझ सरीर महणो, रोगी जीए च्चिय कयत्थो ॥१॥’
 वैभववालो विशेष वैभवमा रमे छे. थोडावालो पण रहेवाने इच्छे छे. निर्धन पण पोतनां शरीरने संभाळे छे. रोगी पण जीव-

सूत्रम्

॥३४७॥

आचार्य

॥३४८॥

वामां कृतार्थं माने छे.

तेथी आ प्रमाणे सर्व प्राणी सुखना जीवितना अभिलाषी छे: अने संसारी-निर्वाह आरंभ विना नथी; अने आरंभ छे, ते प्राणीने उपधात करनार छे, अने प्राणीओने पोतानुं जीवित वधारे वहालुं छे, तेथी वारंवार गुरुमहाराज उपदेश आपे छे के—दरेकने सर्वथा इन्द्रियोना विषय वहाला छे, अनेतेथी विषयोने ध्यानमां राखीने शुं करे छे? ते कहे छे. वे पगवाळा दास दासी चार पगवाळा गाय घोडा विगेरे उपभोगमां लङ्ने; धननो संचय करीने मन, वचन, अने कायाथी करबुं वरावबुं; अने अनुमोदनावडे पोतानां मनुष्य-जन्ममां जे कंइ जींदगी परमार्थमां गुजारवी जोइए; तेने बदले तेने आरंभमां एटले पापकर्ममां रोकीने व्यर्थ करे छे. ते वरवते अर्थमां गृद्धथयलो पोते कलेशने गणतो नथी. धनने रक्षण करवानो परिश्रम विचारतो नथी; तथा तेनी चंचलताने ध्यानमां लेतो नथी, तेना नकामापणाने विसरे छे. (धनना अपायो भूलीने लाभज नजरे जुए छे, अने पापमां रक्त रहे छे.) कहुं छे के—

कृमिकुलचित्तं लालाक्षिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं, निरुपमरसप्रीत्या खादन्नरास्थि निरामिषम् ॥

सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं सशाङ्कितमीक्षते, न हि गण यतिक्षुद्रो लोकः प्रियग्रहफलगुताम् ॥१॥

कृमिना समूहथी व्याप्त अने लाळथी भरेलुं दुर्गंधवालुं निंदनीक एवुं मांस विनानुं हाडकुं मोढामां ममरावतो अधिक स्वाद तेमां मानतो कुतरो-पासे उभेला इन्द्रने पण शंकाथी जुए छे. (के रखेने मारुं हाडकुं इन्द्र लङ्न न जाय.) आ उपरथी निश्चय एम जणाय छे के क्षुद्र जंतु छे. ते पोतानी संघरेली वस्तुनी असारता जाणतो नथी. ते पैसाने शा माटे चाहे छे, ते कहे छे. भोजनने माटे—

सूत्रम्

॥३४८॥

आचारा०

॥३४९॥

उपभोगने माटे-धनने इच्छी तेवी तेवी क्रियामां वर्ते छे. एटले अवलगन. (बीजानो आश्चरो लेवा) विगेरेनी क्रिया करे छे. तेमां लाभांतराय कर्मना क्षय उपशममां जुदीजुदी जातनुं मळेलुं अने वापरतां बचेलुं साचववा महान उपकरण भेगां करे छे.

अने कोइ पापीने तेवा लाभनो उदय न होय, तो धननी इच्छाए ते रंक मनुष्य समुद्र ओळंचे छे, पहाड चढे छे. खाण खोदे छे, गुफामां पेसे छे, पारानो रस बनावी तेना वडे सुवर्ण सिद्धि (कीभीयो) करवा चाहे छे. राजानो आश्रय ले छे, खेती करावे छे, आ बधी क्रियामां पोताने अने परने दुःख आपवा वडे पोताना सुखना माटे मेळवेलुं धन पोते कष्ट करेलुं होय छतां कोइ वखत तेना पापना उदयथी तेना पीतराइओ तेमां भाग पडावे छे. अथवा दगाथी ले छे. चोरो चोरे छे. राजाओ दंडे छे. अथवा पोते राजना भयथी जंगलमां नासी जाय छे. अथवा तेनुं जुनुं घर पडी जाय छे. अथवा अग्रिथी बळतां धन नाश पामे छे. लुंटाइ जाय छे; आवां घणां कारणोथी अर्थ नाश पामवानो छे. एथी उपदेश करे छे के, हे शिष्य ! अर्थनो मेळवनारो बीजानां गळां रेसनारो पाप करीने आज्ञानी जीव ते धनथी सुख भोगववाने बदले दुःख भोगवतां मुढ बनीने बेलो थाय छे. अने तेथी विवेक नाश थवाथी कार्य-अकार्यने मानतो नथी. तेज तेनी विरूपता छे. कहुं छे के—

“रागद्वेषभिभूतत्वा, त्कार्यकार्य पराङ्मुखः । एष मूढ इति ज्ञेयो, विपरीतविधायकः ॥१॥

रागद्वेषथी वेरावाथी कार्य अकार्यना विचारमां शून्य एवो विपरीत कार्य करनारो मूढ माणस जाणवो.

आ प्रमाणे मूढपणाना अंधकारमां छवायाथी जेने आलोकना मार्गनुं ज्ञान नथी एवा सुखना अर्थिओ छतां दुःखने पामे छे.

सूत्रम्

॥३४९॥

आचारा०

॥३५०॥

तेर्थी सर्वज्ञ वचन रूप दीवाने बधा पदार्थनुं स्वरूप खरेखरुं बतावनार जाणीने गुरु कहे छे. हे मुनिओ तेनो आश्रय तमे ल्यो.
में आ मारी बुद्धिथी नथी कहुं. एबुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे, त्यारे कोणे कहुं ? ते कहे छे.

त्रणे काळमां जगत विद्यमान छे. एबुं जे माने ते मुनि जाणवा अने ते त्रणे काळनुं ज्ञान जेने होय ते सर्वज्ञ तीर्थकर छे. तेमणे कहुं छे. तेओए अनेकवार पोताना पुन्य बल्थी उंच गोत्रं विगेरे मेलब्युं छे. अथवा प्रकर्षथी अथवा प्रथमथी ज्ञान प्राप्त थतांज बधा जीवो पोतानी भाषामां समजे तेवां वचनवडे तेमने उपदेश कर्यो छे. ते कहे छे.

अनोघ-ओघ बे प्रकारे छे. द्रव्यओघ ते नदीनुं पूर विगेरे छे. अने भावओघ ते आठ प्रकारनुं कर्म अथवा संसार छे. ते आठ कर्मथी संसारी जीव अनंत काळ भमे छे. ते ओघने ज्ञान दर्शन अने चारित्ररूपी वहाणमां बेठेला मुनिओ तरे छे. अने जेओ नथी तरता ते अनोघंतरा छे, अर्थात् जेओ मुनि धर्म पाले छे तेओ तरे छे, अने जेओ ते धर्मने छोडी विषयना लालचु बने छे, ते जैनेतर अथवा जैनमां पत्तित साधु छे. तेओ ज्ञान विगेरे उत्तम वहाणथी भ्रष्ट ज्ञानी तरवानो उद्यम करे तो पण संसार तरवा समर्थ थता नथी. तेज सूत्रमां कहुं छे—

नोथ ओहं तरित्तए,

जे संसार तरता नथी ते अतीरंगमा छे, एटले तीर ते संसारनो पार तेनी पासे जबुं. ते तीरंगमा छे अने जेओ विषय रसमां पडे तेओ किनारे न ज्ञानी अतीरंगम छे. ते कोण ? ते कहे छे. जैनेतर अथवा प्रथम कहेला धर्म भ्रष्ट जैन साधु—ते बतावे छे.

सूत्रम्

॥३५०॥

आचार

॥३५१॥

तेओ वेष धारे छे छतां सम्यक् आचार न पाल्वाथी सर्वज्ञना कहेला सन्मार्गथी दूर होवाथी किनारे जता नथी तेज प्रमाणे अपारंगम पण जे. अहीं पार एटले, सामेनो तट जाणवो. तेज प्रमाणे अपारगत पण जाणवा; एटले वितरागना उपदेशथी वीरुद्ध चालवाथी पारगमनमां सफलता मळती नथी. आ बधुं कहीने कहे छे के:—ते संसारना सुखइच्छको संसारमांज अनंतकाळ रहे छे. जोके, तेओ वेष धारवाथी के, स्वेच्छाचारथी थोडुंक कष्ट पण सहेता होय; तोपण सर्वज्ञना उपदेशथी विकल, अने पोतानी इच्छानुसार बनावेला शास्त्रनी रीतिए चालनारा होवाथी संसारपार जवाने समर्थ नथी.

प्रश्नः—तीर, अने पारमां शुं भेद छे ?

उत्तरः—अहींआं तीर एटले मोहनीयकर्मनो क्षय लेवो. तथा बाकीनां बीजां त्रण घातीकर्म दूर थवाथी पार जाणवो; अथवा तीर एटले, चार घातीकर्मनो नाश अने पारमां बाकीनां अघातीकर्मनो पण नाश जाणवो.

प्रश्नः—जैनेतर अथवा, पतितसाधु केम मोक्षमां न जाय ?

उत्तरः—जेनाथी सर्व पदार्थो ग्रहण कराय; ते आदानीय ते श्रुतज्ञानमां कहा प्रमाणे संयमस्थानमां जे न वर्ते ते मोक्षमां न जाय अथवा लोकोने प्रियएवां भोगनां अंग दास दासी चोपगां धन धान्य सोनुं रुपुं विगेरे ग्रहण करीने अथवा मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगवडे ग्रहण करवा योग्य कर्म ग्रहण करीने ज्ञानादिमय मोक्षमार्गमां अथवा सम्ह उपदेशमां अथवा प्रशस्तगुण स्थानमां जे जीव पोताना आत्माने स्थिर नथी करतो ते संसारमां भमे छे.

सूत्रम्

॥३५१॥

आचारा०

॥३५२॥

वली ते धर्मभ्रष्ट पोते बोतरागना उपदेश स्थानमां स्थिर थतो नथी. पण तेने बदले अनुचित स्थानमां वर्त्त छे. ते बतावे छे. वितथ ते असत् बचन दुर्गतिनो हेतु छे तेने पामीने अकुशल अथवा खेदने जाणनारो असंयम स्थानमां वर्त्ते छे. अथवा वितथ एटले ग्रहण करवा योग्य भोग नथी. जुदुं जे संयम स्थान “छे तेने पामीने खेदने जाणनारो निपुण साधु तेज स्थानमां एटले कर्मने ह-णवामां तत्पर रहे छे अर्थात् पोताने सर्वज्ञ प्रभुनी आज्ञामां स्थापे छे. आ उपदेश जे शिष्य ज्यां मुधी तत्वनो बोध पाम्यो नथी तेने मुमार्गमां वर्त्तवा अपाय छे. पण जे तत्वनो जाण तथा हेय (त्यागवा योग्य) उपादेय (ग्रहण करवा योग्य) नुं विशेष जाणे छे, ते बुद्धिवान पुरुष यथाअवसरे यथायोग्य करबुं, ते पोतानी मेलेज करे छे; ते बतावे छे.

उद्देसो पासगस्स नतिथि, बाले पुण निहे कामसमणुन्ने असमियदुक्खे दुक्खी दुखाणमेव
आवहं अणुपरियद्वइ (सू० ८१) त्तिबेमि ॥ लोकविजये तृतीयोदेशकः ॥

उद्देश उपदेश एटले सत् असत् कर्तव्य तेना आ देशने जे जाणे ते पश्य जाणवो तेज पश्यक छे. तेने आ उपदेशनी जरुर नथी. ते पोतेज समजे छे.

अथवा पश्यक ते सर्वज्ञ अथवा तेना उपदेश प्रमाणे चालनारो जाणवो.

जे कहेवाय ते उद्देशो. ते नारकादि चार गति अथवा ऊच नीच गोत्रनुं कहेबुं. ते उपर कहेला सर्वज्ञने अथवा उत्तम साधुने नथी. कारण के थोडाज वस्तुमां तेनो मोक्ष थवानो छे.

सूत्रम्

॥३५२॥

आचारा०
॥३५३॥

प्रश्नः—क्यो माणस वीतरागना उपदेश प्रमाणे चालतो नथी ? ते कहे छे—

“बाळ” राग विगेरेथी मोहीत थएलो ते कषायो तथा कर्मोवडे अथवा परिसह उपसर्गवडे हणाय छे. ते “निह” अथवा जे-नाथी स्नेह थाय ते स्नेहि ते जेने छे. ने स्नेह वालो रागी जाणवो. ते इच्छा संसार सुखनो अभिलाषी मनोहर भोगोनो रागी बनी कामनी इच्छावालो ते कामी वारंवार विषयनी इच्छा शांत न पडवाथी तेना दुःखथी दुश्खीओ बनेलो शरीर अने मनमां दुःखोथी पीडातो रहे छे. कांटा तथा शस्त्रनो घा अथवा गुमडुं कोड विगेरेथी शरीर दुःख भोगवे तथा वहालांनो वियोग अप्रियनो संयोग अनिष्टनो लाभ अने इच्छितनो अलाभ तथा दारिद्र दुर्भाग्यथी मननी पीडाओ भोगवे छे. अने तेनाथी वारंवार आर्तध्यान करतो वारंवार तेमां भये छे. एटले दुःखना आवर्त्तमां डुबेलो संसारमां भये छे. (आ बधानो सार ए छे के-जे अहंकार करे-दीनता करे ते संसारमां भये अने जे मूनि सुख दुश्खमां अहंकार दीनता न करतां चारित्रने समता भावे आराध्ये ते मोक्षमां जाय)

लोक विजयनो त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो.

तओ से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जिति जेहिं वा सार्द्धं संवसइ, ते व णं एगया नियया पुर्वि परिवयंति, सो वा ते नियगे पच्छा परिवइज्जा, नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा जाणिन्तु दुक्खं पत्तेयं सायं,

सूत्रम्

॥३५३॥

आचारा०

॥३५४॥

भोगा मे व अणुसोयन्ति इहमेगेसिं माणवाणं (सू० ८२)

त्रीजो उद्देशो कहा पछी चोथो उद्देशो कहे छे—

भोगोमां प्रेम न करवो. ए आ उद्देशामां छे. जेथी भोगीओने शुं दुःखो थाय छे, ते बतावे छे. पूर्वे पण तेज कहुं छे के भोगीओने कोइ वखते रोग उत्पन्न थाय छे. पूर्वे बताव्युं के संसारमां विषयी जीव परिभ्रमण करे छे. ते जीव आ दुःखोने पण भोगवे छे, आ प्रमाणे त्रीजा उद्देशानो संबंध छे. तथा एना पहेलांना सूत्रनो आ संबंध छे के बालक जेवो जीव प्रेममां पडीने काम भोग करे छे. ते काम दुःखरूपज छे. तेमां आसक्त थएला जीवने वीर्यनो क्षय भगंदर विगेरे रोगो थाय छे. तेथी कहे छे के कामना अभिलाष्यथी अशुभ कर्म बंधाय अने तेथीज मरण थाय छे, पछी नरकमां उत्पन्न थाय छे. अने नरकमांथी नीकळीने माना पेटमां वीर्यना बींदुमां उत्पन्न थइ कलल अर्बुद पेशी व्युह गर्भ प्रसव विगेरेनां दुःख भोगववां पढे छे. त्यार पछी मोटो थतां रोगो थाय छे. आ बधुं अशुभ कर्मनुं फळ उदय आवतां थाय छे, ते रोगो बतावे छे, माथानुं दुखबुं पेटमां शूल उठवी विगेरे रोगो थाय छे. आ रोग उत्पन्न थतां जेनी साथे ते वसे छे. ते सगां तेने निंदे छे. अथवा चाकरी न थतां सगांने ते निंदे छे, वली गुरु कहे छे, के हे शिष्य ! जे सगां उपर मोह राखे छे, ते सगां तेना प्राण रक्षणना माटे थतां नर्थी, तेम तुं पण तेना प्राण शरणना माटे थवानो नर्थी. एवुं जाणीने तथा जे कंइ दुःख सुख आवे छे; ते पोताना कायोंनुंज प्राणीओ फळ भोगवे छे, तेथी रोगेनी उत्पत्तिमां दिनता न लाववी; तथा सुंदर भोगोने याद करवा नहि, तेथी “ सूत्रमां कहुं छे के ” शब्द रूप रस गंध अने स्पर्श ए पांच विषयनो

सूत्रम्

॥३५४॥

आचारा०
॥३५५॥

अभिलाष अमे कोइ पण अवस्थामां भोगवीए एवी इच्छा न करवी, तथा पूर्वे अमारी चढती अवस्थामां तेनो आनंद न लीधो, एवुं पण याद न करवुं, “एटले इच्छा” संसारमां जेमणे विषय रसना कडवां फळ जाण्यां नस्थी तेवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती विगेरेने थाय छे. पण वधाने तेवा भोगनी इच्छा थती नस्थी. जो तेम न मानीए तो सनतकुमार चक्रवर्ती जेवाने पण दोष लागे ते बतावे छे—

ब्रह्मदत्त मरणांतिक रोगनी वेदनाथी पीडाएलो संतापना अतिशयथी पिय स्त्रीने स्पर्श करवा माफक विश्वास भूमीमां मूर्त्तीने पामेलो तेने बहु मानतो तथा कोकडुं वली गएलो तथा विषमतानो विषयी बनेलो ग्लानीथी पीडाएलो दुःख तलवारथी घवाएलो, काळे वाथमां लीधेलो, अने पीडाथी पीडाएलो, नियतिए दुर्दशामां मूकेलो दैवे भाग्यहीन बनावेलो छेवटना उच्छवासमां पहोंचेलो महा प्रवासना मुखमां पडेलो दीर्घ निद्राना द्वारमां पडेलो जीवित इश (जम) ना जीहाग्रे आवेलो, बोलीमां गद गद बनेलो, शरीरमां विहळ बनेलो, प्रलापमां प्रचुर थएलो जृंभिका (रोवा) वडे जीताएलो अर्थात् करेलां पापोथी दुर्गतिमां जवानीतैयारी करी रहेलो. छतां महा मोहना उदयथी सुंदर भोगोनी इच्छावालो पासे बेठेली भार्या जे पोते पतिना दुःखनी भयंकर वेदनाथी पीडाइने आंखमांथी आंसु पाडती राती आंखोवाली सामे बेठेली छे. तेने कहे छे के-हे कुरुमति हे कुरुमति एम वारंवार पोकरवा छतां (ते स्त्रीना देखताज) पोते सातमी नारकीए गयो.

त्यां पण अतिशय वेदना भोगवतो छतां वेदनाने न गणकारतो ते कुरुमतिने बोलावे छे. आ प्रमाणे भोगोनां प्रेम कोइक जी-वोने बीजी गतिमां पण तजवो दुर्लभ छे. पण जे उदार सत्ववाला महान् पुरुषो छे. तेमने ते नस्थी जेमके जेणे आत्माथी शरीर

मूत्रम्

॥३५५॥

आचा०

॥३५६॥

जुदुं जाण्युं छे. एवा सनत्कुमार जेवा तत्प्रेमीओने तेवो भयंकर रोग आववा छतां पण (हायपीट करवाने बदले) में पूर्वे पाप कर्या छे. ते हुं भोगवुं छुं. एवो निश्चय करीने कर्म समूहने तजवा तैयार थएलाने (शरीर दुःख छतां पण) मनमां क्लेश थतो नथी. कहुं छे के—
“ उसो यः स्वत एव मोहसलिलो जन्मालवालोऽशुभो, । रागद्वेषकषायसन्ततिमहान्निर्विघ्नवीजस्त्वया ॥
रोगेरकुरितो विपत्कुसुमितः कर्मद्रुमः साम्प्रतं, ! सोढा नो यदि सम्यगेष फलितो दुःखैरधोगामिभिः ॥१॥

उत्तम पुरुष पोताना आत्माने समजावे छे. के हे आत्मा जे मोहरूपी पाणीवालो अने अशुभ जन्मरूपी “आलवाल” (झाडने पाणी पावानो क्यारो) वालो तथा रागद्वेष तथा कषायनो समूह तेना बडे निर्विघ्नपणे मोडुं बीज तें रोप्युं छे तथा ते हवे रोगे करीने अंकुरावालुं थयुं छे. विपदाओ तेनां फुलो छे. एवुं कर्मरूपी मोडुं झाड तें तैयार कर्युं छे जो हवे तेने सारी रीते सहन नहींकरे तो नीच गतिमां लइ जनार दुःखोए करीने ते फलवालो थशे (जो तुं तेने लीघे हायपीट करीश तो फरीथी दुःखो भोगवां पडशे.)

पुनरपि सहनोयो दुःखपाकस्त्वयाऽयं । न खलु भवति नाशः कर्मणा संचितानाम् ॥

इति सह गणयित्वा यद्यदायाति सम्यग् । सदसदिति विवेकोऽन्यत्र भूयः कुतस्त्यः ? ॥२॥

जो तुं हायपीट करीश तो तारे फरीथी पण दुःखनो पाक भोगववो पडशे. कारणके हायपीटथी बंधायेलां कर्मोनो नाश भोगव्या विना थशे नही. आ प्रमाणे समजीने जे जे दुःख सुख आवे ते सहन कर. तेज विवेक छे. ते सिवाय बीजो विवेक क्यांथी होय (विवेकनुं लक्षण ए छे के दुःख सुखमां हायपीट न करवी पण संतोषथी रहेवुं.)

सूत्रम्

॥३५६॥

आचार
॥३५७॥

भोगोनुं मुख्य कारण धन छे, तेथी तेनुं स्वरूपज सूत्रकार कहे छे.

तिविहेण जाऽवि से तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गद्बृए चिद्वृइ,
भोयणाए, तओ से एगया विपरिसिंहं संभूयं महोवगरणं भवइ, तंपि से एगया दा-
याया विभयंति, अदत्तहारो वा से हरति, रायाणो वा से विलुंपंति, नस्सइ वा से
विणस्सइ वा से, अगारडाहेण वा से डज्जाइ इय, से परस्स अट्टाए क्राणि कम्मा-
णि बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विष्परियासमुच्चेद (सू० ८३)

त्रण प्रकारे एट्ले मन, वचन, अने कायाथी तेनी पासे जे कंड मील्कत थोडी अथवा घणी छे. तेमां भोगी गृद्ध यइने रहे छे.
ते माने छे के—आ मील्कत मारे भविष्यमां भोग भोगवा काम लागशे. तेथी तेनुं रक्षण करवा महान उपकरणो राखे छे. पण
जो तेनुं एकठुं करेलुं धन कोइपण रीते नाश मामे छे एट्ले पीतराइयो भाग पडावे, चोरो चोरी करे, राजाओलुंटे, नाश पामे, बळी-
जाय विगेरेथी पोताने भोगमां न आववाथी इच्छा पुरी न थतां ते घेलो बने छे. अने धनने माटे क्रुर कर्म करतो अज्ञानी जीव
तेना दुःख वडे मूढ बने छे. आ वधुं पूर्वे कहेलुं छे, तेथी समजी लेबुं. अहीं नथी कहेता आ प्रमाणे दुःखना विपाकवाला भोगोने
जाणीने डाहा मुनिए थुं करबुं ते कहे छे.

सूत्रम्

॥३५७॥

आचारो
॥३५८॥

आसं च छन्दं च विगिंच धीरे ? तुमं चेव तं सल्लमाहटद्व, जेण सिया तेण नोसिया,
इणमेव नाव बुज्जंति जे जणा मोहपाउडा, थीभि लोए पब्बहिए, ते भो ! वयंति ए-
याइं आययणाइं, से दुःखवाए मोहाए माराए नरगाए नरगतिरिक्खाए, सययं मूढे
धम्मं नाभि जाणइ, उआहु वीरे, अप्पमाओ महामोहे, अलं कुसलस्स पमाएणं सं-
तिमरणं संपेहाए भेउरधम्मं संपेहाए, नालं पास अलं ते एएहिं (सू० ८४)

गुरु उत्तम शिष्यने कहे छे के—

तुं भोगोनी आशाओने तथा भोगोना अभिलाषोने छोड, धी. (बुद्धि) तेना वडे राजे. (शोभे) ते धीर पुरुष जाणवो.
तेवा उत्तम शिष्यने गुरुनो उपदेश लागे छे. तेथी कहे छे के हे शिष्य ! भोगमां दुःखज छे. अने तेमां सुखनी प्राप्ति नथी. (मृ-
गतृष्णामां जळ नथी. पण जळनो खांटो आभास छे तेम भोगमां सुख नथी.) आ प्रमाणे शिष्यने गुरु समजावे छे. अथवा पोते
आत्माने समजावे छे. के हे आत्मा तुं भोगनी आशा विगेरे शल्यने छोडीने परमशुभ संयम तेनुं सेवन कर. पण भोगोने विसरी जा
कारणके जे जे पैसा विगेरेना उपायथी भोग उपभोगनी आशा छे तेना वडे मळतो नथी. एटले जेना वडे भोगो मळे तेज धन विगेरेथी
कर्मनी परिणति विचित्र होवाथी धार्या करतां उलटुं थाय छे.

सूत्रम्
॥३५९॥

आचारो
॥३५९॥

अथवा गुरु महाराज कहे छे के जेना वडे कर्म बंधन थाय ते कृत्य तारे न करबुं. एटले पापना काममां न वर्तबुं अथवा जेना वडे राजना उपभोग विगेरेनो कर्म बंध छे, ते न करबुं. (एटले संयमथी राज सुख न वांच्छबुं) अथवा जे साधुपणाथी मोक्ष थाय तेज साधु जो भोगमां पडे तो मोक्षने बदले संसार भ्रमण थाय (माटे साधुए दरेक जग्याए विवेकथी वर्तबुं.)

आ प्रमाणे अनुभवथी निश्चय करेलुं छतां मोहथी हारेला जीवो सत्य वातने समजता नथी. आज हेतुनुं विचित्रपणुं छे के जे पुरुषो तीर्थकर प्रभुना उद्देश्यी रहीत छे. तेओनुं मोह तथा अज्ञान वडे अथवा मिथ्यात्वना उदयथी तत्व संबंधी ज्ञान बंधाएलुं छे. तेओ मोहनीय कर्मना उदयथी मूढ बने छे. अने तेओने स्त्रीओ भोगनुं मुख्य कारण छे, ते बतावे छे.

एटले युवान स्त्रीओना कटाक्ष अंगना चाळा सुंदर देखाव हाथना लटका विगेरेथी आ लोक (संसारी जीव समूह) आशा अने अभिलाषथी हारेला जीवो क्रूर कर्म करीने नरक विपाक फळरूप शल्यने मेलवीने ते दुर्गतिना दुःखरूप फळने विसरीने मोहथी सुमति (अंतरात्मा) ने विसरेलो प्रकर्षे करीने पीडाएलो पराजीत बने छे. एटले पोतेज परवश थाय छे. एटलुं नहीं पण बीजाओने पण वारंवार खोटो उपदेश आपीने दुर्गतिमां लङ जाय छे. ते मूढो आ प्रमाणे बोले छे. आ स्त्री विगेरे उपभोगने वास्ते आनंदमां स्थान बनावेलां छे. एना विना शरीरनी स्थिति नज थाय अने ते उपदेश तेओना दुःखना माटे थाय छे. एटले तेमना कहेवा प्रमाणे चालनारने पण शरीर तथा मननां दुःखो भोगवां पडे छे. अथवा मोहनीय कर्म बंधाय छे, अथवा ते अज्ञानी बने छे. अने वारंवार तेमने मरणनां दुःख थाय छे. नरकमां जबुं पडे छे, त्यांथी नीकलीने तिर्यंच थबुं पडे छे. आबधानो मूळ कारण स्त्रीमां मोह पामवानुं

सूत्रम्

॥३५९॥

आचार
॥३६०॥

छे. एटले सर्व भोगोमां मुख्य भोगनुं स्थान आ स्त्री छे. अने तेर्थीज वधां दुःख छे एम वधी जग्याए संबंध लेवो.

आ प्रमाणे स्त्रीना हावभावथी तेना अंग जोवामां रसीओ बनेलो उपर कहेली योनीओमां भमतो छतां आत्माना हितने जाणतो नथी. तथा निरंतर दुःखथी हारीने मूढ बनेलो क्षमा विगेरे दश प्रकारना लक्षणवाला साधु धर्मने जाणतो नथी. अने ते धर्म दुर्गतिना भमणने रोकनार छे. तेबुं जाणतो नथी. आ तीर्थकरे कहेलुं छे कोणे कहुं ? ते कहे छे.

जेणे संसारनो भय विसार्यो ते वीर प्रभुए कहुं छे. हे शिष्यो, तमारे महा मोहमां एटले स्त्रीओना हावभावमां रक्त थबुं नहीं पण सावचेत रहेबुं. तेज महा मोहनुं कारण छे. एटले ते स्त्रीमां जराए पण रागी न थबुं प्रमाद न करवो. आ निषुण बुद्धिवाला शिष्यने माटे आटलुं वचन वस छे. वली मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, ए पांच प्रकारना प्रमादथी तमारे सावचेत रहेबुं कारणके ते प्रमाद उपर कहेलां दुःखो आपवाने माटेज छे.

प्रश्न—शुं आधार लइने प्रमादने छोडवो ?

उत्तर—शांति एटले शमन ते वधा कर्मनो नाश जाणवो ते मोक्ष तेज शांति छे.

प्राणीओ वारंवार चार गतिना संसारमां मरण जेना वडे पाये छे, ते संसार छे. ते शांति अने मरण ए बनेने विचारीने प्रमाद छोडवो. गुरु कहे छे के हे शिष्य, एक बाजु प्रमादीने वारंवार जन्म मरणनुं दुख छे. अने बीजी बाजु अप्रमादीने जन्म मरणना त्यागरूप अनंतुं सुख छे ए बनेने कुशल बुद्धिवाला शिष्ये विचारीने विषय कृषायरूप प्रमादने न करवो.

सुत्रम्
॥३६०॥

आचारा०
॥३६१॥

अथवा शांतिवडे मरण एटले मरणसुधी जे फळ थाय छे ते विचारीने प्रमाद न करवो. एटले जीवतां सुधी उत्तम पुरुषे कोइपण साथे क्लेश न करवो. अने ते क्लेश प्रमादथी थाय छे माटे प्रमाद न करवो.

बळी विषय कषाय अने स्त्रीना विलासरूप जे प्रमाद छे ते शरीरना अंदर रहेलो छे. अने ते शरीर पोतानी मेळे नाश पामनारूं छे. तो तेवा नाशवंत शरीरने विचारीने साधुए प्रमाद न करवो. (जे शरीरना माटे प्रयास थाय ते शरीर नाशवंत छे. धन अहींज रहेवानुं छे.) एटले भोगो भोगववा छतां पण तृप्ति थती नथी. तेम भोगो अभिलाषने संतोष पमाडी शकता नथी. माटे हे शिष्य! तारी बुद्धिवडे जो के दुःखना कारणवाला प्रमादरूप विषयोनुं भोगववुं छे ते तृप्तिने अथवा शांतिने आपता नथी. कहुं छे के—

“यल्लोके ब्राह्मियवं, हिरण्यं पशवः स्त्रोयः । नालमेकस्य तत्सर्वमिति मत्वा शमं कुरु ॥ १ ॥

आ लोकना विषे त्रीहि, जव, सोनुं, पशुओ, स्त्रीओ, विगेरे बधुं पण एक माणसनी तृप्तिना माटे समर्थ नथी एबुं समजीने तेनो मोह छोड, आत्माने शान्त कर.

उपभोगो पायपरो वांछति यः शमयितुं विषयतृष्णाम् । धावत्याक्रमि तुमसौ, पुरोऽपराह्ने निजच्छायाम् ॥२॥

उपभोगना उपायमां तत्पर थएलो जे विषय तृष्णाने शान्त करवा इच्छे छे तो फरीथी आंतरे पोतानी छायामां आक्रमण करवाने ते तृष्णा तैयार रहे छे (एक इच्छा पूरी करीके बीजी तैयारज छे. तृष्णानो अंत कोइ वर्खत नथी) तेथी भोगना लालचुओने तेजी प्राप्तिमां के अप्राप्तिमां दुःखज छे ते बतावे छे.

सुत्रम्

॥३६१॥

आचारो
॥३६२॥

एयं पस्स मुणी ! महब्भयं, नाइवाइज्ज कंचणं, एस वीरे पसंसिए जे न निविज्जइ,
आयाणाए, न मे देइ न कुपिजा थोवं लङ्घुं न खिंसए, पडिसेहिओ परिणमिजा एयं
मोणं समणुवासिज्जासि (सू० ८५) ॥त्तिवेमि॥

गुरु सारा शिष्यने कहे छे के हे मुनि ! भोगनी आशारूप महा तापथी घेरायेला पुरुषने कामदशानी अवस्थाना मोटा भयने
तुं प्रत्यक्ष जो, कामीने डगले डगले बीजानो भय छे. तेथी मोटो भय तेज दुःख छे. अने भोग लंपटोने मरणनुं कारण छे. तेथी ते
मोटो भय कहो, तेथी हे शिष्य ! आ लोक अने परलोकमां भय आपनार भोगोने जाण, तेथी शिष्ये शुं करवुं ते गुरु कहे छे.

माटे तुं ते भोगोथी तारा आत्माने दुर्गतिमां न नाखीश, तुं कोइ जीवोने दुःख न आपीश. तेज प्रमाणे बीजा कोइने जुङुं
बोली न फसावीश तेम चोरी पण न करीश विगेरे पांचे पापोने त्यजजे.

जे भोगथी दूर रहे छे अने जीव हिंसाथी दूर रहे छे. ते महात्माने शुं गुण थाय छे ते बतावे छे. ते भोगोनी आशा अभिलाषा
त्यागनार अप्रमादि साधु पंच महावतना भारथी पोतानो स्कंध नमावेलो अनेक कर्म विदारण करवाथी वीर पुरुष इंद्र विगेरेथी स्तुति कराय छे.
प्रश्न—क्या पुरुषनी स्तुति थाय छे ?

उत्तर—जे महात्मा आत्माने ग्रहण करवा योग्य तत्वने ग्रहण करे छे एटले वधां धातीकर्म क्षय थवाथी बधी वस्तुनो प्रकाश
करनार केवलज्ञान तेने प्रकट थवाथी अव्यावाध सुख मळे छे. ते ज्ञान मळवानुं मुख्य कारण संयमनुं अनुष्ठान छे. तेमां दोष ल-

सूत्रम्

॥३६२॥

आचारा०

॥३६३॥

गाडतो नथी. अथवा रेतीना कोळीआ खावा मुळकेल छे तेबुं संयम पाळबुं कठण छे छतां पाळे छे. एटले कोइ वरवत गोचरी न मळे तोपण साधु संयमने भूके नहिं तेम मनभां दिनता पण न लावे.

अथवा आ गृहस्थ पोतानी पासे वस्तु छे छतां मने आपतो नथी. एबुं मानीने तेना उपर क्रोध न लावे. परंतु मुनिए एम मानबुं के आ मने अंतराय कर्मनो दोष छे. अने न मळवाथी तपनो लाभ थशे तेथी मने कांड्यण नुकसान नथी. अथवा थोडुं आपे अथवा तुच्छ खोराक आपे तोपण दान आपनारने निंदे नही.

कोइ गृहस्थ ना पाढे तो त्यांथी रीसाया विना खसी जबुं. एकक्षण मात्र पण हठ लङ्घ उभा न रहेबुं. अथवा दान आपनारी बाइने कडु वचन न कहेवां जेमके तारा गृहस्थावासने धिकार छे ?

“दिद्वाऽसि कसेरुमई ! अणुभूयासि कसेरुमई !। पीयं चिय ते पाणिययं वरि तुह नाम न दंसणं ॥१॥”

हे उदार बूद्धिवाली स्त्री ! तने जोइ ! हे उदार बूद्धिवाली ! तारो अनुभव कर्यो ! तारुं पाणी पीधुंज ! तारुं नाम सारुं ! आटलुं वधुं छतां पण तारुं दर्शन सारुं नथी. (आबुं साधुए बोलबुं नहि.)

कदाच ते आपेतो लङ्घने रस्तो पकडवो. पण त्यां उभारहीने नीचा उचा वचन वडे तेनी स्तुति निंदा न करवी. अर्थात् भाटनी माफक तेनां खोटां गीतडां न गावां. आ वधानो सार कहे छे.

आ प्रवज्याना निर्वेदरूप (शांतिथी) दातार उपर न आपे तो पण कोप न करवो, थोडुं आपे तो निंदा न करवी. आपे तो ल-

सूत्रम्

॥३६३॥

आचार

॥३६४॥

इने चालता थवुं. आ मुनिनुं मौन छे. एटले मोक्षार्थि साधुनुं आ आचरण छे. तुं पण अनेक भव कोटिने भ्रमण करता अमूल्य एवा संयमने पामीने सारी रीते पाळजे, आम गुरु शिष्यने समजावे छे. अथवा पोताना आत्माने उपदेश आपे छे. के तुं राग द्वेष न करजे.
चोथो उद्देशो समाप्त थयो.

०५८४

हवे पांचमो उद्देशो कहे छे. तेनो आ संबंध छे आ लोकमां भोगोने तजीने संयम देह पाळवाने माटे लोकनी निश्राए विहार करवो जोइए. ते आ उद्देशमां बतावे छे.

आ लोकमां संसारथी खेद पामेला भोगना अभिलाष तजेला मोक्षाभिलाषिए पोतानामां गुरुए स्थापन करेला पंच महाव्रत भार वडे निर्वद्य अनुष्ठान करनारा मुनिए दीर्घ संयमनी यात्रा माटे देहनुं परिपालन करवा लोकनी निश्राए विहार करवो जोइए, कारण के आश्रय विना देहनां साधन क्यांथी थाय ? अने देह विना धर्म क्यांथी थाय ? कहुं छे के—

“धर्मं चरतः साधोलोके निश्रापदानि पञ्चापि । राजा गृहपतिरपरः षट्काया गणशरीरे च ॥१॥”

धर्ममां चालनारा साधुने लोकमां पांच निश्रानां पद छे, राजा गृहस्थ छकाय साधु समूह तथा शरीर ए पांच जाणवां वस्त्र, पात्र, अन्न, आसन, शयन, विगेरे साधनो छे. तेमां पण प्रायः निरंतर आहारनो मुख्य उपयोग छे. अने ते आहार गृहस्थ पासेथीज लेवानो छे. अने गृहस्थो जुदा जुदा उपायो वडे, पोताना पुत्र स्त्री विगेरे माटे आरंभमां प्रवर्तेला छे, तेमने त्यां साधुए संयम देहनी

सुत्रम्

॥३६४॥

आचा०
॥३६५॥

रक्षामाटे निर्वाह करवा जोइती वस्तु शोधवी जोइए. ते बतावे छे-

जमिणं विरुवरूबेहिं, सत्थेहिं लोगस्स 'कम्मसमारंभा' कज्जंति, तंजहा-अप्पणो से
पुत्ताणं, धूयाणं सुण्हाणं नाईणं, धाईणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्म
करीणं आएसाए पुढोपहेणाए सामासाए पायरासाए संनिहि संनिचओ कज्जई,
इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए (सू० ८६)

तत्वने जाणनारा पुरुषो सुख मेळववा तथा दुःख छोडवा माटे जुदांजुदां शखो जे प्राणीओने दुःख आपनारां छे, ते द्रव्य अने
भावथी बे प्रकारनां बताव्यां छे, तेनावडे पोतानुं शरीर पुत्र दीकरी छोकरानी वहु ज्ञाती विगेरेना निर्वाह माटे कर्मना समारंभो
करे छे, ते बतावे छे.

सुख मेळववुं, दुःख छोडवुं, तेना माटे कायाथी अधिकरणवडे, अथवा द्रेषथी, परिताप उपजाववावडे, अथवा जीवथी शरीर
दूर करवावाली पांच पापनी क्रियाओ छे, अथवा खेतीवाडी व्यापार विगेरे कर्मना समारंभो छे, ते लोको करे छे.

आ समारंभ शब्द लेवाथी "संरंभ." तथा आरंभ पण जाणी लेवा एटले शरीर अने स्त्री माटे लोको संरंभ समारंभ अने आरंभो करे छे.
संरंभनुं वर्णन—इष्ट प्राप्ति अनिष्ट छोडवुं. तेने माटे प्राणातिपात विगेरे, संकल्पनो आवैश्य जाणवो.

सूत्रम्
॥३६५॥

आचार्य

॥३६६॥

समारंभनुं वर्णन—संकल्प कर्या पछी तेनां साधन भेगां करवां, तथा काया अने वचनना वेपारथी बीजाने परिताप विगेरेना लक्षणवालो छे, आरंभनुं वर्णन—त्रण दंड (मन वचन काया) ना व्यापारथी मेल्वेली तथा उपयोगमां लीधेली जीव हिंसा विगेरेनी क्रिया चालु करवी, ते आरंभ छे, अथवा आठ प्रकारना कर्मना समारंभ, एटले जोइती वस्तुने मेल्ववाना उपायो करवा ते.

सूत्रमां लोक शब्द छे, ते लोक क्यो छे, के जेना वडे आरंभो कराय छे ? ते बतावे छे.

आत्मा शरीरथी जोडाएलो छे, ते शरीर निभाववा लोको आरंभ करे छे, तेज प्रमाणे पुत्र दीकरी विगेरे माटे पण आरंभ कराय छे, एटले रसोइ विगेरे बनाववी पडे छे. तेवी रीते बीजा आरंभो पण करवा पडे छे एवुं पूर्वे कह्युं छे.

प्रश्न—शरीर लोकशब्दना अर्थमां केवीरीने घटे. ?

उत्तर—तमासुं कहेवुं बराबर नथी, कारण के परमार्थ दृष्टिथी जोनाराओने ज्ञान दर्शन चारित्ररूप अत्यतत्सने छोडीने वाकीनुं शरीर विगेरे पण पारकुंज छे, कह्युं छे के—बहारना पुद्धलनुं बनेलुं अचेतनरूप कर्मनुं विपाकरूप पांचे शरीरो छे. तेथी शरीर आत्म पण लोक शब्दवडे बताव्यो, तेथी कोइ शरीर माटे पापक्रियाओ करे छे, बीजो कोइ दीकरा दीकरी माटे, तो कोइ दीकरानी वहुने माटे तो कोइ न्यात माटे, तेज प्रमाणे संबंधथी जोडाएलां सगां, धाव माता माटे, राजा माटे दास दासी माटे नोकर नोकरडी माटे आरंभ करे छे, कोइ परोणा माटे करे छे, कोइ जुदा जुदा पुत्र विगेरेने प्रहेणक माटे करे छे, कोइ रात्रिमां खावा रांधे छे. कोइ प्रभातमां खावा रांधे छे, ते आ बधामां कर्म समारंभ छे, वली विशेष कहे छे—

सूत्रम्

॥३६६॥

आचारो

॥३६७॥

जलदी नाश पामे तेवी वस्तुओने राखी मूके छे, दहीं भात मेल्वी राखे छे, तथा घणो काळ रही शके तेवी वस्तुओनो संचय पण करे छे, ते बाल हरडे, साकर द्राक्ष, विगेरेने संघरे छे, आ बधुं परिग्रह विगेरे आजीविकाना कारणे छे, अथवा धनधान्य सोनुं विगेरेनो संग्रह करे छे. आ बधुं शा माटे करे छे ते कहे छे:—

आ लोकमां परमार्थ बुद्धिवाक्ता मुनिओने जमाडवा माटे करे छे, एटले कोइ स्वार्थ माटे, तथा कोइ परमार्थ माटे रात्रिमां, प्रभातमां के दिवसमां भोजन माटे के, निर्वाह माटे संसारी-पापक्रियाओ करे छे, अने विरूप शख्सोवडे बीजां जीवोने पीडा करे छे. आ प्रमाणे लोकनी स्थिति होय; तो, साधुए शुं करबुं ते कहे छे:—

**समुद्धिए अणगारे आरिए आरियपन्ने आरियदंसी अयंसंधित्ति अदक्खु, से नाईए ना-
इयावए न समणुजाणइ, सद्वामगंधं परिज्ञाय निरामगंधो परिव्वए (सू० ८७)**

जे साधु सम्यक् रीते निरंतर संयम अनुष्ठानवडे वर्ते छे, ते जुदां जुदां शख्सोवडे थती पापक्रियाथी मुक्त थयलो छे, ते मुनिने घर नथी; तेम ममत्व पण नथी; तेथी ते अनगार छे, तेम तेने गृहस्थनी माफक दीकरा-दीकरी वहु विगेरेने पण पोषवां नथी. ते अनगार पोते बधां पापकर्मोथी दूर थयेल छे, तेथी ते आर्य छे, तेथी ते चारित्रने पाळवा योग्य छे. वळी जेनी बुद्धि उत्तम छे, ते आर्य प्रज्ञावाळो जाणवो; एटले सूत्र भण्याथी; जेनी बुद्धि परमार्थमां खीलेली छे, तथा न्यायमां मन रहेलुं होवाथी ते न्यायने जुए तेथी ते आर्यदर्शी छे, एटले ते जुदा “ प्रहेणक ‘ श्यामा ’ अशन ” (पूर्वे परोणा विगेरे माटे राते रांधबुं; विगेरे तेनाथी मुक्त)

सूत्रम्

॥३६७॥

आचार
॥३६८॥

छे, तथा पोते “अयंसंधि” छे, एटले पोतानां दरेक कार्य योग्यवस्थाते करनारो छे. ज्यारे जे करबुं होय; ते प्रमाणे करे छे. कपडां जोवां; ध्यान राखबुं; सिद्धांत भणवो; गोचरी जबुं; प्रतिक्रमण करबुं. विगेरे दरेक क्रिया एकबीजाने ‘बाधा’ विना समये समये करे छे, तेज परमार्थने जोनारो जाणवो. तथा ते मुनि “अदक्खु” छे, एटले जे आर्य छे, आर्यबुद्धिवालो छे. आर्यदर्शी छे, काळने जाणनारो छे, तेज परमार्थने जाणनारो जाणवो. बीजी प्रतिमां सूत्रपाठमां भेद छे, ते,

अयं संधिमदक्खु छे—

तेनो अर्थ कहे छेः—पूर्वे बतावेलां उत्तम विशेषणवालो साधु कर्त्तव्यकाळने जाणे छे, एटले जे परस्पर हित-अहित मेलबुं, छोडबुं; विगेरे क्रियाने बाधा न करतां; प्रथम अवसरने जाणे छे, अने ते प्रमाणे करे छे. ते परमार्थने जाणनारो छे.

भावसंधि—ज्ञान दर्शन अने चारित्र तेनी वृद्धि शरीर विना न थाय, अने शरीरनो निर्वाह आहारना कारण विना न थाय, अने तेमां पण सावद्यनो त्याग करवानो छे. तेथी ते भिसुक जे उत्तम साधु छे, ते पोते दोषित आहारने ग्रहण न करे तेम बीजा पासे लेवढावे नहीं, अथवा कोइ लेतो होय तेने अनुमोदे नहीं, अथवा इंगाल दोष, अथवा धुम दोष, न लगाडे, एटले सारा आहारनी स्तुति न करे, तेम खराब आहारनी निंदा पण न करे, तेज प्रमाणे बीजा पासे तेवा दोषो न लागवा दे, तथा तेवा निंदा स्तुति करनारानी प्रशंसा पण न करे, तथा आम गंधने छोडे एटले अशुद्ध आहार वडे दोष न लगाढवो जोइए.

शंका—पूर्ति शब्दनो अर्थ अशुद्ध छे, तो आम शब्द शा माटे वापर्यो ?

सूत्रम्

॥३६८॥

आचारो
॥३६९॥

उत्तर-अशुद्ध ते सामान्य शब्द छे, अने पूति शब्द लेवाथी अहीं आधाकर्म विगेरेनी अशुद्ध कोटि पण बतावी, अने तेनो मोटो दोष होवाथी तेनुं प्रधानपणुं बताववा फरी कहुं छे, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे. गंध शब्द लेवाथी (१) आधाकर्म (२) औडे-शिकत्रिक (३) पूति कर्म (४) मिश्र (५) बादर प्राभृतिका (६) अध्यय पूर्वक एम छ प्रकारना उद्गम दोष अविशुद्ध कोटिनी अंदर रहेला छे, अने बाकीना विशुद्धकोटिमां छे ते आम शब्दवडे बताव्या छे, तथा सूत्रमां सर्व शब्द छे, ते बधा प्रकारोने सूचवे छे, तेथी एम जाणबुं के, कोइपण प्रकारे अपरिशुद्ध, अथवा पूति होय; तो, ते दोषित भोजन विगेरे झ-परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान, परिज्ञावडे निरामगंधवाळो बने; एटले निर्दोष भोजन विगेरे लेनारो वर्ते; बने; तेथी पोते ज्ञान दर्शन-चारित्र नामना मोक्षमार्गमा सारीरीते वर्ते; अने संयम अनुष्ठानने पाळे.

आम शब्द ग्रहण करवाथी खरीद करेलुं साधुने न कल्पे; छतां, अल्पसत्त्ववाळा साधुने ओळुं समजाय; तेथी विशुद्धकोटिमां रहेल व्रतदोष छे, एम जाणीने ते ले, तेवी तेनी दृत्ति, न थाओ; ते माटे फरीथी तेनुं नाम लङ्ने निषेध करे छे. साधु माटे वेचातुं आणेलुं; पण साधुए न लेबुं ते बतावे छे:—

अदिस्समाणे क्यविक्येसु, से ण किणे न किणावए, किणंतं न समणुजाणइ, से भिक्खू कालन्ने बालन्ने मायन्ने खेयन्ने खण्यन्ने विण्यन्ने ससमयपरसमयन्ने भाव-
न्ने परिगग्हं अममायमाणे कालाणुढाई अपडिणे (सू० ८८)

सूत्रम्

॥३६९॥

आचारो
॥३७०॥

लेबुं, वेचबुं, ते क्रय-विक्रय छे. ते पोते तेनाथी अहश्य रहे; अर्थात् पोते साधु माटे खरीद करेली वस्तुने भोगवे नहि; एटले मोक्षवांच्छक साधु कर्म ऊपकरणोने पण खरीद न करे; बीजा पासे न करावे; तेम खरीद करनारने प्रशंसे पण नहि; अथवा निरामयधवाळो बनी साधुपणुं पाळे. अहीयां पण आम शब्द ग्रहण करवार्थी हननकोटिनी त्रिक छे, तथा गंध ग्रहणवडे पचनत्रिक लेवी; तथा क्रयणकोटित्रिक ते पोतानां स्वरूप बतावनारा शब्दवडे लीधी छे, एथी नवकोटि परिशुद्ध आहारने अंगार धूमदोषरहित साधु ‘भोजन’ करे अथवा वस्तुने भोगवे.

ए गुणथी उत्तम साधु केवो होय ते कहे छे, ते भिक्षुक (साधु) समयनो जाण होय छे. तथा बळने जाणनारो छे, एटले पोतानी शरीरशक्ति विचारीने ते प्रमाणे धर्मक्रिया करे छे, पण बळने छुपावी राखतो नथी. करवाना काममां प्रमाद करतो नथी, तथा पोताने केटली वस्तु जोइशे, तेने जाणनारो छे, ते “मात्रज्ञ” कहेवाय छे. तथा ‘खेद’ ते अभ्यास तेनावडे जाणनारो छे. अथवा खेद एटले ‘श्रम’ के, संसारना भ्रमणमां आटलुं दुःख छे, तेने जाणे छे. कह्युं छे के—

“जरामरणदोर्गत्यव्याधयस्तावदासताम् । मन्ये जन्मैव धीरस्य, भूयो भूयस्त्रपाकरम्” ॥१॥

जरा (बुद्धापो) मरण, दुर्गति, रोग, आ मोटी पीडा ‘तो’ ‘दूर’ रहो, पण धीर पुरुषने विचारतां मालुम पडशे के, जन्म वारे वारे लेवो, ते जन्म वरवतनी अवस्था पण निंदनीक छे, एवं हुं मानुं छुं.

अथवा क्षेत्रज्ञ शब्द लङ्घ तो संसक्त (रागनुं कारण) विरुद्ध द्रव्य, परिहार्य, (तजवा योग्य) कुळ विगेरे क्षेत्रनुं स्वरूप जाणनारो

सूत्रम्

॥३७०॥

आचारो
॥३७१॥

एटले आ जग्याए जवाथी राग थशे, आ जग्याए जवाथी द्वेष थशे, अमुक जग्याएथी अमुक वस्तु मळशे, आवां भ्रष्ट क्षेत्रमां गोचरी लेवा योग्य नथी. विगेरे स्थिति जाणनार तथा “खण यन्न” एटले क्षण (अबसर) एटले अमुक वस्तुते गोचरी जवुं ते जाणनारो मुनि होय छे, तथा ज्ञान दर्शन चारित्रने योग्य रीते पाळवां, ते ‘विनय’ छे, तेने जाणनारो छे. तथा जैन तथा अन्य मतोना तवने जाणनारो छे. एटले पोताना सिद्धांतनो जाण होवाथी गोचरी विगेरेमां गणलो सुखेथी गोचरीना दोषोने जाणे छे. ते दोषो नीचे मुजब छे.

सोळ उद्धर दोषो कहे छे—

१ आधाकर्मी (साधुना माटे रांधेलुं) २ औदेशिक (अमुक मुनि माटे अमुक भोजन बनावेलुं) ३ पूतिकर्म (निर्दोष अन्नने आधा कर्म साथे मेळवुं) ४ मिश्र (साधु तथा पोताना माटे भेगु बनावेलुं) ५ स्थापना [साधुना माटे राखी मुकेलुं] ६ प्राभृतिका [साधुना माटे वहेलुं मोडुं कार्य करवुं] ७ प्रकाशकरण [अंधारमांथी अजवाळे बहार लावे. अथवा दीवी विगेरे करे ते.] ८ क्रीत [वेचातुं लावेलुं.] ९ उद्यतक [उद्यारे लावीने आपवुं ते.] १० परिवर्त्तित [बदली करीने लावे ते.] ११ अभ्याहृत (सामे लावीने आपवुं.) १२ उद्भिन्न (लाख विगेरे शील तोडीने आपवुं.) १३ मालापहृत (उपरथी नीचे लावीने आपवुं.) १४ अछेव (जोर जुलम करी बीजा पासेथी लड्ने आपवुं) १५ अनिसृष्ट [घणाओनी भेगी रसोइमांथी वगर रजाए एक माणस आपे ते.] १६ अध्यव पूर्वक [साधुने आवता जाणीने तेमना माटे पूर्व रंधाता अनाजमां थोडुं उमेरे ते.] आ उपरना सोळ दोषो वोहोरावनार तरफथी साधुने लागे छे.

सोळ उत्पाद दोषो कहे छे—

सूत्रम्

॥३७१॥

आचार
॥३७२॥

१ धात्रीपिंड. [गृहस्थना छोकराने रमाडीने साधु ले ते.] २ दूतीपिंड-परदेशना समाचार आपीने गोजरी ले ते. ३ निमित्त-
पिंड [ज्यीतिषथी समजावी गोचरी ले.] ४ आजीवपिंड [पोतानी पहेलांनी अवस्था बतावी गोचरी ले ते.) ५ बनीपकपिंड (जैनेतर
पासे तेनो गुरु बनी गोचरी ले ते.) ६ चिकित्सापिंड (दवा करीने गोचरी ले ते.) ७ क्रोधपिंड (धमकावीने गोचरी ले ते.) ८ मा-
नपिंड (पोतानी उंच जाति विगेरे बतावीने गोचरी ले ते.) ९ मायापिंड (वेष बदलीने गोचरी ले ते.) १० लोभपिंड (स्वादिष्ट भो-
जन माटे वारंवार ते जग्याए गोचरी लेवा जाय ते.) ११ पूर्व स्तवपिंड (पहेलांना सगणनो परिचय कराववो) १२ पश्चात् संस्त-
वपिंड (तेना संबंधीना गुण गाइने गोचरी ले ते.) १३ विद्यापिंड छोकरा भणावीने गोचरी ले ते. १४ मंत्रपिंड कामण दुमणना
मंत्र बतावीने गोचरी लेवी ते. १५ चुर्णयोगपिंड-वास क्षेप विगेरे भंत्री आपीने गोचरी ले ते. १६ मूळ कर्मपिंड-गर्भ रहेवा संबंधी
उपाय विगेरे बतावीने गोचरीले ते. आ उपरना सोळ दोषो गोचरी लेनार साधुने पोताने लीवे थाय छे.

दश एषणा दोषो आपनार लेनारना भेगा थवाथी बने ते कहे छे.

१ शंकित-अशुद्ध आहारनी शंका छतां लेवुं ते २ भ्रक्षित-अशुद्ध वस्तुथी खरडाएला हाथे लेवुं ते. ३ निक्षिप्त-सचित्त वस्तुमां
पडेली अचित्त वस्तु मुकेली लेवी ते. ४ पिहित-अचित्त वस्तु उपर सचित्त वस्तु ढांकेली होय ते अचित्त वस्तु ले तो तेनो पण दोष
लागे ५ संहत-बीजा वासणमां नाखीने आपे ते. ६ दायक-आपनारने भान न होय ते ले ते. ७ मिश्र-सचित्तमां अचित्त वस्तु
मेळवीने आपे ते. ८ अपरिणत-अचित्त थया विनानी वस्तु आपे ते. ९ लिस. लीट-बळखा विगेरे गंदा हाथथी आपे ते. १० ऊज्ज्ञित-

सूत्रम्
॥३७२॥

आचार
॥३७३॥

छांटा पाडती आपे ते. उपरना दश दोषो लेनार तथा आपनार, बनेजा मेगा थाय छे,

पर समयज्ञ होवाथी ऊनाळाना बपोरे खरा तडकाना तापमां तपेला सूरजयी परसेवाना ‘बिंदु उपकता साधुना मेला शरीरने जोइ कोइ अन्य गृहस्थे पूछयुं के, भाइ तमारामां वधा माणसोए उचित्त मानेलुं स्नान शामाटे नथी करता ? त्यारे साधुए जवाब आप्यो के, हे वंधु ! सर्व साधुओने जलनुं स्नान छे. ते काम ‘हीनो अभिलाष’ तेनुं एक अंग छे. तेथी निषेध कयों छे ते सांभळोः-

“स्नानं मददर्पकरं, कामाङुं प्रथमं स्मृतम् । तस्मात्कामं परित्यज्य, नैव स्नान्ति दमे रताः ॥१॥”

स्नान मदनो दर्प करावनार छे, तथा कामनुं पहेलुं अंग छे. माटे कामने छोडनारा ब्रह्मचारी, अने दमनमां रक्त थयेला छे तेओ स्नान करता नथी. आ प्रमाणे स्व अने परसिद्धांतने जाणनारो परने उत्तर आपवामां कुशल होय छे, तथा भावज्ञ एटले, चित्तना अभिप्रायने जाणनारो छे के आ ‘दान’ आपनार के, व्याख्यान सांभळनारनो आवो अभिप्राय छे. वळी परिग्रह ते, संयममां जोइतां ऊपकरणथी वधारे छे, ते न ले, अने लेवानी पण मनमां इच्छा न राखे; तेवा साधु काळज्ञ, बळज्ञ, मात्रज्ञ, क्षेत्रज्ञ, खेदज्ञ, क्षणज्ञ, विनयज्ञ, समयज्ञ, भावज्ञ; होय ते परिग्रहने ग्रहण न करतो योग्यसमये योग्यक्रियानो करनारो बने छे.

शंका—पूर्वे ‘काळज्ञ’ शब्दमां ते वात आवी छे, अने अहीं फरीथी केम कहो छो ?

उत्तरः—त्यां इपरिज्ञावडे जाणवानुं छे, अने अहींयां कर्तव्य करवानुं छे.

वळी कोइपण जातनुं नियाणुं न करे; ते अप्रतिज्ञ छे. जेमके, क्रोधना कारणे स्कंदक आचार्ये पोताना शिष्योने घाणीमां पीलेला

सूत्रम्

॥३७३॥

आचारा०

॥३७४॥

जोइने प्रतिज्ञा करी के, जो मारुं ‘तप-तेज’ होय; तो, बीजा भवमां लक्षकर, वाहन, राजधानीसहित पुरोहित, जेणे मने दुःख दीर्घुं छे, ते बधानो नाश करीश. ते प्रमाणे पाल्लथी देवता थइने नाश कर्यो, तेज प्रमाणे मानना उदयथी बाहुबलीए प्रतिज्ञा करी के, प्रथम दिक्षा लीधेला नाना भाइओने हुं केवीरीते नभस्कार करुं. कारण के तेओ केवलज्ञानी थया छे, अने हुं छदमस्थ ज्ञानवाळो हुं. तेज प्रमाणे कपटना उदयथी मल्लिस्वामीना जीवे पूर्व भवमां वधारे उंचुं पद लेवा बीजा मित्र साधुओने ठगवा माटे कर्युं हतुं, एटले पेला मित्रोने खबडावीने पोते उपवास करेल हता ते, तथा लोभना उदयथी परमार्थ न जाणनारा वर्तमाननो लाभ जोनार यतिनो बेश राखनारा मास क्षण (महीना महीनाना उपवास) करनारा छतां प्रतिज्ञा (नियाणुं) करे छे, (अर्थात् क्रोध, मान, मायाना लोभथी चारित्र भ्रष्ट न करवुं. ते बताव्युं छे.)

अथवा वसुदेव माफक संयमनुं अनुष्टान करतो नियाणुं न करे के हुं आवता भवमां आवा भोग भोगवनारो थाउं अथवा गोचरी विगेरेमां गएलो एवी प्रतिज्ञा न करे के मने आवीज गोचरी मळवी जोइए, अथवा जैन मतमां स्याद्वाद् प्रधान होवाथी जिन वचनमां एकांत पक्ष ग्रहण न करे, ते अपतिज्ञ जाणवो, जेम के मैथुन विषय छोडीने कोइपण जग्याए कोइपण नियमवाली प्रतिज्ञा न करवी जेथी कहुं छे के:—

“न य किंचि अणुपणायं, पडिसिद्धं वावि जिणवरिदेहिं । मोक्षं मेहुणभावं न तं विणा रागदोसेहिं ॥१॥”

जिनेश्वरे कंइपण कल्पनीयनी आज्ञा आपी नथी. अने कारण वडे कोइपण जातनो निषेध पण कर्यो नथी; पण तीर्थकरोनी आ

सूत्रम्

॥३७४॥

आचारा०

॥३७५॥

निश्चय वहेवार 'बे' नयने आश्रयी सम्यक् आज्ञा मानवी के ज्ञानादि आलंबन 'ना' कार्यमां सत्यवडे सारां स्वभाववाळा साधुए थवुं; पण कपटथी कंइपण खोटो आश्रय न लेवो.

तात्त्वीकज्ञान विगेरेना आलंबननी सिद्धिथीज मोक्षमार्गनी सिद्धिवाळा बाह्य अनुष्ठाननी सिद्धि छे, कारणके, बाह्यअनुष्ठानमां अ-
नेकांतवाद, अने अत्यंतिपिणुं न होवाथी समजवुं. आज प्रमाणे करवाथी द्रव्यत्त्वनी सिद्धि थाय छे, अथवा सत्य नाम संयमनुं छे,
तेनावडे कार्य उत्पन्न थतां तेम नेम वर्तवुं; अने नेनुं उत्सर्पण (वर्धवुं.) पण शक्तिने छुपाव्या विना निर्वाह करवो. अर्थात् शक्ति प्रमाणे
संयम पाळवामां उद्यम करवो. आना संबंधमां दृढतभाष्यकार कहे छे:—

“ कजं नाणादीयं सच्चं पुण होइ संजमो णियमा । जह जह सोहेइ चरणं, तह तह कायद्वयं होइ ॥१॥ ”

ज्ञानादि कार्य ते सत्य ते; संयम छे, माटे जेम जेम चरण (चारित्र) निर्मळ रहे; तेम वर्तन करवुं.

(उपर बतावेल टीकानां टीपणमां लीधुं छे,) पण टीकानी गाथानो भर्थ नीचे मुजब छे. जिनेश्वरे मैथुन (स्त्रीसंग) छोडीने
बाकीनुं जे कंइ कर्तव्य छे, तेमां कोइपण वातनी एकांत आज्ञा करवानी आपी नथी; तेम न करवानो निषेध पण कर्यो नथी. ए-
टले साधु शुद्ध बुद्धिए ज्ञानदर्शन-चारित्रनी दृद्धि माटे उपदेश आपे; अने पोते वर्ते. फक्त रागद्वेष विना स्त्रीसंग थाय नही; माटे
तेनोज निषेध कर्यो छे.

‘दोसा जेण निरुज्जंति जेण जिज्ञंति पुव्वकम्माइं । सो सो मुख्खोवाओ. रोगावत्थासुं समणं व ॥२॥’

सूत्रम्

॥३७५॥

आचारा०

॥३७६॥

जेनावडे दोषो दूर थाय अथवा न थाय; अने जेनावडे पूर्वनां कर्म क्षय थाय; ते ते मोक्षनो उपाय, एटले अनुष्टान साधुए करवां. जेमके रोगमां ऊचित औषध आपवावडे, तथा पथ्य-भोजनवडे रोगनी शांति करे छे, तेज प्रमाणे साधुए उत्सर्ग-अपवादने आचरवां; पण रागद्वेष न करवा अने कर्मो खपाववां.

बब्री कोइ वखत, तेज औषध उपयोगी होय छे, तेम कोइ वखत, अनउपयोगी पण छे, तेथी जरुर पडता अपाय तेज प्रमाणे साधुनां अनुष्टानमां पण समजवानुं छे. नीचे टीपणमां लख्युं छे के:—

“ उत्पद्यते हि साऽवस्था, देशकालामयान् प्रति । यस्यामकार्यं कार्यं स्यात् कर्मकार्यं च वर्जये ॥१॥ ”

ते अवस्था देशकाळना रोगप्रत्ये छे. के जेमां, अकार्य ते कार्य थाय; अने कार्य ते अकार्य थाय; माटे देश, अने काळ विचारी रोगने वैये औषध आपवुं.

“जे जत्तिया उ हेउ भवस्स ते चेव तत्तिया मुक्खे । गणणाइया लोया हुणहवि पुण्णा भवे तुळा ॥३॥”

जेटला हेतुओ भ्रमणना छे, तेटलाज हेतुओ मोक्षना पण छे, अने ते गणत्रीए गणाय तेवा नर्थी; पण बन्ने बराबर छे. आ बधानो परमार्थ ए छे के साधुए रागद्वेष कर्या विना पोतानी शक्तिने अनुसार एकांत न पकडतां ज्ञानदर्शन-चारित्र्यनी आराधना करवी.

उपर प्रमाणे “अयंसंधि” त्यांथी लइने “काले अणुटाइ” सुधी अगीआर पिंडेषणा बतावी छे. आ प्रमाणे होय तो प्रश्न थाय छे, अप्रतिज्ञावालो आ सूत्रवडे एम सिद्ध थयुं के कोइए क्यांय पण प्रतिज्ञा न करवी, त्यारे शास्त्रमां आवे छे के जुदा जुदा अभि-

सूत्रम्

॥३७६॥

आचार्य
॥३७७॥

ग्रहो करवा तेथी शुं समजवुं ?

आचार्यनो उत्तर—सूत्रमां आपेल छे के—

दुहओ छेत्ता नियाइ, वर्त्थं पडिगगहं कंबलं पायपुँछणं, उगगहणं च कडासणं एएसु चेव जाणिज्ञा (सू० ८९)

राग अने द्वेष वडे जे प्रतिज्ञा थाय छे, तेने छेदीने निश्चयथी जे करे ते नियाति एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र, नामनोज मोक्ष मार्ग छे, तेमां अथवा संयम अनुष्टानमां अथवा भिक्षादिमां प्रतिज्ञा करे, एटले राग द्वेष विनानी प्रतिज्ञा गुणवाली छे. अने राग द्वेषवाली प्रतिज्ञा दुःखदाइ छे, हवे ते साधु उपरना गुणवालो राग द्वेषने छेदीने शुं करे ते कहे छे. पोते जोइतां वस्त्र, पात्र, कंबल, पादपुँछन विगेरे निर्दोष जाणीने ले, तेनी विधि बतावे छे.

पूर्व कहा मुजव जे गृहस्थो पोताना पुत्र विगेरे माटे आरंभमां वर्तेला छे. तथा पोताने जोइती वस्तुनो संग्रह करनारा छे, तेमने त्यां जइ लेवा योग्य वस्तुनी तपास करे एटले शुद्ध ने ले. अने दोषितने छोडी दे ते केवी रीते जाणे ते कहे छे.

वस्त्र शब्द लेवाथी वस्त्रावी एषणा (शुद्धि) बतावी अने पात्र शब्द लेवाथी पातरानी शुद्धि बतावी. कंबल शब्दथी आविक पातरानो नियोग गुच्छा विगेरे बताव्या, तथा सवार सांज के रातना कारण विशेषे खुल्लामां नीकल्बुं पडे. तो ओढवानी कामळ पण सूचवी तेज प्रमाणे पाद पुँछन ते रजोहरण (ओघो) जाणवो, आ सूत्रोथी ओघ उपथि अने उपग्रहीक उपथि बतावी तेज प्रमाणे वस्त्र एषणा तथा पात्रेषणा पण सूचवी.

सूत्रम्

॥३७७॥

आचार
॥३७८॥

अवग्रह कहे छे—
जेनी आङ्गा लङ्गने क्षेत्रमां फराय; ते अवग्रह छे. ते पांच प्रकारे छे. (१) इंद्रनो अवग्रह (२) राजानो अवग्रह (३) गामना मालीक पटेल विगेरेनो अवग्रह (४) घरवालानो अवग्रह (५) प्रथम उतरेला साधुनो अवग्रह आ प्रमाणे अवग्रहनी बधी प्रतिमाओं सूचवी; तेथी तेनुं पण समर्थन कर्यु, अने अवग्रहना कल्पनुं बर्णन आ सूत्रमां कहे छे—

कटासण कहे छे—

कट शब्दथी संथारो जाणवो. अने आसन शब्दथी आसंदक विगेरे बेसवानां आसन जाणवां, जेनामां बेसाय ते आसन छे. अने तेज शश्या छे. तेथी आसन शब्दथी शश्या पण जाणवी, तेनुं स्वरूप कहुं. उपर बतावेल साधुने उपयोगी सर्व वस्तु वस्त्र विगेरे तथा आहार विगेरे आरंभ करनारा गृहस्थ पासेथी मल्ता जाणवा अने तेमां आमगंध(दोषित) छोडीने निर्दोष जेम मले तेम वर्ते प्रश्न—आवीरीते गृहस्थोने त्यां जतां जे मले, ते ले के तेनी किं हद छे ? ते बतावे छे.

लङ्के आहारे अणगारो मायं जाणिज्ञा, से जहेयं भगवया पर्वेर्द्यं लाभुत्ति न मजिज्ञा अ-
लाभुत्ति न सोइज्ञा, बहुंपि लङ्कुं न निहे, परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्किज्ञा (सू० ९०)

साधुने आहार मल्तां विचारे के हुं लङ्गा, तो पछी मारे खातर नवो आरंभ गृहस्थने करवो पडशे के नही तेबुं विचारीने ले, के जेथी नवो आरंभ न करवो पडे; तेवीजरीते वस्त्र—औषध विगेरेमां पण जाणी लेबुं; तथा नवो आरंभ न करवो पडे; पण

सूत्रम्
॥३७८॥

आचारा०
॥३७९॥

पोताने वधारे पण न आवे; ते ध्यानमां राखीने ले, आ हुं मारी बुद्धिथी नथी कहेतो; परंतु जिनेश्वरे आ उद्देशाथी मांडीने हवेप-
छीनुं बधुए बतावेलुं छे ते कहे छे:—

ते जिनेश्वर चोत्रीस अतिशययुक्त केवळ ज्ञानीए अर्घमागधी भाषामां कहुं छे, अने बधी भाषावालाजाणे, तेवा शब्दोमां देवता-
मनुष्यनी सभामां कहुं. आबुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे:—

तथा वस्तु मळतां मने वस्त्र-आहारनो लाभ थयो. हुं लब्धिमान छुं, एवो अहंकार न करेः तेम याचवा छतां मळे तो, दीन
पण बने; एटले वस्तु न मळतां खेद न करे के, मने धिकार छे ! हुं मंदभागी छुं ! के, सर्वने सर्व वस्तु आपनार दातार होवा
छतां, मने नथी मळतुं. तेथी साधुए लाभअलाभमां मध्यस्थपणुं राखवुं. कहुं छे के:—

“लभ्यते लभ्यते साधु, साधुरेव न लभ्यते । अलब्धे तपसो वृद्धिर्लब्धे तु प्राणधारणम् !!१॥”

मळे तो सारुं, अने न मळे तोपण सारुं. कारण के, न मळेतो, न भोगवाथी तपश्यानो लाभ थशे; अने मळवाथी प्राणनुं धारण थशे.

आप्रमाणे पिंडपात्र, वस्त्रोनी एषणा बतावी छे.

हवे वधारे न संघरे ते कहे छे.

धणुं मळे तो मोह न करे; अने वधारे लइने राखी न मुके; एटले थोडो पण संग्रह न करे. जेम आहार वधारे न ले, तेम
संयद ऊपकरण करतां वधारे बस्त्रपात्र विगेरे न ले, ते सूत्रपां कहुं छे के:—

सूत्रम्
॥३७९॥

आचा०

॥३८०॥

धर्मजपकरणथी जेठलुं वधारे ऊपकरण लेबुं, ते परिग्रह छे. माटे वधारे मळतुं न ले, अथवा संयम ऊपकरणमां पण मूर्छा क-
रवाथी परिग्रह छे. कहुं छे के:—

(तत्वार्थ ‘भ. C. सू.’) मूर्छा परिग्रह छे, तेथी वधारे मळतुं छोडीने जोइतां लीघेलां ऊपकरणमां पण मूर्छा न करे.

शंका—जे कंड धर्मजपकरण विगेरेनो परिग्रह छे, ते पण चित्तनी मलीनता (राग) शिवाय थतो नथी कहुं छे के:—पोताने उ-
पकार करनारमां राग थाय; तो उपघात करनार उपर द्वेष पण थाय; तेथी परिग्रह राखतां रागद्वेष नजीक आवे छे, अने नेनाथी
कर्म वंध थाय छे, माटे तमो कहो छो के, धर्मजपकरण परिग्रह नहीं; ते केवीरीने मानीए ? कहुं छे के:—

“ममाहमिति चैष यावदभिमानदाहज्वरः । कृतान्त मुखमेव तावदिति न प्रशान्त्युन्नयः ॥

यशः ‘खुख’ पिपासितैरयमसावनथोत्तरैः, । परैरपसदः कुतोऽपि, कथमप्यपाकृष्यते ॥१॥”

आ मारुं एवो ज्यां सुधी अभिमानरूप, दाहज्वर रहेलो छे, त्यांसुधी जमना मुखमां जवानुं छे तेम त्यां सुधी शांति पण
नथी तेम उन्नति पण नथी.

माटे जस अने सुखना वांच्छकोए परिणामे आ अनर्थ छे एम जाणे छे, तेथी ते उत्तम पुरुषोए आ ममताना दुर्गुणने कोइ-
पण रीते गमे त्यांथी खेंची काढ्वो जोइए.

सूत्रम्

॥३८०॥

आचार्य
॥३८॥

आचार्यनो उत्तर—तेवो दोष नथी, कारण के धर्मउपकरणमां साधुओंने आमारुं छे, एवो परिग्रहनो आग्रह नथी. एज शास्त्रमां कहुं छे के,
“अवि अप्पणोऽवि देहंमि, नायरंति ममाइउं”

जे मुनिओंने पोताना शरीरमां पण ममत्व नथी, ते बीजामां ममत्व केवी रीते करे ? (न करे.)

जे अहींआं कर्मबंधना माटे लेवाय तेज परिग्रह छे, पण जेनाथी कर्मनी निर्जरा थाय (कर्म ओळां थाय) ते परिगृहन नथी, (साधुनो लेप करवाथी पूर्वना तेल विगेरेना लेपमां वधारो थतो नथी, पण तेलने खाइ वस्त्र साफ बनावे छे. तेवी रीते जोइतुं उपकरण संयमनी रक्षा करे छे.) कहुं छे के—

अन्नहा णं पासए परिहरिज्ञा, एस मगे आयरिएहिं पवेइए, जहित्थ कुसले नोवलिंपिज्ञासि त्तिवेमि ॥

आ प्रकारे देखतो बनीने (विचार पूर्वक) परिग्रह छोडे जेम गृहस्थो तत्व जाण्या विना आ लोकना सुखना माटे परिग्रह संघरवा जुए छे, पण साधुओ तेम करता नथी, तेनो आशय आ छे. आचार्यने आश्रयी आ वधारानुं उपकरण छे पण मारुं नथी, जेमां रागद्वेषलुं मूळ छे; ते परिग्रहनां आग्रहनो योग अहीं निषेधवो परंतु धर्म उपकरणनो निषेध न करवो, तेना विना संसार समुद्रथी पार जवाय नहीं. कहुं छे के—

साध्यं यथा कथञ्चित् स्वल्पं कार्य महत्त्व न तथेति । ह्लवनमृते न हि शक्यं, पारं गन्तुं समुद्रस्य ॥१॥

सूत्रम्
॥३९॥

आचार
॥३८२॥

कोइ नानुं कार्य गमे तेम साधी लेवाय, पण मोहुं कार्य तेम सिद्ध न थाय. कदाच नानुं खाबोच्युं कुदीने जवाय पण नाव विना समुद्रनी पार जवुं शक्य नथी. जेओ धर्मोपकरणने पण परिग्रह माने छे, तेवा दिगंबर बंधुओ माटे आ संबंधमां मतभेद छे, तेथी अविवक्षित अर्थने तीर्थकरना अभिप्रायने अनुसारे साधवानी इच्छार्थी कहे छे, के “एसमग्ने” मूळ सूत्रमां बताव्या प्रमाणे आ धर्मोपकरण परिग्रहने माटे नथी, एवुं पूर्वे कहुं, ते मार्ग तीर्थकरोए कहो छे, कारण के सर्व पापरूप “हेय” धर्मथी जेओ दूर छे. ते आर्यो, तीर्थकरो, छे, पण जेओ धर्मोपकरणने इच्छता नथी. तेवाओए पण कुंडिका, तटिका लंबणिका अश्ववाळधि, विगेरे इच्छानुसार उपकरण राखवानो मार्ग पोतानी मेळे शोधी काढ्यो छे, तेम अमारा उपकरणो नथी.

(वर्तमानमां इवेतांबर साधुओ पासे रजोहरण मुहपत्ति विगेरे धर्मोपकरणो छे, त्यारे दिगंबर साधुओ पासे मोरनी पीछीनुं उपकरण विगेरे छे, अने टीकाकारना समयमां ते वखते दिगंबर साधुओ जेम करता हशे. तेने उद्देशीने लख्युं छे, खरीरीते ते चर्चा करवा करतां परमार्थद्रष्टिए जोनारा बने पक्षना साधुओ रागद्रवेष रहित बनी जे भविष्यमां अने वर्तमानमां वधारे लाभदायी थाय तेवां धर्मोपकरण वापरी संयमनो निर्वाह करे अने सम्यक्ज्ञान दर्शन चारित्रनी आराधना करे.)

अथवा उपरनी चर्चा बौद्ध मतना मौगद्दलि तथा स्वाति पुत्र ए बब्रेथी बौद्ध मतनुं जे मंतव्य छे. तेने आश्रयी कहे छे.

तेज प्रमाणे धर्मोपकरणनुं कोइ खंडन करतो होय. तो तेमने पण ते प्रमाणे समजाववा.

कारण के जिनेश्वरे परोपकारना माटे रागद्रवेष रहित थइने जे कहुं छे. तेना बहु मानना माटे आठलुं लखवुं पढ्युं. अने

सूत्रम्
॥३८२॥

आचारो
॥३८३॥

तेटला माटेज आ जिनेश्वरना कहेला मार्गमांज उत्तम साधुए उद्यमवाला थवुं, तेज सूत्रमां कहे छे के आ कर्मभूमी छे. जेमां मो-
क्षना झाडना बीज समान सोधी (सम्यकत्व) तथा सर्व संवर रूप चारित्र पामीने कर्ममां जेम लेप न थाय, नवां कर्म न बंधाय तेम
आ उत्तम मार्गमां वर्तवुं, ते विदित वेद्य (पंडित) जाणवो, जो ते मार्ग उलंघीने बतावेलां धर्म अनुष्ठान न करे तो कर्मनो बंध थाय.
तेथी आ सत्पुरुषोनो मार्ग छे तेथी पोते चारित्र लेतां प्रथम सर्व जीवने समाधि आपवारूप प्रतिज्ञा करी छे, ते छेवटनो उच्छ्वास
लेतां सुधी पाळवी जोइए. कझु छे के:—

“लज्जां गुणौघजननीं जननोमिवार्यामत्यन्तशुद्धहृदयामनु वर्तमानाः । तेजस्विनः सुखमसूनपि
सन्त्यजन्ति; सत्यस्थितिव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम ॥१॥”

गुणना समूहनी माता तथा अत्यंत शुद्ध हृदय वनावनारी जे लज्जा छे, तेने ऐष्ट माता माफक मानीने तेनी पाढ़ल चालनारा
तेजस्वी पुरुषो (साधुओ) सुखे करीने पोताना प्राण पण त्यजे छे, परंतु सत्य स्थितिने चाहनारा तेओ पोतानी प्रतिज्ञानो भंग करता
नर्था. आप्रमाणे सुधर्मस्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के:—मैं उपर प्रमाणे जे कह्युं ते महावीरप्रभुनां चरणसेवन करतां सांभङ्ग्युं
छे, ते तने कह्युं छे, माटे परिग्रहथी आत्माने दुर कर; एवुं जे कह्युं छे, ते संसारी-वासनाना उच्छेद विना न थाय; अने ते संसा-
री-वासना पांच प्रकारना इन्द्रियोना विषयरसने अनुसरनारा अभिलाषो छे, अने ते तजवा मुश्केल छे. तेथी कहे छे के:—
कामा हुरतिक्षमा, जीवियं दुष्पदिवृहगं, । कामकामी खलु अयं पुरिसे, से सोयइ जूरइ तिष्पइ परित्पइ

सूत्रम्

॥३८३॥

आचार
॥३८४॥

काम कहे छे:—

कामना बे भेद छे. (१) इच्छाकाम, (२) मदनकाम, तेमां, मोहनीयकर्मनाभेद हास्य (हांसी) रतिथी उत्पन्न धयेल इच्छाकाम छे, अने मोहनीयकर्मना वेदना उदयथी मदनकाम छे. ते बने प्रकारना कामोनुं मूळ मोहनीयकर्म छे, तेना सद्भावमां कामनो उच्छेद करवो मुश्केल छे, एटले तेनो विनाश करवो दुर्लभ छे, तेथी मुनिने एम समजाव्युं के, तारे प्रमाद न करवो, आ काममां प्रमाद न करवो; पण जीवितमां प्रमाद न करवो. कारणके, क्षण क्षण जे ओळी थाय छे, ते वृद्धि पामवानी नथी; अथवा संयम—जीवितनो संसारीवासनामां पडतां दुःखेकरीने निर्वाह थाय छे. अर्थात् संयम पाळवो मुश्केल थाय छे, कहुं छे के:—

“अगासे गंगसोउब, पडिसोउब दुत्तरो । बाहाहिं चेव गंभीरो, तरिअब्रो महोअही ॥१॥

आकाशमां गंगा नदीनो प्रवाह छे, तेने सामे जडने तरबुं मुश्केल छे; अथवा महासागर हाथबडे तरवो मुश्केल छे.

बालुगाकवलो चेव, निरासाए हु संजमो । जवा लोहमया चेव, चावेयद्वा सुदुकर ॥२॥”

बेळ्ह (रेती) ना कोळीआ मुश्केल छे. तेज प्रमाणे इन्द्रियोनो कोइपण जातनो स्वाद जेमां नथी; तेबुं संयम पाळबुं घणुं मुश्केल छे, अथवा लोढाना बनावेला जव चाववा मुश्केल छे. तेबुं संयम पाळबुं मुश्केल छे.

आ अभिप्राय प्रमाणे अभिलाष तजवा मुश्केल छे, ते बताव्या छतां वधारे खुलासा माटे कहे छे. कामकामी एटले, इंद्रिय—विषयुरसनो लालचु जीव जे छे, ते शरीर, अने मन संबंधी घणा दुःखोने भोगवशे ते बतावे छे.

सूत्रम्
॥३८४॥

आचा०

॥३८५॥

एटले इच्छीत वस्तु न मळतां, अथवा तेनो वियोग थतां तेनो शोक करीने जेम ताव चढेलो घेलो माणस बके छे, तेम पोते पोक मूकीने रडे छे.

“गते प्रेमाबन्धे प्रणयब्रहुमाने च गलिते । निवृत्ते सद्भावे जन इव जने गच्छति पुरः ॥

तमुत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य प्रियसखि ? गतांस्तांश्च दिवसान्, न जाने को हेतुर्दलति शतधा यन्न हृदयम् ? ॥१॥”

प्रेमनुं बंधन नाश पामतां, अथवा प्रणय (वहांला) नुं बहु मान ओछुं थतां अथवा सदभाव ओछो थतां जतो रहेतां प्रेम, माणसमां माणसनी माफक आगळ जाय छे, तेने जोइ जोइने कोइ स्त्री पोतानी सखीने कहे छे केः-हे सखी ! ते गयेला दिवसोने ज्यारे याद करुं छुं, त्यारे हुं नथी जाणती के; क्यो हेतु मने सो प्रकारे दुःख आपे छे ? पण, ते मारुं हृदय भेदतो नथी. (आ विलाप प्रेमी स्त्रीपुरुषोना वियोगमां अथवा, बन्नेने कंझण कारणे भेद पडतां, वीरही बनेलां पोतानां हेतस्वी आगळ पूर्बनां सुखो याद करीने कहे छे):-

तेज नमाणे पोते हृदयथी झुरे छे.

“प्रथम तरमधेदं चिन्तनीयं तवासी-हृहुजनदयितेन प्रेम कृत्वा जनेन ॥

हृतहृदय ! निराश ! क्लीब ! संतप्यसे किं ? । न हि जडगततोये सेतुबन्धाः क्रियन्ते ॥१॥”

हे हृदय (पहेलुं आ तारे चिंतवां जोइए के, तारो प्रेमीजन प्रेम करीने छुटो पडी गयो छे ! हे हृदय ! हे आशारहित ! हे न-

सूत्रम्

॥३८५॥

आचार
॥३८६॥

पुंषक ! तुं हवे शामाटे खेद करे छे ! पाणी गया पछी पाळो बांधवी नकामी छे. (पोते पोतानां हृदयने ठपको आपे छे के, तारां वहालां संबंधीने जवा केम दीधो ? अने हवे, गया पछी रोये शुं थाय ? पाणी ज्यारे जोइतुं हतुं; त्यारे पाळ बांधीने कां रोकी न लीधुं?) तथा जेनां घरमां मोत थाय; ते पोते मर्यादाथी भ्रष्ट थाय छे. एटले शरीर, अने मनमां दुःखोथी पीडाय छे. तथा तेज प्रमाणे घणुं वहालुं संगुं गुजरीगयुं होय; तो केटलांक लोको पश्चाताप करे छे के—हे वहाला पुत्र ! हे वहाली स्त्री ! तुं मने मुकीने केम जती रही ? इत्यादि. अथवा कोइ जग्याए कोप करीने गयेलो होय. अर्थात् नाशी गयेलो होय; अने बंनेनो विग्रोग थाय तो पछीथी, कहे केः—मैं तारुं कहेवुं गुस्सामां न मान्युं; तेथी तुं रीसाइने चाल्योगयो. इत्यादि व्यर्थ दुःखो भोगवे छे.

आ बधां दुःखो शोक विगेरे जे कहां छे. ते बधांए जे मनुष्यो विषय-विवना आश्रयमां अंतःकरणने राखे छे, तेमनी दुःखनी अवस्था सूचवे छे. (केटलीक स्त्रीओ रडी रडीने आंधकी थाय छे, वोइ छाती कुटीने पोतानां नानां बालकोने अथवा, पोताना गर्भाशयने अथवा, गर्भमां रहेलां बालकने दुःख आपे छे, केटलीक अज्ञान स्त्रीओ माथां कुटीने पीडाय छे.) अथवा शोक करे छे. एटले यौवन, धन, मद विगेरेना मोहथी वेरायला मनवाळो विरुद्ध कृत्य करीने ज्यारे बुढापो थाय; त्यारे, मोतनो समय आवतां मोह दूर थतां पस्ताय छे. के, मैं दुर्भागीए पूर्वमां बधा श्रेष्ठ पुरुषोए आचरेलो सुगतिमां जवाना एक हेतुरूप अने दुर्गतिद्वार अटकाववाने बारणांनी पाढली झुगळसमान धर्म न कर्यो. कहुं छे केः—

“भवित्रीं भूतनां परिणतिमनालोच्य नियतां । पुरा यद्यत् किञ्चिद्विहितमशुभं यौवनमदात् ॥

सूत्रम्

॥३८६॥

आचारा०
॥३८७॥

पुनः प्रत्यासन्ने महति परलोकैकगमने, । तदैवैकं पुंसां व्यथयति जराजीर्णवपुषाम् ॥१॥”

निश्चय करीने जीवोने भविष्यमां थनारी अवस्थाने विचार्या विना मे जुवानीमां जे जे अशुद्ध कृत्यो कर्यो छे, ते परलोकमां जवाना बखते बुद्धापाथी जीर्ण थयेला शरीरवाळा पुरुषने खेद पमाडे छे. (के, मेरे धर्म न कर्यो. हवे मारी शी दशाथशे! तथा हवे पस्ताये शुं लाभ ?) तथा तेज प्रमाणे कडवां फल अहीं भोगवतां, पापीओ पण झुरे छे, विगेरे उपर बताव्या माफक लंपटोने दुःख पडे छे, ते बुद्धिमान वांचके विचारी लेवुं कहुं छे के:—

“सगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं, । परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ॥

अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते—भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥१॥”

गुणवालुं के अवगुणवालुं कार्य करतां पहेलां बुद्धिमाने प्रयासथी विचारवुं के एनुं परिणाम शुं आवशे. कारण के उतावळमां करेला कार्यतुं फल भोगवतां ते समये हृदयने बाळनारो शल्य समान पश्चाताप विपत्तिना माटे थाय छे—

आवुं कोण न शोचे ते बतावे छे. कहुं छे के—

आययचक्खु लोगविपस्ती लोगस्स अहो भागं जाणइ उहुं भागं जाणइ, तिरियं भागं
जाणइ गड्ढिए लोए अणुपरियट्टमाणे सांधि विइत्ता इह मच्चिएहिं, एस वीरे पसंसिए

सूत्रम्

॥३८७॥

आचार्य

॥३८८॥

जे बङ्के पडिमौयइ जहा अंतो तहा वाहिं जहा वाहिं तहा अंतो, अंतो अंतो पूइ
देहंतराणि पासइ, पुढोवि सवंताइं पंडिए पडिलेहाए ॥ (सू० ९३)

जेने आ लोक अने परलोकना परिणामनां दुःख जोवामां (विचारवामां) विशाळ दृष्टि (ज्ञान) छे. ते विशाळ चक्षुवालो बने छे. ते उपर कहेला भोगोने घणा अनर्थोनुं मूळ समजीने तेने छोडीने “शम सुख” (वीतराग दशा) ने अनुभवे छे. तथा संसारी लोको जे विषय रसमां पडतां अतिशय दुःखी थएला छे. (एटले कुमार्गे जतां गुप्त इन्द्रि सदतां विसफोटकनो रोग थतां के क्षयथी मरतां जोइने) पोते तेवा कुमार्गने इच्छतो नथी. तेथी प्रशम सुखने अनेक प्रकारे जुए छे. तेथी ते लोकविदर्शी छे. अथवा लोक एटले उर्द्ध अधः तथा तिर्यक् (स्वर्ग पातळ अने मृत्यु) ए त्रण लोकमां चार गतिमां थतां दुःखो सुखोना कारणोने तथा त्यां भोगवाता आयुष्य विगेरेने जुए छे. ते वतावे छे.

लोकना अधो भागमां शुं छे ते जाणे छे. एटले धर्म अधर्म अस्तिकायथी व्याप्त आकाश खंडनो नीचलो भाग जाणे छे. तेनो सार आ छे के जीवो जे कर्मो वडे त्यां उत्पन्न थाय छे. तथा त्यां सुख दुःखनो विपाक केवो छे. तेने जाणे छे. (नारकीना जीवोने थतुं दुःख पोते जाणे छे. तथा भुवनपति व्यंतरना देवोनुं सुख पण जाणे छे.)

तेज प्रसाणे उर्द्ध तथा तिर्यक् लोकने पण जाणे छे. (उर्द्ध लोकमां वैमानीक देव तथा मोक्षनुं सुख छे. ते जाणे छे. तथा तिर्यक् लोकमां ज्योतिषना देवतानुं सुख तथा धर्मी मनुष्यनुं सुख तथा पापी तथा तिर्यच प्राणीनुं दुःख जाणे छे.) अथवा लोक

सूत्रम्

॥३८८॥

आचारा०
॥३८९॥

विदशीं ते काम मेळवत्रा पैसो पेदा करवा एक ध्यान राखनारा पुन्य पापने भूली गएला अन्य लोकोने पोते जुए छे. ते बतावे छे. जे काम विगेरेमां अथवा तेने प्राप्त करवाना उपायमां लागेला छे. तेने वारंवार आचरवाथी बन्धाता तथा अशुभ कर्म वडे संसार चक्रमां भमता जोइने पोते विशाङ्ग चक्षुवाङ्ग कामना अभिलाषयी दूर थवा केम समर्थ न थाय ? (अर्थात् डाहो माणस दुःख विचारी पापयी दूर भागे.)

गुरु शिष्यने कहे छे—हे शिष्य ! संसारना भोगोमां राचता अने तेथी दुःखी थता जीवोने तुं जो, वळी आ मनुष्य लोकमां जे ज्ञानादिक भाव संधि छे. ते मनुष्य लोकमांज संपूर्ण प्राप्त थाय छे, (केवळ ज्ञान यथाख्यात चारित्र जे मोक्षना हेतुओ छे, ते मण्ड्यनेज छे. माटे मर्त्य लोकने लीधो छे,) अने जे डाहो छे ते पोते उपर बतावेल तत्वने समजीने विषय कषाय विगेरेने छोडे छे, तेज वीर पुरुष छे. ते सूत्रकार बतावे छे एटले जे आयत चक्षुवालो छे. तथा लोकना विभागना स्वभावने यथावस्थित पणे जाणे छे. ते भाव संधिनो जाण छे, अने विषय तृष्णाने छोडनारो छे. ते वीर पुरुष कर्मने विदारण करवाथी वस्त्रणायो छे. अर्थात् तत्व जाणनारा पुरुषोए तेनी प्रशंसा करी छे.

ते आ प्रमाणे तलज्ञानी बनीने बीजुं शुं करे छे ते कहे छे—

“जे बद्धे” एटले द्रव्य भाव बंधन वडे बंधाएला छे. तेमने पोते मुक्त बनी बीजाने मुकावनार छे. तेज द्रव्य भावबंधनो विमोक्षक (मुक्ति अपावनार) छे. ते वाचानी मुक्ति वडे बतावे छे. जेवीरीते पोते अभ्यंतरथी मुकाएलो छे, तेवीरीते बहारथी पण मुक्त छे, एटले अंदर आठ प्रकारनी कर्मनी बेडी छे, ते छोडावे छे. तथा पुत्र, स्त्री, विगेरेने पण छोडावे छे. एटले जेम आठ प्र-

सूत्रम्
॥३८९॥

आचारा०
॥३९०॥

कारनी कर्मनी बेडी छे. तेम बहारनुं सगांनुं बंधन छे, ते बंने मोक्ष गमनमां विघ्ननुं कारण छे, ते बन्नेथी मुकावे छे—

अथवा आ केवी रीते मुकावे छे. ते कहे छे. पोते पोताना विशाळ ज्ञानवडे तत्वनो प्रकाश करी बोध आपवा वडे मुकावे छे. बोध आपतां पोते कहे छे के आ काया विष्टा, पिशाच, मांस लोही, परु, विगेरे गंदी बस्तुथी भरेली असार छे. एटले विष्टानुं भरेलुं माटलुं अंदर पण गंदु छे. अने बहारथी पण तेवुंज छे. ते प्रमाणे आ काया, अंदरथी गंदी छे अने बहारथी लगाडेला सारा पदार्थने पण गंदा बनावे छे. कह्यु छे के—

‘यदि नामास्य कायस्य, यद्नतस्तद्विर्भवेत् । दण्डमादाय लोकोऽयं, शुनः काकांश्च वारयेत् ॥’

आ कायानी जेवी अंदरनी गंदकी छे, नेवी साक्षात् बहार जणाती होत तो लोको हाथमां दंड लइने कुतराने अने कागडाने वारता होत (बहारथी मांसना लोचा जोइने कागडा चुंथत, अने विष्टाने जोइने कुतरा बाझत, तेथी लाकडी लइने हांकवा पडत.)

आप्रमाणे जेम बहार असारता छे. (परसेवानी गंध बहार देखाय छे. ते अनुमाने) अंदर पण काया गंदी छे. ते जाणे छे. वली जेम जेम शरीरमां उंडाणमां तपासे तेम तेम विशेष गंदी एटले मांस रुधिर मेद मज्या विगेरे जणाय छे. तथा कोह रक्तपीत विगेरे रोगो आवतां उपर कही बधीए मलीनता साथे प्रत्यक्ष देखाय छे,

अथवा शरीरनां नवे द्वारोर्थी झरती गंदकी छे, काननो मेल आंखना पीया बळवो लाल पिशाच झाडो विगेरे छे. ते सिवाय बोजी व्याधिथी गुमडां पाकतां लोही, परु, तथा रसीवाळा पदार्थो विगेरेथी गंदकी छे—

आ प्रमाणे बधुं जोइने पंडित पुरुष विचारे छे के द्वारो वहे छे, गुमडां रोमेरोमे पीडा करे छे. ते तत्व समजनारो तेनुं स्व-

सूत्रम्

॥३९०॥

आचारा०
॥३९१॥

रूप जाणे तेज कहे छे—

“मंसद्विरुहिरपहारुवणद्वकलमलयमेव मज्जामु । पुण्यंमि चम्मकोसे दुर्गंधे असुइबीभच्छे ॥ १ ॥”

मांस, हाड़कां, लोही, स्नायु, विगेरेथी बन्धाएला तथा मठीन मेद मज्या विगेरेथी भरेला अने असुचिथी बीभत्स एवा दुर्गंधीवाला चामडाना कोथलारूपे कायामां

संचारिमज्जंतगलंतवच्चमुक्तंतसे अपुण्यंमि । देहे हुज्जा किं रागकारणं असुइहेउम्मि ? ॥२॥

तथा विष्टा पिशाब झरनारां यंत्रवाला परसेवाथी भरेला शरीरमां ज्यां ज्यां अशुचिनो हेतु छे. तेमां रागनुं कारण केवीरीते थाय ? आ प्रमाणे देहरी अंदरनो गंदको जागोने तथा बहार पण झरतुं छे, ते जोइने डाह्या माणसे शुं करबुं ते कहे छे.

से मझमं परिन्नाय मा य हु लालं पच्चासी, मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावायए, कासंकासे स्वलु अयं

पुरिसे, बहुमाई कडेण मूढे, पुणों तं करेइ लोहं वंरं बड्ढेइ अप्पणो जमिणं परिकहिजाइ इमस्स

चेव पडिवृहणयाए, अमरा य महासङ्घटी अद्वमेयं तु पिहाए अपरिणाम कंदइ ॥ (सू० ९४)

पूर्वे कहेलो बुद्धिमान साधु जेनी सिद्धांत भणवाथी संस्कारवाली बुद्धि थएली छे, ते देहना स्वरूपने तथा कामना स्वरूपने बे प्रकारनी प्रतिज्ञावडे शुं करे ते कहे छे—

हे साधु—तुं ‘लाल झरतां’ अने बळखा वारंवार पडता मोढानो अभिलाषि न थइश. एट्ले जेम बाल्क पोतानी पडती लाळने

सूत्रम्

॥३९१॥

आचार
॥३९२॥

विवेकना अभावे चाटे छे. तेम तुं तजेला भोगोने पाढा स्वीकारतो नही अर्थात् भोगो तजीने पाढा न भोगवतो.

बली ते संसारमां भ्रमण करावनार अज्ञानअविरति मिथ्यादर्शन विगेरेने तिरश्चीन (तिरछि गति) अथवा प्रतिकूल उपाय वडे, उलंघी जा, अने निर्वाणना झरणरूप ज्ञान दर्शन विगेरेमां तुं अनुकूलता कर, एटले तुं अज्ञान विगेरेमां आत्माने हुबाबीश नही, अने ज्ञानादि कार्यमां प्रतिकूलता न करीश तेथी सावचेत रहेबुं.

जे प्रमादी छे, ते अहीं पण शांति नथी पामतो; एटले, जे ज्ञानथी विमुख थइने भोगनो अभिलाषि थइने तिरछी गतिमां पडे छे, ते पुरुष कर्तव्यतामां मूळ बनेलो छे ते माने छे के, आ में एम कर्यु; अने हवे एम करीश; एवी भोगना अभिलाषनी तृष्णामां व्याकुल बनेलो चित्तनी शांतिने निवे भोगवतो नथी. (मूत्रदां भूत भविष्य लीधो; पण वर्तमानकाळ अति सूक्ष्म होवाथी न लेतां, अतीत अनागत भूत भविष्य लीधा छे.)

आ प्रमाणे में कर्यु अने करीश; एम विचारनारा कामातुरने शांति नथीज थती. कहुं छे के:—

“इदं तावत् कराम्यद्य, श्वः कर्त्ताऽस्मीति चापरम् ॥ चिन्तयनन्निह कार्याणि, प्रेत्यार्थं नावबुध्यते ॥१॥”

आ हमणां करुं छुं. अने बोझुं सवारमां करीश; एम कार्यने विचारतां तेने, अहीं परलोकने माटे कंइ धर्म कृत्य सूझतुं नथी.

अहीं दहींना घडावाळा भीखारीनुं दृष्टात कहे छे. कोइ रंकने कोइ जग्याए भेसने चारतां दुध मळेलुं; तेनुं दहीं करीने विचारवा लाग्यो के, आनुं वी बनावी, अने तेथी पैसा पेदा करी, वेपार करीने वैरी परणीश; अने पुत्र उत्पन्न थइने मोटो थतां, खावा बोलाववा आवशे; त्यारे लक्ष मारीश. विगेरे तुरंगमांज पग अफाळतां माथुं धुणावतां दहींनो घडो पऱ्यो; अने घडो फुटी गयो; तेथी

सूत्रम्

॥३९२॥

आचारा०
॥३९३॥

बधा तुरंग दूर थया. न खाधुं; न कोइने पुन्य माटे आप्युं. ए प्रमाणे बीजा पण जीवो करवा कराववाना संसारी-कर्तव्यमां-मूढ बनीने पोतानो आरंभ निष्फल करे छे.

अथवा जेमां कषाय ते “कास” संसार छे तेने कसे; एटले सन्मुख जाय; ते ज्ञान विग्रेरेमां प्रमाद करनारो छे ते कहे छे. एटले संसार भ्रमण कषायथी छे, एटले तेमां माया लीधी; एटले जे बहुमायी छे, ते क्रोधी मानी अने लोभी पण जाणवो; अने अशुभ कृत्य करवाथी मूढ बनेलो सुख वांच्छतो छतां दुःखज भोगवे छे. कद्मुं छेः—

“सोउं सोवणकाले मज्जणकाले य मज्जितउं लोलो । जेमेउं च वराओ जेमण काले न चाएइ ॥१॥”

जे स्वार्थी छे, ते रातना सुवानुं, अने दिवसमां नावानी वखते, नावानुं तथा जमवानी वखते, जमवानुं ते सुखेथी करी शक्तो नथी. आना संबंधमां मम्मण शेठनुं दृष्टांत पूर्वे कहेलुं छे, तेना जेवो कासकष एटले बहु कपटी. तेणे करेला कपटथी बनेलो मूढ, जे जे करे तेनावडे वेरनो प्रसंग थाय; ते कहे छेः—ते कपटी बीजाने ठगवा लोभनुं कृत्य करे छे, जेथी वेर वधे छे, अथवा लोभ करीने नवां कर्म बांधीने, सेंकडो नवा भव करे छे, अने नवां वेर वधे छे. ते कहे छेः—

“ दुःखार्तः सेवते कामान्, सेवितास्ते च दुःखदाः । यदि ते न प्रियं दुःखं, प्रसङ्गस्तेषु न क्षमः ॥१॥ ”

दुःखथी पीडायलो काम भोगने सेवे छे, अने परिणामे ते दुःख आये छे, तेथी गुरु शिष्यने कहे छेः—हे मुनि ! तने जो, दुःख प्रिय न लागतुं होय; तो, ते भोगोनो स्वाद छोड.

प्रश्नः—जीव, एवां शुं कृत्य करे छे के, पोताने वेर वधे छे?

सूत्रम्

॥३९३॥

आचारो

॥३९४॥

उत्तरः—आ नाशवंतं शरीरनी पुष्टि माटे जीवहिंसा विगेरे पापक्रियाओ करे छे, ते क्रियामां हणायला सेंकडो प्राणीओ नाश पामे छे, तेथी मरेला जीवो साथे वेर बन्धाय छे. जे उपर कही गया के, भवभ्रमणमां कपट करवाथी वेर वधे छे, अथवा गुरु कहे छे:—आ वारंवार हुं जे उपदेश आयुं छुं, तेनुं कारण ए छे के, संसारमां वेर वधे छे, तेथी संयमनीज पुष्टि करवी ते सारुं छे.

हवे बीजुं कहे छे. जे देवता नहीं छतां, देवता माफक द्रव्य-जुवानी स्वामीपणुं, सुंदर रूप, विगेरेथी युक्त होयः ते मनुष्य अ-मर (देवता) माफक आचरे ते अमराय (देवताइ) पुरुष कहेवाय; ते महाश्रद्धी एटले, जेने भोगमां, अने तेने मेळववाना उपायमां घणी लालसा (श्रद्धा) होय; ते महाश्रद्धी (पापारंभी) छे, तेनुं दृष्टांत कहे छे:—राजगृह-नगरमां मगधसेना नामनी गणिका (वेश्या) रहेती हती. तेज नगरमां धनशेठ नामनो सार्थवाह हतो. ते कोइ वखते घणुं धन आपीने, ने वेश्यानां घरमां पेठो. तेना रूपयौवन-गुणोनो समूह, द्रव्य विगेरेनी लालचर्थी वेश्याए तेने स्त्रीकार्यो; पण ते शेठनुं आवक, खर्चना हीसाबनी जंजाळमां मन रोकायाथी ते वखते, वेश्याने नजरे पण जोइ शक्यो नहाँ. (मतलब के, वेपारनी धुनमां, वेश्या साथे वात पण करी नहीं.) आ वेश्या पोताना रूपयौवन-सुंदरताना अहंकारथी दुःखी थइ. तेने अति दुःखी जोइने जरासंघ राजांए कहेवडाव्युं के तारुं दुःखनुं कारण शुं छे? अथवा तुं कोनी साथे रहे छे! वेश्याए कहुं के हुं अमर साथे रहुं छुं राजाए पूछ्युं के केवी रीते? तेने कहुं के मने राखनार शेठ आ प्रमणो पैसादार छे, अने भोगना अभिलाषीओ धनमां असक्त बनेला देवता माफक क्रियामां वर्ते छे, खावा पी-वामां तथा बीजो क्रियामां देवता माफक विलास भोगवे छे, पण कामनो अभिलाषि शरीर अने मननी पीडामां पीडाएलो बहारथी सुखी अने अंदरथी दुःखी भोगोनी इच्छावालो छतां भविष्यना वेपारनी चिंतामां पडेलो मने जोतो पण नथी, तेथी मारां बधांए

सूत्रम्

॥३९४॥

आचारा०
॥३९५॥

सुखो एक सुख विना रद छे, तेथी गुरु शिष्यने कहे छे, संसारी कामी जीवोनां दुःख जोइने तेमने सुखी न मानतां भोगोनी इच्छा न करवी। वली संसारी भोग वांच्छकनुं स्वरूप कहे छे, पोते कामना स्वरूपने अथवा तेना कडवा विपाकने न जाणीने तेमां चिन्त राखेलो बीजानी सुंदर स्त्रीओ जोइने ते न मळवाथी अथवा पोतानी वहाली प्रिया मरी जवाथी तेनी आकांक्षामां रात दिवस शोक करे छे; कहुं छे के:—

‘चिन्ता गते भवति साध्वसमन्तिकस्थे—मुक्ते तु तृतिरधिका रमितेऽप्य तृप्तिः ॥
द्वेषोऽन्यभाजि वश वर्तिनि दण्डमानः—प्राप्तिः सुखस्य दयिते न कथञ्चिदस्ति ॥१॥’

नाश पामे तो चिन्ता थाय, पासे होय तो तेना धाकथी गभरामण थाय, त्याग करे तो तेनी इच्छा थाय, बोगवतां अतृप्ती थाय, अथवा पति के पत्नी बीजा साथे संबंध करे, तो द्वेष थाय, वश करेतो पति बळेला जेवो थाय, तेथी करीने सुखनी प्राप्ति पतिथी स्त्रीने कदापि पण न थी, आ प्रमाणे धन विगेरेमां पण समजवुं के कोइपण प्रकारे काम विपाकमां सुख न थी. पण परिणामे दुःखज छे, एवुं वतावीने समाप्त करवा कहे छे.

से तं जाणह जमहं बेमि, तेइच्छं पंडिए पवयमाणे से हंत्ता, छित्ता भित्ता लुंपडत्ता विलुंप-
डत्ता उद्वडत्ता, अकडं करिस्सामिति मन्नमाणे, जस्सवि य णं करेइ, अलं बालस्स संगेण,
जे वा से कारड बाले, न एवं अणगारस्स जायइ (सू० ९५) त्तिबेमि ॥

सूत्रम्

॥३९५॥

आचार्य
॥३९६॥

जेथी कापना अभिलाषो दुःखनाज हेतुओ छे. तेवुं तमे जाणो तेथी हुं कहुं छुं, मारो उपदेश चित्तमां राखवा माटे कानेथी सांभळो अने खोटी वासनाने छोडी दो.

शंका—अहीआं कामवासनानो निग्रह बताव्यो, ते बीजा उपदेशथी पण कार्य सिद्धि थात तेथी आचार्य कहे छे. “ते इच्छं” काम चिकित्सामां पण पंडित अभियानी पोते तेवा वचन बोलतो अथवा व्याधिनी चिकित्सानो उपदेश करतो अन्य दर्शनीसाधु जोवना उपर्दीनमां वर्ते छे. एटले जे भविष्यना कडवा विपाकने भूले छे, ते बीजाने संसार भोगवाना (कोकशास्त्र) ग्रंथनो उपदेश करे छे, जेना वडे अज्ञानी जीवो विषय सुख लेवा शरोर शक्ति वधारवा अनेक पाप करे छे, तेनुं मूळ कारण तेवा उपदेशने कहेवाथी बीजा जीवोने लाकडी विगेरेथी मारनारो तथा शूल विगेरेथी कान विगेरेनो भेदनारो तथा गांठ छोडवी, विगेरेथी धन चोरनारो, तथा लूट के खातर पाढीने धन लेनारो तथा जीव लेनारो बने छे.

कारण के कामचिकित्सा के शरीरनी पुष्टि, के रोगनुं निवारण तत्व दृष्टिथी विमुख पुरुषोने जीवहिंसा सिवाय थतुं नथी. वली केटलाक पंडित मानी पुरुषो एम गर्व करे छे के तेणे कामचिकित्सा विगेरेन करी पण हुं तो करीशज! एम मानीने पोते हणवा विगेरेनी क्रिया करे छे, तेथी कर्मबन्ध थाय छे, जे कुवासना अथवा जीव हिंसाना औषधोनां शास्त्र बनावे छे ते परिणामे दुर्गतिने आपनार शास्त्र होवाथी ते अकार्य छे.

वली वहे छे के, जे पोते चिकित्सा करे छे. ते करनार अने करावनार बन्ने पाप क्रियाओना भागी छे. तेथी तेवी दुर्गतिमां जनारा अज्ञानी जीवनी संगत पण न करवी, कारण के तेथी कर्मबन्ध थाय छे, अने जीवहिंसाथी औषध करावे, तेनी पण सोबत न करवी.

सूत्रम्
॥३९६॥

आचारो
॥३९७॥

उत्तम साधुओने उपर कहेल प्राणीओनी हिंसावालुं काम वासनानुं अथवा वैदकशास्त्रनुं भणवा भणाववानुं होय नहि. एटले जेम बाळजीवो करे तेम साधुओने करबुं कल्पे नहि, तेओनुं वचन पण साधुओए सांभळबुं नहि.
आबुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे, पांचमो उद्देशो समाप्त थयो.

हवे छट्ठो उद्देशो कहे छे.

पांचमा साथे छट्ठा उद्देशानो आ संबंध छे के, संयम देहना निर्वाह माटे लोकोमां जबुं, पण तेमनी साथे प्रेम न बांधवो एवं कबुं ते हवे सिद्ध करे छे.

आ सूत्रनो पूर्बना सूत्र साथेनो संबंध कहे छेः—एटले, “९५ मा” सूत्रनी छेवटे कहबुं केः—उत्तम साधुने चिकित्सा विगेरे न होय. अहींआं “९६” सूत्रमां पण तेज कहे छे.

से तं संबुद्धमाणे आयाणीयं समुद्धाय तम्हा पावकम्मं नेव कुज्जान कारवेज्जा। (सू० ९६)

जेने चिकित्सा न होय; ते अनगार कहेवाय; अने जे जीवोने दुःख आपनार चिकित्सानो उपदेश आपवो; अथवा तेबुं कृत्य करबुं ते पाप छे, एम जाणीतो (गीतार्थ) साधु झ-परिज्ञावडे तथा, प्रत्याख्यान परिज्ञावडे जाणीने तथा पाप छोडीने आदानीय (ग्रहण करवा योग्य) परमार्थथी भाव आदानीय ज्ञानदर्शन-चारित्र छे, तेने ग्रहण करीने पापकर्म कोइपण वर्खते न करे तेम न करावे; अने करनारने अनुमोदना पण न आपे.

सूत्रम्

॥३९७॥

आचारा०
॥३९८॥

अथवा, ते साधु ज्ञान विगेरे, मोक्षनुं साचुं कारण छे, एम जाणीने, संयम-अनुष्ठानमां सावध थइने सर्वसावध्य (पापनां) कृत्य मारे न करवां; एवी प्रतिज्ञारूपपर्वत उपर चढ़ीने शुं करे छे ? ते कहे छेः—

आ सावधना आरंभनी निवृत्तिरूप-संयम लीधो छे, तेथी, मुनिए पापकर्मनी क्रिया न करवी. मनथी पण इच्छवी नहीं; पोते बीजा पासे पण कराववी नहीं; एटले, नोकर विगेरेने पापकर्ममां प्रेरवां नहीं; तथा, “१८” प्रकारनुं पापजीव-हिंसा, जुं, चोरी, कुचाल, प्रसिद्ध ममता, क्रोध, मान, माया, लोभ, रागद्वेष, कजीओ अभ्याख्यान, पैशून्य रति अरति, परनिंदा, मायामृषावाद, (कपटनुं जुठ,) मिथ्यादर्शन-शल्यने पोते न करे; तेम न बीजा पासे न करावे; तथा, पाप करनारी प्रशंसा न करे; एम, मन, वचन, कायाथी त्याग करे.

प्रश्नः—एक पाप करे; तेने बीजां पाप लागे के नहीं ?

उत्तरः—ते शास्त्रकार बतावे छे.

सिया तत्थ एगयरं विष्परामुसइ छसु अब्रयरंमि कप्पइ सुहडो लालप्पमाणे, सएण दुक्खेण
मूढे विष्परियासमुवेइ, सएण, विष्पमाएण पुढो वयं पकुवइ, जंसिमे पाणा पद्धिया पडि-
हाए नो निकरणयाए, एस परिन्ना पवुच्चइ कम्मावसंती । (सू० ९७)

कोइ पापआरंभमां पृथ्वीकाय विगेरेनो समारंभ करे छे, ते एक प्रकारनुं आश्रवद्वार प्रारंभे छे, ते छ कायना आरंभमां वर्ते छे, ते जाणवुं. जोके, पोते एकने हणवानो विचार करे छे, छतां संबंधने लीधे सर्व हणाय छे.

सूत्रम्
॥३९८॥

आचारा०

॥३९९॥

पश्च—ज्यारे कोइपण एक कायने हणवा आरंभ करे त्यारे बीजीकायना समारंभनुं पाप अथवा सर्व पापोमां वर्ते छे तेबुं केम मनाय ?

उत्तर—कुंभारनी शाळामां पाणीने अडकवाना दृष्टांवडे जाणबुं. एटले पाणीने अडकतां पाणी साथे रहेली माटीने स्पर्श थाय तेथी बीजी पृथ्वीकायनो आरंभ थयो अने पाणीमां रहेली वनस्पतिनो आरंभ थयो, ते हालतां वायुनो समारंभ थाय, त्यां रहेली अग्रि प्रदीप्त थाय. ए प्रमाणे अग्रि बळतां त्रस जीवोनो आरंभ थाय. (माटे साधुए दरेक जग्याए विचारीने पण भूकबो) अथवा प्राणातिपात आश्रवद्वारमां वर्तवाथी, अथवा एक जीवना अतिपात (हिंसा) अथवा एक कायना आरंभथी बीजा जीवोनो पण घातक समजबो, तथा प्रतिज्ञा लोपवाथी ते बीजुं पाप वांधे छे. कारण के जीव हिंसानी आज्ञा जिनेश्वरे आपी नथी, तथा प्राणीओना प्राण लेवानी आज्ञा प्राणीओ आपता नथी, माटे चोरीनो दोष छे, तथा सावद्यना ग्रहण करवाथी परिग्रहवाळो पण छे, अने परिग्रहमां मैथुन तथा रात्रिभोजन पण आवे, कारण के ग्रहकार्य विना स्त्री भोगवाय नहीं. एथी एकना आरंभमां वधी कायानो आरंभ छे, अथवा चार आश्रवद्वारने रोक्या विना चार महाव्रतमां तथा छडा रात्रिभोजन विरमणत्रत केवी रीते थाय ? एथी वधानो आरंभ लागे अथवा एक पाप आरंभ करे, ते अकर्तव्यमां प्रवर्तवाथी छए कायना आरंभनो दोषित छे, अथवा जे एक पण पाप करे, ते आठे प्रकारना कर्मने ग्रहण करी वारंवार तेमां प्रवर्ते छे. पश्च—शा माटे ते पाप करे छे ?

उत्तर—सुखनो अर्थि ते वारंवार अयुक्त बोले छे, अने कायाथी दोडवा-कुदवानी क्रिया करे छे, अने पैसो पेदा करवा उपायोने मनथी चिंतवे छे, ते कहे छे. खेती विगेरे करीने पृथ्वीनो आरंभ करे छे, स्नान माटे पाणीनो, तापवा माटे अग्निनो गरमी दूर करवा द्वानो (पंखावडे) तथा खावाने माटे वनस्पति अथवा पशु हत्या विगेरेनो आरंभ करे छे, भा पाप वरनार

सूत्रम्

॥३९९॥

आचारा०

॥४००॥

गृहस्थ अथवा वेषधारी साधु रसनो रसीओ बनीने सचित्त लबण वनस्पति फल विगेरेने ग्रहण करे छे, तथा बीजी वस्तु पण वा-परे छे, ने समजी लेवुं.

आ प्रमाणे जे वधारे बोलनारो होय, ते पापकर्मी बीजा नवा जन्मना दुःखरूपी झाडनुं कर्मबीज पण वावे छे, अने तेथी दुःखना झाडनुं कार्य प्रकट थशे, ते तेणे अहीं कर्यु. माटे आत्मीय (पोतानुं) कर्यु अने ते पाप कर्मना विपाकनो उदय थतां मूढ माणस परमार्थने न जाणवाथी, धर्म करवाने बदले सुखने मेळववा प्राणीने दुःख आपवानां छुत्यो करे छे, अर्थात् सुखने बदले भविष्यमां पण दुःखज पामशे. कहुं छे केः—

“दुःखद्विट् सुखलिप्सु—मोहान्धत्वाददृष्टगुणदोषः । यां यां करोति चेष्टां तया तया दुःखमादत्तेः ॥१॥”

दुःखनो द्वेषी, सुखनो चाहक, मोहथी आंधळो थवाथी गुण दोषने न जाणनारो जे जे चेष्टाओ करे छे, तेनाथी पोते दुःखज पामे छे. अथवा ते मूढ हित मेळववा, अहित छोडवाना विवेकथी शून्य उलटो चाले छे, एटले हितने अहित माने छे. तथा अहितने हित माने छे; तथा कार्यने अकार्य, पथ्यने अपथ्य विगेरेमां पण समजवुं; एटले एम बताव्युं के, मोह ते अज्ञान छे, अथवा मोह-नीयनो भेद छे, ते बने प्रकारना मोहथी मूढ बनेलो अल्प सुखना माटे तेवो तेवो आरंभ करे छे के, जेनावडे शरीरना अने मनना दुःखना व्यसनोने पामीने अनंत काळना संसार भ्रमणनी पात्रताने पामे छे. वली मूढनी बीजी अनर्थनी परंपरा बतावे छे, एटले पोताना आत्मावडे मध्य विगेरेना प्रमादथी एटले इन्द्रियोनो रस लेवो, कषायो करवा, विकथा करवी, अथवा घणी निद्रा करवाथी जुदुं जुदुं वृत (पापना चाळा) करे छे. अथवा वय एटले पोताना कर्मवडे जेमां जीवो भ्रमण करे छे ते वय संसार जाणवो, एटले

सूत्रम्

॥४००॥

आचार
॥४०१॥

एक एक कायमां घणो काळ रहेवाथी तेनो अनंतोकाळ दुःखमां बीते छे.

अथवा कारणमां कार्यनो उपचार करीए; तो पोताना जुदीजुदीरीते करेला प्रमादथी बंधायलां कर्मवडे वय एट्ले, कोइषण अवस्था भोगवे; ते एकेद्विय विगेरेमां कलल, अर्बुद विगेरेथी लइने, एक दिवसना जन्मेला बाळक पण विगेरेनी अवस्थामां व्याधिथी पीडायला, अयवा दासिद्व तथा दुर्भाग्य विगेरेनां दुःखयी प्राप्त थयेल ते प्रकर्ष करीने बांधे छे. (एट्ले पूर्वे कर्म बांधे; अने पढीथी भोगवे; ते आश्रयी वयः शब्द लीधो छे.)

ते संसारमां अथवा, उपर कहेली अवस्थामां प्राणीओ पीडाय छे ते बतावे छे. 'जं सि मे.' एट्ले, आ पोताना करेला प्रमादना कारणे अथुभकर्मनां फळ भोगवतां चारगतिवाळा आ संसारमां अथवा, एकेन्द्रियादि अवस्थामां प्राणीओ दुःखोथी पीडाय छे, (एवं गुरु शिष्यने कहे छे के तुं जो.)

तेओ सुखने माटे आरंभमां राचीने मोहथी धर्मने बदले अधर्म करीने गृहस्थो तथा साधु वेषधारी तथा पाखंडीओ पीडाय छे, (जे ब्रह्मचर्यने बदले कुशील सेवे; तेने इन्द्रिय सडतां संसारमां ज नरकवास भोगवतो पडे. वैदनी गुलामी करवी पडे; अने वधारे रोग न वधे; ते माटे, वधी इन्द्रियो वशमां राखवी पडे; ए कुमार्गे चाल्यानुं फळ छे.)

जो एवीरीते प्राणीओ पोतानां पापोथी अहीं पीडातां देखाय; तो युं करवुं ? ते कहे छे:—आ संसार-भ्रमणमां पोतानां कृत्योनुं फळ भोगवामां समर्थ जीवोनुं स्वरूप जाणीने अथवा, गृहस्थवडे मारखातां अथवा, परस्पर लटतां अथवा रोगादीनी पीडाओ भोगवतां, तेमनां कर्मनां फळ भोगवतां जाणीने पंडित साधुए निश्चयथी तेनो त्याग करवो; एट्ले सर्वथा अथवा, निश्चयथी प्राणी-

सुत्रम्
॥४०१॥

आचारा०

॥४०२॥

ओने जुदा जुदा दुःखोनी अवस्था जेमां थाय; ते “निकरण” अथवा “निकार” छे, अने तेज अशुभकर्म शरीर मननुं दुःख उत्पादक छे, ते कर्मने साधु न करे; एटले जेथी प्राणी ओने पीडा थाय; तेबुं कृत्य साधु न करे; (साधुए कोइ पण जातनो पापारंभ न करवो;) तेथी थुं थाय ते कहे छे.

आजे सावद्य वेपारनी निवृत्तिरूप—परिज्ञा छे, तेज तत्त्वथी प्रकर्षथी ‘परिज्ञान’ कहेवाय छे, पण शैलुष (ठगनी) माफक मोक्ष फल रहित ज्ञान नथी.

आ प्रमाणे ज्ञ परिज्ञा, तथा प्रत्याख्यान परिज्ञावडे प्राणीनो निकार (हिंसा) छोडवावडे साधुने मोक्ष पळे छे, एटले कर्मो शान्त पामे छे, संपूर्ण जोडलां राग द्वेष विगेरेनां छे, ते बधां संसार झाडनां बीजरूप कर्म छे, तेनो क्षय थाय छे, ते जीवहिंसानो क्रिया दूर करनारने थाय छे.

अने आ कर्मक्षयसां विघ्नरूप जीव हिंसानुं मूळ आत्मामां विषयवासनानुं ममत्व छे, ते दूर करवा कहे छे.

जे ममाइयमइं जहाइ से चयइ ममाइयं, से हु दिठपहे मुणी जस्स नत्थि ममाइयं, तं परिज्ञाय मेहावो विइत्ता लोगं धंता लोगसन्नं से मइमं परिक्षमिज्जासि त्तिबेमि ॥ नारइं सहई ॥

वीरे, वीरे न सहई राति । जम्मा अविमेण वोरे, तम्हा वीरे न रज्जइ ॥१॥ (सू० ९८)

संसारी जड वस्तुमां मारापणानी मति तेने जे साधु परिधना कडवां फळने जाणे छे, ते छोडे छे, ते परिग्रह द्रव्यथी अने

सूत्रम्

॥४०२॥

आचा०

॥४०३॥

भावशी एम बे प्रकारे छे, ते बन्ने प्रकारनी परिग्रहनी बुद्धि छोडवाथी अंतरनो भावपरिग्रह पण निषेध कर्यो, अने परिग्रहनी बुद्धि विषयनो प्रतिषेध करवाथी बहारनो द्रव्यपरिग्रह पण तजवानो कहां अथवा काकुन्याये लळए तो एम अर्थ थाय के, जे परिग्रहना विचारनुं मलिन ज्ञान छोडे, तेज परमार्थथी बहार अने अंदरनो परिग्रह छोडे छे, तेनो अर्थ आ छे.

संबंध मात्रथी चित्तना परिग्रहनी काळाशनो अभाव छे. जेम नगरमां साधु रहे, अथवा पृथ्वी उपर बेसे छतां जेम जिनकल्पी मुनिने निष्परिगृहताज छे, तेम स्थविर कल्पीने पण जाणवुं, तेथी शुं समजवुं ते कहे छे.

जे मुनि जाणे छे के मोक्षमां मुख्य विद्यनो हेतु तथा संसार भ्रमणनुं कारण छे, ते परिग्रह ममत्वथी छुटवाना विचारवाळो छे, तेज देखतो छे, तेणेज मोक्षनो मार्ग ज्ञानादिक जोयुं छे, ते द्रष्टपथ छे.

अथवा दृष्ट भय लळए तो साते प्रकारनो भय जे शरीर विग्रेरेना ममत्वथी साक्षात् देखाय छे, अथवा विचारतां परंपराए जणाय छे, ते साते प्रकारना भयने जाणनारो निश्चयथी थाय छे, तेनो वधारे खुलासो करे छे.

जेम ममत्व न करे, परिग्रह न राखे, ते दृष्ट भय छे, एम समजीने पूर्वे बतावेला परिग्रहने ते ज्ञ-परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे गीतार्थमुनि परिग्रहना आग्रहवाळा एकेन्द्रियादि संसारी-जीवलोकने दुःखी जाणीने पोते प्राणीगणनी दश प्रकारनी ममत्वसंज्ञा (परिग्रहने) त्यागे छे, तेज मुनि सत्यासत्यना विवेकने जाणनारो छे तेने गुरु कहे छे. तुं संयम अनुष्ठानमां योग्य रीते उद्घम कर!

अथवा, आठ प्रकारनां कर्मने अथवा कर्मनुं मूळ रागद्वेषादि छ रिपुवर्ग छे, तेने अथवा, विषयकषायने जीतवा पराक्रम कर एवं कहुं छुं.

ते मुनि संयम अनुष्ठानमां पराक्रम करनारो परिग्रहना आग्रहने छेडनारो मुनि केवो थाय छे ते कहे छे:—

सूत्रम्

॥४०३॥

आचार
॥४०४॥

(सारां काममां विघ्न वधारे आवे तेम) कदाच ते संसारनो घर, खो, धन सोनुं विगेरे परिग्रह छोडनार अकिञ्चन मुनिने संयम अनुष्ठान करतां मोहनीयकर्मना उदयथी संयममां अरति थाय; तोपण, ते संयम संबंधी अरतिने पोते सहन करे; (तेमां मन न राखे;) पण वधारे वैराग्यथी वीर बनीने आठ प्रकारना कर्मशत्रुने प्रेरणा करीने ते शक्तिमान बनेलो वीर असंयममां अथवा, विषय-परिग्रहमां रति न करे; अने संयममां जे अरति थाय; अने विषयमां रति थाय तेथी, विमन बनीने शब्दादिमां रमणता न करे; एटले, रति अरति, ए बन्नने छोडवाथी खेदी मनवाळो न थाय; तेम, राग पण न करे ते बतावे छे.

जेणे रति, अने अरतिमां मन न लगाड्युं ते वीर छे, अरे जे वीर छे, ते पांच इन्द्रियना विषयमां आसक्ति न करे त्यारे शुं करवुं ते कहे छे:-

सदै फासे अहियासमाणे निविद नंदिं इह जीवियस्स । मुणो मोणं समायाय, धुणे
कम्मसरीरगं ॥२॥ पंतं लूहंसेवंति वीरा संमत्तदंसिणो । एस ओहंतरे मुणी तिन्ने
मुते विरए वियाहिए, त्तिवंमि ॥ (सू० ९९)

जेथी रति-अरतिने त्यागीने मनोहर शब्द विगेरेमां साधु राग न करे; तेम खराबमां द्वेष पण न करे. ते स्पर्श विगेरेमां पण सारीरीते सहन करे; एटले, मनोङ्ग शब्द सांभळीने आनंद न माने; तेम, खराब सांभळीने खेद न करे; ते प्रमाणे शब्द, तथा स्पर्श लीथाथी वीजी इन्द्रियना विषयमां पण जाणवुं कहुं छे के:-

सदेसु अभद्रपावदसु, सोयविसयमुवगणसु । तुष्टेण य रुष्टेण व समणेण सया न होअवं ॥१॥

सूत्रम्

॥४०४॥

आचारा०

॥४०५॥

सुंदर के, खराव शब्द कानमां आवतां साधुए खुश अथवा नाखुश हपेशां, (कोइपण वखते) न थवुं. एज प्रमाणे रूपगंध विगे-
रेमां पण जाणवुं, तेथी, शब्द विगेरेमां पण मध्यस्थता राखनारा शुं करे? ते कहे छे:—

आ गुरुनी उपासना करनार शिष्य जे विनय छे, तेने अथवा, मोक्षाभिलाषी बीजाने पण आ उपदेश छे. के, तुं सारी रीते
जाण के, और्ध्वर्ध, वैभव विगेरेथी मननी जे प्रसन्नता छे, तेने दूर कर. आ मनुष्य लोकमां जे संयम विनानुं जीवित छे; तेने त्यजी
दे, अथवा वैभव विगेरेथी कुद्रती जे आनंद थाय छे, के मने आ आवी उत्तम समृद्धि यली छे, मळे छे. अने मळशे. एवो जे
विकल्प थाय छे, ते आनंदना विकल्पने पण तुं निंद, विचार के आ पापना कारण रूप अस्थिर समृद्धिवडे शुं लाभ छे! कांदुं छे के:—
विभव इति किं मदस्ते? च्युतविभवः। किं विषाद्मुपयासि?। करनिहितकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम्।

अमारो वैभव छे, एवो तेने मद शुं काम थाय छे! अने वैभव जतां खेद केम करे छे? तुं जाणतो नथी के माणसोने मळेली
रिद्धि हाथमां रमवाना दडा माफक पडे छे, ने उछले! आ प्रमाणे रूप विगेरेमां पण जाणवुं. ते संवंधी सनतकुमारानुं दृष्टांत जाणवुं.

अथवा पांच अतिचारने पण तुं जे पूर्वे कर्या होय, तेने निंद अने थताने रोक अने आवताने अटकाव, केवी रीते? ते कहे
छे, त्रण काळने जाणनार ते मुनि छे, अने मुनिनुं मौन ते संयम छे, अथवा मुनिनो भाव ते मौन अने वचननुं संयम छे, अने ते
प्रमाणे काया अने मननुं पण जाणवुं ते मन वचन अने कायाना संयमने आदरीने कर्म शरीर, अथवा औदारिक विगेरे शरीरने आ-
त्माथी जुदुं कर, अर्थात् तेनो ममत्व मूक, ते ममत्व केवी रीते मूकाय? ते कहे छे. प्रान्त एटले रस रहित तथा धी विगेरेथी रहित
लुखवुं भोजन कर, अथवा द्रव्यथी अने भावथी प्रान्त एटले विगत धुम ते गोचरी करतां द्वेष न करवो. तथा रुक्षभाव एटले सारी

सूत्रम्

॥४०५॥

आचारो
॥४०६॥

गोचरीमां राग न करवो, ते अंगार दोष रहित, वीर साधुओ गोचरी करे छे, ते साधुओ, सम्यक्त्वदर्शी छे. ते रागद्वेष रहित छे. अथवा सम्यक्त्वदर्शी छे, एटले परमार्थ दृष्टिवाला छे. तेओ जाणे छे. के आ शरीर कृतन्न छे; निरूपकारी छे. एना माटे प्राणीओ आलोक परलोकमां क्लेश करी दुःख भोगवनारा छे. (अने अनेक आदेशमां एक आ देश छे) तेथी रस रहीत लुख्खुं खानारो तथा समदर्शी कर्मादि शरीर छोडीने भावथी भवओघने तरे छे. ते उत्तम क्रिया करतां भव ओघने तरे छे. अने जे बाह्य अभ्यंतर परिग्रहथी रहित छे. ने युक्त छे. एटले जे निर्मल भावथी शब्दादि विषयनो राग त्यजे ते विरत छे, अने मुक्तपणे तथा विरतपणे जे विख्यात छे, तेज मुनिभव ओघने तरे छे, अथवा ते तर्यो छे, एम जाणबुं जे मुनि आ प्रमाणे मुक्त अने विरतपणाथी विख्यात न थयो, ते केवो दुःखी थशे ते बतावे छे.

दुर्बसुमुणी अणाणाए, तुच्छए गिलाइ वत्तए, एस वोरे पसंसिए, अच्चेइ लोयसंजोंग एस नाए पवुच्चइ (सू १००

वसु द्रव्य छे. अने भव्य अर्थमां उत्पन्न कर्युं छे. ते मोक्षरूपी भव्य द्रव्य छे. एटले मुक्ति गमन योग्य जे द्रव्य ते वसु छे, अने खराब मार्गे वपराय ते दुर्बसु छे. एटले दुरुपयोग करनार जे मुनि छे. ते मोक्षगमनने अयोग्य छे. (अर्थात् ते संयमरूप वसुने खोटे मार्गे ले छे, तेथी तेनो मोक्ष न थाय.) आम शाथी थाय? ते कहे छे. तीर्थकरना उपदेशथी शून्य बनी स्वेच्छाचारी बने छे.

प्रश्न—शाथी ते स्वछंदी बने छे. ? उत्तर—प्रथम कहेला उद्देशामां बताव्युं छे. ते सघळुं अहीं जाणबुं, ते आ प्रमाणे छे. मिथ्यात्वथी मोहीत लोक छे. तेमां तत्व समजबुं दुर्लभ छे भने व्रतोमां आत्माने रोकवो ते कठण छे. अने रति अरतिने दाववी तथा पांच इन्द्रियना विषयमां इष्ट अनिष्टमां समभाव भाववो तथा प्रान्त (निरस) तथा लुख्खो आहार करवो आवी तीर्थकरनी आज्ञा तलवारनी

सूत्रम्

॥४०६॥

आचार

॥४०७॥

धार उपर चालवा माफक पाळवी कठण छे. तथा अनुकूल प्रतिकूल जुदा जुदा उपसर्गों सहेवा कठण छे. अने ते न सहेवानुं कारण अनादि अतीत काळ सुखनी भावना जीवने छे. ते स्वभावथी दुःखमां बीकण अने सुखनो प्रिय बनीने वीतरागनी आज्ञाने पाल्तो नथी. तेमां दुःख माने छे. कारणके आज्ञा सहन करवानी छे. सुख के दुःखमां समभाव राखवानो छे, ते भूली परवश बनी तुच्छ एटले, पापना उदयथी द्रव्यथी, निर्धन अथवा, घट अथवा जल विग्रेरथी रहित बने छे. (पीवाने पाणी पण मळतुं नथी.) तथा भावथी रिक्त एटले ज्ञान दर्शन चारित्र तेने मळतुं नथी; एटले ते मूर्ख साधुने कोइए प्रश्न करतां जवाब आपवामां अशक्त होवाथी बोलवाने शरम आवे छे, अथवा, ज्ञानवाळो छतां, चारित्रभृष्ट होवाथी; स्वरूं बोलतां पोतानी पूजा नहीं थाय; माटे शुद्ध मार्ग कहेवाना अवसरे बोलतां शरमाय छे. पोते परिग्रह राखे त्यारे कोइ पूछे के, साधुने धन राखवुं कल्पे? त्यारे पोते कहे के:—धन राखवामां दोष नथी; एवुं खोदुं पण बोले. जे कषायरूपी—महाविष्णनो टाळनार भगवाननी आज्ञा पाळनार ते ‘सुवसु’ मुनि छे, ते ज्ञानथीभरेलो प्रभुना कहेला मार्गने बतावनारो कर्मने विदारवाथी वीर बनेलो उत्तम पुरुषोए प्रशंसेलो छे. (जे आज्ञा पाळे ते प्रशंसा तथा सद्गतिने पामे; अने जे आज्ञा न पाळे; ते अपमान अने दुर्गति पामे.)

वली “अच्चेइ” भगवाननी आज्ञाने अनुसरनारो वीरपुरुष असंयत लोकथी जे ममत थाय तेनेत्यजे छे, ते लोक बे प्रकारना छे. एटले—बाह्य, धन, सोनुं, मातापिता विग्रेरेमां ममत थाय छे, ते तथा हृदयमां रागद्वेष विग्रेरे अथवा तेनाथी बंधातां आठ प्रकारनां कर्म, ते अभ्यंतर लोक (ममत्व) छे तेनो संयोग उल्लंघे छे, अर्थात् ममत्व त्यागे छे.

जो, एम छे तो, शुं करवुं! ते कहे छे:—जे आ लोकना ममत्वनुं उल्लंघन छे, ते सारो मार्ग एटले, मोक्षाभिलाषिओनो आचार

सूत्रम्

॥४०७॥

आचारा

॥४०८॥

छे ते कहे छेः—अथवा ‘परं’ ते आत्मा छे, तेने मोक्षमां लङ् जाय छे, ते ‘नाय’ (मागधी सूत्र प्रमाणे) छे तेनो अर्थ आ छे. के जे, लोकनो संयोग त्वजे; तेज श्रेष्ठ आत्माना मोक्षनो न्याय छे. सदुपदेशथी मोक्ष मेलवनारो कहेवाय छे.

एम हो; पण, ते उपदेश केवो छे ते कहे छेः—

जं दुखखं पवेइयं इह माणवाणं, तस्स दुखखस्स कुसला परिज्ञमु दाहरंति, इह कम्मं परिज्ञाय,
सद्वसो जेअणन्नदंसी, से अणन्नारामे, जे अणण्णारामे, से अणन्नदंसो, जहा पुण्णस्स
कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ, जहा तुच्छस्स कत्थइ (सू० १०१)

जे दुःख अथवा दुःखनुं कारण अथवा, लोकना पर्मत्वथी बन्धातुं कर्म तीर्थकरोए बताव्युं छे के, आ संसारमां जीवोने आवां आवां दुःखो छे, ते दुःखने अथवा तेनां कर्मने धर्मकथानी लब्धि प्राप्त करेला जैन तथा जैनेतर मतना जाण गीतार्थ योग्य विहार करनारा; बोले तेबुं पाळनारा, निद्रा जीतेला; इन्द्रियो वश राखनारा, देशकाळ विगेरेनुं स्वरूप जाणनारा; उत्तम गुणोवाळा साधुओ विगेरे आवी परिज्ञा बतावे छे के, दुःखोनुं मूळ कारण तथा, तेनुं रोकावानुं कारण आ प्रमाणे छे. ते जाणीनेझ—परिज्ञावडे प्रत्याख्यान परिज्ञावडे पापने त्यागे छे. वल्लो, उपर दुःख थवानो विचार विगेरे मनुष्य तथा बीजा जीवोनुं कहुं ते दुःख जाणवानी तथा दुःखनुं मूळ पाप त्यागवानी बे प्रकारनी परिज्ञा—गीतार्थ साधुओएबतावी. ते परिज्ञा करीने तथा. पापनां मूळ आश्रवद्वार जाणीने छोडवा ते कहे छेः—

सूत्रम्

॥४०९॥

आचारा०
१४०९॥

ज्ञाननुं शत्रुपणुं (भणनारने विघ्न करवुं) विगेरे करवाथी ज्ञानावरणीयकर्म बन्धाय छे. तेम आठे कर्म सबंधी जाणीने प्रत्याख्यानपरिज्ञावडे पाप छोटीने तेना आश्रवद्वारमां मन-वचन-करवा-कराववा तथा अनुमोदवावडे पोते न वर्ते, अथवा, सर्वथा जाणीने कहे छे. सर्वथा ‘परिज्ञान’ ते केवळीने गणधरने अथवा चौदपूर्वि साधुने छे.

अथवा सर्वथा ‘कहे छे’ एटले आक्षेपणि विगेरे चार प्रकारनी धर्मकथा छे ते टिप्पण्यां नीचे मुजब छे.

स्थाप्यते हेतु दृष्टान्तैः स्वमतं यत्र पणिडतैः । स्याद्वाद ध्वनिसंयुक्तं सा कथाऽक्षेपणी मता ॥१॥

हेतु अने दृष्टांत वडे पंडितो जेमां स्याद्वादवादने अनुसरी जे वचन बोले, ते वचनयुक्त जे कथा ते आक्षेपणी छे.

मिथ्यादशां मतं यत्र, पूर्वापरविरोधकृत् ॥ तन्निराक्रियते सद्भिः सा च विक्षेपणीमता ॥२॥

मिथ्यादृष्टिओना मतने तेमनो पूर्व अपर विरोध बतावी उत्तम पुरुषो तेनो निषेध करे, ते कथा विक्षेपणी छे.

यस्याः अवण मादेण, भवेन्मोक्षाभिलाषिता ॥ भव्यानां सा च विद्वद्भिः प्रोक्ता संवेदनीकथा ॥३॥

जेना सांभळवा मात्रथी भव्य पुरुषोने मोक्षनी अभिलाषा थाय, तेवी विद्वानोनी कहेलो कथाने संवेदनीकथा कहे छे.

यत्र संसारभोगाङ्ग, स्थितिलक्षणवर्णनम् । वैराग्य कारणं भव्यैः सोक्ता निर्वेदनीकथा ॥४॥

जे संसार भोगना अंगोनी स्थितिना लक्षणनुं वर्णन छे अने वैराग्यनुं कारण छे तेवी कथाने भव्य पुरुषो कहे छे ते निर्वेदनीकथा जाणवी ते कथा केवी छे, ते कहे छे बीजुं एटले जैन सिवायनुं जे तत्त्व तेने माने ते अन्यदर्शी-तथा न अन्यदर्शी ते यथायोग्य

सुत्रम्
॥४०९॥

आचार्य

॥४१०॥

पदार्थ जाणनारो सम्यक् दृष्टि जिनवचन माननारो गीतार्थ साधु छे ते मोक्ष सीवाय बीजा मार्गमां रमतो नथी.

हेतु अने हेतुवाळा-भावबडे सूत्रने जोडवा कहे छे के जे भगवानना उपदेशथी अन्य स्थानमां रमणता न करनारो ते अनन्य-दर्शी छे अने जे अनन्यदर्शी छे ते बीजे रमे नहीं कहुँ छे के—

“शिवमस्तु कुशाखाणां वैशेषिकषष्टि तंत्र बौद्धानाम् । येषां दुर्विहितत्वाद्गवत्यनुरज्यते चेतः ॥१॥”

कुशाखो जे, “वैशेषिकषष्टितंत्र” तथा बौद्धनां रचेलां छे, तेमनुं पण भलुं थाओ; कारणके, तेमनामां विसंवाद जोइने जिनेशिरना वचनमां अमारुं मन रंजित थाय छे.

आ प्रमाणे सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहेल छे, ते कहेनार रागद्वेष दूर करनारो थाय छे ते बतावे छे.

जहा पुण्यस्स. विगेरे.

तीर्थकर, गणधर, आचार्य विगेरे जे प्रकारे इन्द्र चक्रवर्ती मांडलीक राजा विगेरे पुण्यवान-जीवने उपदेश करे छे. तेज प्रमाणे कठीयारा विगेरे तुच्छ जीवोने पण उपदेश करे छे. (बनेमां तेमनो सम्भाव छे,) अथवा पूर्ण ते जाति, कुळ, रूप, विगेरेथी पुण्यवान छे, अने नीच जाति कुरुपवाळो ते तुच्छ छे, अथवा, विज्ञानवाळो पूर्ण तथा, अन्य सामान्य बुद्धिवाळो तुच्छ छे, ते दरेकने उत्तम पुरुषो समानभावे उपदेश करे छे. कहुँ छे के—

“ज्ञानैश्वर्यधनोपेतो, जात्यन्वय बलान्वितः । तेजस्वी मतिमान् ख्यातः पूर्णस्तुच्छा विर्ययात् ॥१॥”

सूत्रम्

॥४१०॥

आचार
॥४११॥

ज्ञान, ऐश्वर्य अने धनवाळो, तथा जातिवंश, तथा बळवाळो तेजस्वी, बुद्धिमान प्रख्यात पण गुणवाळो पूर्ण कहेवाय; अने तेथी रहित ते तुच्छ कहेवाय. आनो परमार्थ आ छे के, साधुओ, भिक्षुक विगेरेने तेना कल्याण माटे स्वार्थ राख्या विना उपदेश करे छे. तेज प्रमाणे चक्रवर्ती विगेरेने पण उपदेश करे छे.

अथवा चक्रवर्ती विगेरेने संसारथी पार उतारवाना हेतुने जेवा आदरथी कहे छे, तेज प्रमाणे भीक्षुकने पण कहे छे. आ वाक्यथी साधुमां ‘निरीहता’ (निस्पृहता) बतावी.

पण एवो नियम नथी के, बधाने एक सरखीरीते कहेवुं; पण जेम जेने बोध लागे तेम तेने कहेवुं; एटले, बुद्धिमानने समजावबुं होय तो सूक्ष्म वात कहेवी; अने सामान्य बुद्धिवाळाने सादी वात कहेवी; तथा राजाने कहेतां तेना अभिप्रायने अनुसरीने कहेवुं; एटले, उपदेशके विचारबुं के, आ राजा अन्यदर्शनना आग्रहवाळो छे के, मध्यस्थ बुद्धिवाळो छे के संशयवाळो छे ? के, संशयरहित छे ? तथा आग्रहवाळो छतां, कुतीर्थिओए कदाग्रहवाळो बनाव्यो छे के, पोते कदाग्रही छे ? जो एवो होय; तो, तेने आ प्रमाणे कहेतो क्रोध थाय. जेमके:—

“दशसूना समश्चक्रो, दशचक्रिसमो ध्वजः । दशध्वजासमो वेश्या, दशवेश्या समो नृपः ॥१॥”

दशसूना समान चक्री छे, अने दशचक्री समान ध्वजा छे. अने दशध्वजा समान वेश्या छे. अने दश वेश्या जेवो एक राजा छे. माटे (आबुं न बोलबुं.) तेनी भक्ति रुद्र, विगेरे देवता उप्रर होय; तो, तेनुं चरित्र कहेतां तेने तेना पापना उदयथी सत्य

सूत्रम्

॥४११॥

आचारो
॥४१२॥

कहेतां पण, मोह उत्पन्न थतां द्रेषी थाय; अने द्रेषी थइने शुं करे ते पण कहे छे:—

अवि य हणे अणाइयमाणे, इत्थंपि जाण सेयंति नत्थि, केयं पुरिसे कं च नए ?

एस वीरे पसंसिए, जे बछे पडियमोयए, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु से सब्बओ सब्ब परिन्नाचारो, न लिप्पई छण पण वीरे से मेहावी अणुग्घायण खे यन्ने जे य बन्ध पमुक्ख मन्नेसी कुसले पण नो बछो नो मुक्के ॥ (सू० १०२)

क्रोधायमान थयलो राजा वाचाथी अपमान करे; अने तेनुं गायुं न गावाथी बखते मारवा पण तैयार थाय; एट्ले, लाकडी-चाबकाथी साधुने मारे काङ्गु छे के:—

‘तथे व य निट्टवणं बंधण निघ्नुभण कडगमदो वा । निविसयं व नरिंदो करेज संघंपि सो कुछो ।१’

क्रोधायमान थयलो निष्ठापन करे; बंधन करे; देशनिकाल करे; सेनापासे मार मरावे; अथवा, पोतानां राज्यमां आवतां बंध करे अथवा संघने पण दुःख आपे; ते प्रमाणे, तच्चनिक (विगेरे नो) उपासक—नंदबलनी कथाथी एट्ले, बुद्धनी उत्पत्तिना कथानकथी; भागवत मतनो भण्डिग्राहनां दृष्टांतथी रौद्रमतनो पेढालनो पुत्र सत्यकी उमाना दृष्टांतने सांभलवाथी द्रेषी थाय छे. (बीजा मतना गुणो न जोतां इर्षारूपे कथाओ जोडी काढेल छे, तेवी कथा कहेतां बीजा मतवालाने क्रोध थाय छे. माटे, बने त्यांसुधी

सूत्रम्
॥४१२॥

आचारो ॥४१३॥

गुणप्राप्तिनीज कथा करवी;) अथवा भीखारी काणोकुट (हाथपगनी खोडवाळो) तेने उद्देशीने धर्मफलना उपदेशरूप-कथा कहेतां तेने क्रोध थाय. आ प्रमाणे, विधि न जाणनारो कथा कहे; तो, तेने बाधा (पीडा) थाय छे, तथा तेमां परलोकनो पण कंइ लाभ नस्थी विगेरे जाणबुं, जोके, मुमुक्षुने धर्मकथापरना हित माटे कहेतां पुन्य छे, पण जो, कहेनार सभाने न ओळखे; अने द्वेषनुं वचन बोले; तो, तेने शास्त्रकारे पुन्य बताव्युं नस्थी.

अथवा राजानुं अपमान थतां धर्मकथा कहेनार साधुने हणे; एटले, राजा पशुवधनो यज्ञ करे; तथा, श्राद्ध, होम, विगेरे करे; तेमां, धर्म मानतो होय; ते समये धर्मकथा कहेनार साधु राजाना सांभळतां कहे के:—तेमां धर्म नस्थी; तो, राजा क्रोधी थइने दुःख आपे.

अथवा, जे जे अविधिए कहे; तेमां पण साधुने श्रेय नस्थी. ते बतावे छे.

साक्षर पंडितनी सभामां पक्षहेतु दृष्टांत विगेरे छोडीने प्राकृत भाषामां कहेबुं ते अनुचित छे, तथा मूर्खानी सभामां तत्त्व सम-जाववा जबुं; ते पण अनुचित छे. एज प्रमाणे कंइपण अनुचित कार्य करतो साधु जैनधर्मनी हीलनाज करे छे, अने तेने पापनोज बन्ध छे, तेनुं कल्याण थवानुं नस्थी; माटे, तेवा विधि न जाणनारा पुरुषे मौन धारण करबुं बधारे सारुं छे. (के बीजाने क्रोध उत्पन्न करी अशुभकर्म पोते न बांधे.) कह्युं छे के:—

‘सावज्जणवज्जाणं वयणाणं जो न याणइ विसेसं । तुक्तुपि तस्स न खमं, किमंग पुण देसणं काउं ॥१॥’

जेने सावज्ज अने निर्वद्य वचननुं जाणपणुं नस्थी; तेने बोलवानो पण अधिकार नस्थी. तो, तेने उपदेश आपवानो अधिकार

सूत्रम्

॥४१३॥

आचार्य
॥४१४॥

क्यांथी होय ? आ प्रमाणे छे. तो, धर्मकथा केवीरीते करवी ते कहे छे :—जे, पोतानी इन्द्रियोने वशमां राखनारो छे, अने विषय विषनो वेरी छे, संसारथी उद्गेग मनवाळो छे, अने वैराग्यथी जेनुं हृदय खेचायलुं छे, तेवो माणस धर्मने पूछे; तो, ते समये आचार्य विगेरे धर्मकथा कहेनारे विचारबुं के, आ पुरुष केवो छे ? मिथ्यादृष्टि छे के भद्रक छे ? अथवा, केवा आशयथी पूछे छे ? एनो इष्ट-देव क्यो छे ? एणे क्यो मत मान्यो छे ? विगेरे विचारीने योग्य उत्तर समय उचित कहेवो ते बतावे छे.

एनो सार आ छे के धर्मकथानी विधि जाणनारे पोते आत्ममां परिपूर्ण होय ते सांभळनारनो विचारकरे के द्रव्यथी ते केवो छे. तथा आ क्षेत्र केवुं छे ? जेमां तच्चनिक भागवत अथवा बीजा मतवाला अथवा पतित साधुए अथवा उत्कृष्ट साधुओए आ क्षेत्रने केवा रूपमां बनाव्युं छे. अने काळ ते सुकाळ छे के दुकाळ छे. अथवा वस्तु मळे तेम छे के नहीं. अने भावथी जोवुं के पूछनार माणस मध्यस्थ भाववाळो छे. के रागी द्वेषी छे, विगेरे विचारीने जेम ते बोध पामे, तेवी धर्मकथा करवी. उपरना गुणवाळो माणस धर्मकथा करवाने योग्य छे. बीजाने अधिकार नथी. कहुं छे के—

‘जो हेतुवायपकखंमि, हेतुओ आगमम्मि आगमिओ । सो ससमयपणवओ सिद्धांतं विराहको अण्णो ।।’

जे हेतुवाद पक्षमां हेतुने बतावनार छे. आगममां आगम बतावनार छे. ते स्वसमयनो प्रज्ञापक (उन्नति करनार) अने बीजो सिद्धांतनो विशाधक छे. (जो पूछनार हेतु मागे तो हेतु बतावे अने युक्तिथी सिद्ध करे अने आगम प्रमाण मागे तो आगम बतावे ते बनेनो जाणनारो बीजाने धर्मकथा कहे ते योग्य छे.)

सूत्रम्
॥४१४॥

आचार्य
॥४१५॥

जे उपर प्रमाणे धर्मकथानी विधिने जाणनारो छे. ते प्रशस्त छे, अने जे पुन्यवान अने पुन्यहिनने धर्म कथामां समदृष्टिना विधिए जाणे छे. तथा सांभळनारनो विवेक करी शके तेबा गुणवाळो कर्मने विदारण करनार वीर साधु, उत्तम पुरुषोथी वत्वाणा-एलो छे. वली तेनुं वर्णन करे छे.

‘जे बद्धे’ विगेरे.

ते आठ प्रकारना कर्मबडे अथवा स्नेह रूप सांकळ विगेरेथी बंधाएला प्राणीओने धर्मकथा संभळाववा, विगेरेथी मुकावनारो थाय तेज तीर्थकर गणधर अथवा आचार्य विगेरे उपर कहेली धर्मकथानी विधि जाणनारो छे.

ते क्ये स्थाने रहेला जीवोने मुकावे छे ? ते कहे छे. उंचे रहेला ज्योतिषी विगेरेने तथा नीचे भवनपति विगेरेने तथा तिर्यंच तथा मनुष्यने बोध आपे छे; (देवताना जीवो सम्यक्त्व पामे अने तिर्यंच दचेंद्रिय चारित्रिनो थोडो भाग अने मनुष्य पूर्ण चारित्र पण पामे.)

वली ते वीर पुरुष बीजाने मुकावनारो हमेशां बने परिज्ञाए पोते चाले छे, एट्ले सर्वोत्तम ज्ञाने युक्त छे, अने सर्व संवर चारित्र पाळनार छे, ते पोते जे गुणोने मेलवे छे ते कहे छे:—

पोते हिंसाथी थतां पापे लेपातो नथी; (एट्ले कोइनी हिंसा करतो नथी.) (क्षणनो अर्थ हिंसा कर्यो छे,) ते मेवावी(बुद्धिमान) पण छे, एट्ले, जेनावडे जीवो चार गतिमां भमे ते अण (कर्म) छे, तेनो घात करे; ते खेदने जाणनारो निषुण मुनि छे. एट्ले ते कर्म क्षय करवानो उद्यम करनारा मोक्षाभिलाषीओने कर्म क्षय करवानी विधि बतावनार पण छे, ते मेवावी, कुशळ, वीर मुनि छे,

सूत्रम्
॥४१५॥

आचार
॥४१६॥

तथा, जे प्रकृति, स्थिति, रस, प्रदेश. एम चार प्रकारनां बन्धनाथी मोक्ष करावे; अथवा तेनो उपाय बतावे; ते 'अन्वेषि' पण छे, (ते पूर्वनां वाक्य साथे जोडवुं;) एटले, जे जीव हत्याने दूर करे; खेदने जाणे; ते मूळ उत्तर प्रकृतिना भेदोवडे भिन्न, तथा योगनिमित्ते आवती कर्मप्रकृति, तथा कषाय-स्थितिवाळी कर्मनी बन्धाती अवस्थाने जाणे छे. बांधवुं; स्पर्श करवो; निधन करवुं; निकाचित करवुं. आ कर्म परिणामने आश्रयी बन्धाय छे, अने सारा भावथी तेनो नाश थाय छे, ए बनेने ते जाणे छे.
प्रश्न—आ फरीथी केम कहुं ? उत्तरः—पुनरुक्त दोष लागतो नथी; कारणके, एनावडे कर्म छोडवानुं बताव्युं छे.

प्रश्न—उपर बतावेला गुणोवाळो साधु छद्मस्थ कहेवो के, केवळी कहेवो ? उत्तरः—उपरनां विशेषण केवळी साधुने न घडे; माटे, छद्मस्थ लेवो; तो केवळीनी शी वात. प्रश्नः—कुशल साधुना केवा गुणो होवा जोइए ?
उत्तरः—कुशल एटले, जेणे घातिकर्मनो संपूर्ण क्षय कर्यो छे, ते तीर्थकर अथवा, सामान्य केवळी छे.

अने छद्मस्थ-घातिकर्मर्थी बन्धायलो मोक्षार्थी तथा, तेना उपायने शोधनारो छे, अने केवळी पोते घातिकर्मनो क्षय थवाथी पोते कर्मर्थी बन्धायलो नथी; पण, अघाति चार कर्म जे भव उपग्रहीक छे, ते तेने होवाथी पोते मुक्त पण नथी; अथवा, तेवा गुणीने छद्मस्थज कहीए छीए. के, 'कुशल' ने, जेणे ज्ञानदर्शन-चारित्र मेलवेलुं छे, तथा मिथ्यात्त्व, अने वार कषायोनो उपशम करेलो होवाथी; तेने उदयमां न होवाथी ते 'बन्ध' न कहेवाय. आ प्रमाणे, गुणवान साधु कुशल होय; पछी, ते केवळी होय के, छद्मस्थ होय; पण ते साधुना आचारने पाळतो होवो जोइए. जेम साधु माटे कहुं; तेम, बीजा मोक्षाभिलाषीए पण बर्तवुं ते बतावे छे.

सूत्रम्
॥४१६॥

आचार
॥४१७॥

से जं च आरभे जं नारभे, अणारछं च न आरभे, छणं छण परिणाय लोगसन्नं च सद्वसो (सू० १०३)

जे संयम अनुष्टानने संपूर्ण कर्मक्षय माटे आदरे; ते मिथ्यात्व अविरति विगेरे संसारनां कारणने न आरंभे; एटले, साधुपणुं आराध्ने; अने संसारीपणुं छोडे; एटले, अढारे प्रकारनां पापो विगेरे जे एकांतथी दूर करवानां छे, तेवां पापो छोडीने संयम अनुष्टानने करीने मोक्ष पामे; अने केवळी, अथवा, उत्तम साधुओए जेने अनाचीर्ण कहुं; ते पोते न करे; अने मोक्ष अनुष्टान करे. वळी, जिनेश्वरे त्यागवा योग्य कहुं; तेमां मुख्यत्वे हिंसा छे. ते हिंसानां कारणने जाणीने साधु तेने छोडे. इ-परिज्ञाए जाणे; अने प्रत्याख्यान परिज्ञाए त्यागे; अथवा, क्षणनो अर्थं हिंसाने बदले समय लइए; तो समयने जाणीने ते काळे ते काम करे.

बळी लोक जे गृहस्थो छे, तेमने सुखनी अभिलाषा छे, अथवा, ते कारणे तेने परिग्रहनी संज्ञा छे, तेबी संसारी-वासनाने साधु छोडे, ते मन, वचन, कायाथी पोते न करे, न करावे; न अनुमोदे; तेथी कहुं केः—उपरना गुणवाळो धर्मकथा-विधि जाणनारो, बन्धायला ने मुकावनारो कर्मने छेदवामां कुशळ, अने बन्ध-प्रोक्षनी खोल करनारो सुमार्गे चालनारो, कुमार्गने समजी अढार पापने रोकनारो, संसारी-लोकनी स्थिति चाणारो जे मुनि छे, तेने शुं थाय ते बतावे छे.

उद्देसो पासगस्स नत्थि, बाले पुणे निहे कामसमणुन्ने असमिय दुक्खे दुक्खो दुक्खाणमेव
आवटं अणुपरियट्टइ, (सू० १०४) त्तिबेमि लोकविजयाध्ययनम् ॥२॥

सूत्रम्
॥४१७॥

आचारा०
॥४१८॥

जे परमार्थथी जोनारो छे, तेने त्रीजा उद्देशाथी लङ्ने आ उद्देशाना छेदा सुधी जे दोष बताव्या; जेनाथी नारकादि गति भोगवती पडे; ते उद्देशो छे, ते गीतार्थ साधुने न होय; तथा बाल (मूर्ख) संसार प्रेमी होय; ते स्नेह करीने कामनी इच्छाथी दुःखना आवर्त्तमांज वारंवार वर्ते छे. एवुं हुं कहुं लुं. (टीकाना श्लोक २५०० छे.) छट्ठो उद्देशो समाप्त थयो. सूत्र अनुगम तथा सूत्रालापक निष्पन्ननिक्षेपो सूत्रने स्पर्श करनारी निर्युक्ति सहित पूरो थयो नयोनुं वर्णन बीजे स्थले कहुं छे. अहीं संक्षेपामां ज्ञान क्रियानुं प्रधानपणुं जाणबुं. तेमां पण पोते ज्ञानवालो ज्ञानने एकांत खेचे अने क्रिया उठावे अथवा क्रियावालो क्रियाने पकडी राखे तो ते मिथ्यात्मी छे. शिष्यने एम कहुं के तमारे बनेने अपेक्षापूर्वक समजीने बनेने आराधवां ॐ शांति

लोकविजयनामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त थयुं.
इतिश्री आचाराङ्गसूत्रे द्वितीयो भाग समाप्तः ॥श्रीरस्तु॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ समाप्त ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सूत्रम्

॥४१८॥

॥ इति श्रीआचाराज्ञसूत्रेद्वितीयोभागः समाप्तः ॥

